

गुजरात राज्याना शिक्षाविभागांना पत्र-क्रमांक  
मशब/1215/170-179/छ, तल.23-3-2016 – थी मंजूर

# हिन्दी

( द्वितीय भाषा )

कक्षा 9



## प्रतिज्ञापत्र

भारत मेरा देश है।  
सभी भारतवासी मेरे भाई-बहन हैं।  
मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध  
परम्परा पर गर्व है।  
मैं हमेशा इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा।  
मैं अपने माता-पिता, अध्यापकों और सभी बड़ों की इज्जत करूँगा  
एवं हरएक से नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा।  
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा।  
उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

राज्य सरकारनी विनामूल्ये योजना डेढणनु पुस्तक



गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल  
'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर-382 010

© गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर

इस पाठ्यपुस्तक के सभी अधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन हैं ।  
इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी अंश किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक  
मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

<p><b>विषय परामर्शन</b> डॉ. चन्द्रकान्त मेहता</p> <p><b>लेखन-संपादन</b> डॉ. चंदुभाई स्वामी (कन्वीनर) डॉ. गिरीशभाई त्रिवेदी डॉ. जे.बी. जोशी श्री महेशभाई उपाध्याय डॉ. वर्षाबहन पारेख डॉ. सविताबहन डामोर श्री पुलकित जोशी श्री प्रीतिबहेन राठोड</p> <p><b>समीक्षा</b> डॉ. रवीन्द्र अंधारिया डॉ. नयना डेलीवाला डॉ. गीता जगड डॉ. लेखा स्वामी डॉ. प्रेमसिंह क्षत्रिय श्री वीरेन्द्रगिरि गोंसाई श्री पंकज मारु</p> <p><b>संयोजन</b> डॉ. कमलेश एन. परमार (विषय-संयोजक : हिन्दी)</p> <p><b>निर्माण-संयोजन</b> डॉ. कमलेश एन. परमार (नायब नियामक : शैक्षणिक)</p> <p><b>मुद्रण-आयोजन</b> श्री हरेश एस. लीम्बाचीया (नायब नियामक : उत्पादन)</p>	<p style="text-align: center;"><b>प्रस्तावना</b></p> <p>एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किए गये नये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के अनुसंधान में गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड द्वारा नया पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, जिसे गुजरात सरकार ने स्वीकृति दी है।</p> <p>नये राष्ट्रीय अभ्यासक्रम के परिपेक्ष में तैयार किए गए विभिन्न विषयों के नये अभ्यासक्रम के अनुसार तैयार की गई <b>कक्षा 9, हिन्दी (द्वितीय भाषा)</b> की यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मंडल हर्ष का अनुभव कर रहा है। नये पाठ्यपुस्तक के हस्तप्रत निर्माण की प्रक्रिया में संपादकीय पेनल ने विशेष ख्याल रखते हुए तैयार की है। एन.सी.ई.आर.टी. एवं अन्य राज्यों के अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को देखते हुए गुजरात के नये पाठ्यपुस्तक को गुणवत्ताक्षी कैसे बनाया जाय, उस पर संपादकीय पेनल ने सराहनीय प्रयत्न किया है।</p> <p>इस पाठ्यपुस्तक को प्रकाशित करने से पहले इसी विशेषज्ञों एवं इस स्तर पर अध्यापनरत अध्यापकों द्वारा सर्वांगीण समीक्षा की गई है। समीक्षा शिबिर में मिले सुझावों को इस पाठ्यपुस्तक में शामिल किया गया है। पाठ्यपुस्तक की मंजूरी क्रमांक प्राप्त करने की प्रक्रिया के दौरान गुजरात माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड के द्वारा प्राप्त हुए सुझावों के अनुसार इस पाठ्यपुस्तक में आवश्यक सुधार करके प्रसिद्ध किया गया है।</p> <p>भाषाकीय नये अभ्यासक्रम का एक उद्देश्य यह है, कि इस स्तर के छात्र व्यवहारिक भाषा का उपयोग करने के साथ-साथ अपनी भाषा-अभिव्यक्ति को विशेष प्रभावशाली बनाएँ। साहित्यिक स्वरूप एवं सर्जनात्मक भाषा का परिचय के साथ-साथ हिन्दी भाषा की खुबियों को समझकर अपने स्व-लेखन में प्रयोग करना सिखें, इस लिए स्व-लेखन के लिए छात्रों को पूर्ण अवकाश दिया गया है।</p> <p>इस पाठ्यपुस्तक को रूचिकर, उपयोगी एवं क्षतिरहित बनाने का पूरा प्रयास मंडल द्वारा किया गया है, फिर भी पुस्तक की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षा में रुचि रखनेवालों से प्राप्त सुझावों का मंडल स्वागत करता है।</p> <p style="text-align: center;"><b>एच. एन. चावडा</b> नियामक</p> <p style="text-align: center;"><b>डॉ. नीतिन पेशाणी</b> कार्यवाहक प्रमुख</p> <p style="text-align: center;"><b>दिनांक : 07-8-2016</b></p> <p style="text-align: center;"><b>गांधीनगर</b></p>
--	---

प्रथम संस्करण : 2016, पुनःमुद्रण : 2017

प्रकाशक : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, विद्यायन, सेक्टर-10ए, गांधीनगर की ओर से एच. एन. चावडा, नियामक

मुद्रक :

## मूलभूत कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह - \*

- (क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे ;
- (ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे ;
- (ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे ;
- (घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
- (ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो ; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं ;
- (च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व संझे और उसका परिरक्षण करे ;
- (छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे ;
- (ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे ;
- (झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे ;
- (ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के क्षेत्रों में उत्कर्ष की और बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले ;
- (ट) यदि माता-पिता या संरक्षक हैं, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, बालक या प्रतिपाल्य के लिए यथास्थिति शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

---

\* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क

---

## अनुक्रमणिका

1.	आराधना	(काव्य)	वसंत बापट	1
2.	न्यायमंत्री	(कहानी)	श्री सुदर्शन	3
3.	क्या निराश हुआ जाए	(निबंध)	हजारीप्रसाद द्विवेदी	7
●	मुहावरें			11
4.	कर्ण का जीवनदर्शन	(खंडकाव्य)	रामधारीसिंह दिनकर	12
5.	स्वराज्य की नींव	(एकांकी)	विष्णु प्रभाकर	15
●	अशुद्ध और शुद्ध वाक्य			20
6.	मेरी बीमारी श्यामा ने ली	(आत्मकथा अंश)	हरिवंशराय बच्चन	25
7.	सूरदास के पद	(पद)	सूरदास	29
8.	गुलमर्ग की खिड़की से एक रात	(यात्रा वर्णन)	मोहन राकेश	31
9.	निर्भय बनो	(उपन्यास अंश)	फणीश्वरनाथ रेणु	34
●	कहावतें			38
10.	भारत गौरव	(काव्य)	मैथिलीशरण गुप्त	41
11.	एक यात्रा यह भी	(कहानी)	रामदरश मिश्र	44
12.	रानी	(रेखाचित्र)	महादेवी वर्मा	49
●	वर्तनी			53
13.	नीति के दोहे	(दोहे)	रहीम	60
14.	युग और मैं	(काव्य)	नरेन्द्र शर्मा	62
15.	दाज्यू	(कहानी)	शेखर जोशी	65
16.	भारतीय संस्कृति में गुरुशिष्य संबंध	(निबंध)	आनंदशंकर माधवन	69
●	शब्द-संरचना			72
17.	तुलसी के पद	(पद)	तुलसीदास	81
18.	अंधेरी नगरी	(एकांकी)	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	84
19.	महाकवि कालिदास	(जीवनी)	नरपत बारहठ हडवैचा	89
●	वाक्य तथा वाक्य के प्रकार			93
20.	धरती की शान	(गीत)	पंडित भरत व्यास	99
21.	क्रांतिकारी शेखर का बचपन	(उपन्यास अंश)	सच्चिदानंद हीरानंद वाल्स्यायन - 'अज्ञेय'	102
●	स्वर संधि			105
22.	वीरों का कैसा हो वसंत	(गीत)	सुभद्राकुमारी चौहान	111
23.	जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी	(संस्मरण)	धर्मवीर भारती	113
●	समास			116
24.	दोहे	(दोहे)	कबीर	122
<b>पूरक-वाचन</b>				
1.	विमान से छलांग	(पत्र)	श्यामचन्द्र कपूर	125
2.	राष्ट्र का स्वरूप	(निबंध)	वासुदेवशरण अग्रवाल	127
3.	कुण्डलियाँ	(कविता)	गिरिधर	130
4.	महान भारतीय वैज्ञानिक : विक्रम साराभाई	(लेख)	पी.सी. पटेल	131



वसंत बापट

(जन्म : सन् 1922, निधन : 2002 ई.)

श्री वसंत बापट ख्यातनाम कवि हैं, आपका जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले के कराड नामक गाँव में हुआ था। पूणे आपकी कर्मभूमि है। राष्ट्रसेवादल में आप अग्रणी रहे हैं। व्यवसाय से प्राध्यापक रहे। आपके काव्यों में राष्ट्रभक्ति, समाज जागरण एवं मानवीय संवेदनाएँ व्यक्त हुई हैं। सेतु, बिजली, सकीना, अकरावी (ग्यारहवीं) दिशा, तेजसी आपकी रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत प्रार्थना मे 'सत्यं शिवं सुंदरम्'की भावना के साथ दीन-दुखियों की रक्षा करना, मानवता की उपासना करना, भेदभावों को दूर करना, बैरभाव से मुक्त हो कर विश्वबन्धुत्व की स्थापना करना- जैसे वैश्विक मूल्यों को हस्तान्तरण करने की प्रेरणा देनेवाली यह प्रार्थना मराठी से अनुदित है।

देहमंदिर, चित्तमंदिर एक ही है प्रार्थना।  
सत्य-सुंदर मांगल्य की नित्य हो आराधना ॥

दुखियारों का दुःख जाए, है यही मनकामना।  
वेदना को परख पाने जगाएँ संवेदना ॥  
दुर्बलों के रक्षणार्थ पौरुष की साधना ॥

जीवन में नवतेज हो, अंतरंग में भावना।  
सुंदरता की आस हो मानवता की हो उपासना ॥  
शौर्य पावें, धैर्य पावें, यही है अभ्यर्थना ॥

भेद सभी अस्त होवें, वैर और वासना ॥  
मानवों की एकता की पूर्ण हो कल्पना।  
मुक्त हम, चाहें एक ही बंधुता की कामना ॥

### शब्दार्थ और टिप्पणी

**प्रार्थना** निवेदन करना, भक्ति एवं श्रद्धापूर्वक ईश्वर की माँगना **मांगल्य** मंगलकारी **नित्य** निरंतर, प्रतिदिन, हर-रोज **आराधना** पूजा **वेदना** कष्ट, व्यथा **परख** गुण-दोष को निश्चित करने की परीक्षा **संवेदना** अनुभूति, सहानुभूति **दुर्बल** कमजोर **साधना** उपासना, आराधना **अंतरंग** शरीर के भीतरी अंग (मन, मस्तक) **आस** आशा, भरोसा, सहारा, कामना **मानवता** मनुष्यता **आसना** आराधना, भक्ति **धैर्य** धीरता, धीरज, सब **अभ्यर्थना** अनुरोध, बिनती **अस्त** ओझल, अंत, नाश, समाप्त **बैर** दुश्मनी, शत्रुभाव **वासना** कामना

### स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

- (1) कवि नित्य कैसी आराधना चाहते हैं ?
- (2) कवि किसकी मनोकामना चाहते हैं ?
- (3) कवि दुर्बलों के रक्षणार्थ किसकी साधना चाहते हैं ?
- (4) कवि किसकी अभ्यर्थना करते हैं ?
- (5) कवि कैसी बंधुता की कामना करते हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
- (1) कवि कैसे मांगल्य की आराधना करते हैं?
  - (2) कवि के अनुसार किसके दुःख दूर होने चाहिए?
  - (3) कवि की क्या अभ्यर्थना है?
  - (4) कवि भेदों को नाश करने की बात क्यों करते हैं?
3. निम्नलिखित काव्यपंक्तिओं का आशय स्पष्ट कीजिए :
- (1) देहमंदिर चित्तमंदिर एक ही है प्रार्थना।  
सत्य सुंदर मांगल्य की नित्य हो आराधना ॥
  - (2) भेद सभी अस्त होने बैर और वासना  
मानवों की एकता की पूर्ण हो कल्पना  
मुक्त हमें चाहे एक ही बंधुता की कल्पना ॥
4. काव्यपंक्तिओं को पूर्ण कीजिए :
- (1) देहमंदिर चित्तमंदिर एक ही.....  
.....  
पौरुष की साधना ॥
  - (2) जीवन में नवतेज हो.....  
.....  
बंधुता की कामना ॥
5. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।
- (1) दुःख (2) जीवन (3) सत्य (4) सुंदर (5) अस्त

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- पठित प्रार्थना गीत को कंठस्थ कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'आराधना' प्रार्थना गीत का समूहगान करवाइए।  
अन्य भाषाओं के प्रार्थना-गीतों का छात्रों से संकलन करवाइए।

●

श्री सुदर्शन

(जन्म : सन् 1896 ई. : निधन : सन् 1968 ई.)

‘सुदर्शन’जी का मूल वास्तविक नाम बदरीनाथ शर्मा था। आपका जन्म 1896 ई. पंजाब राज्य के सियालकोट नामक स्थान में हुआ था। बचपन से ही आपने कहानियाँ लिखना प्रारंभ किया था।

पुष्पलता, सुप्रभात, परिवर्तन, पनघट, नगीना आदि आपके सुप्रसिद्ध कहानीसंग्रह हैं। आपका एकमात्र उपन्यास है - भागवती।

इस कहानी में सम्राट अशोक सर्वश्रेष्ठ न्यायमंत्री की खोज में था, शिशुपाल से मुलाकात होने पर उसकी योग्यता देखकर उसे न्यायमंत्री बनाया। न्याय न राजा देखता है न रंक। न्यायतंत्र पर विश्वास दिलाने के लिए यहाँ प्रयास किया है। नयी पीढ़ी के लिए इस प्रेरक कहानी द्वारा न्यायतंत्र की जिम्मेदारी का भी महत्त्व समझाया गया है।

संध्या का समय था। चारों ओर अंधकार फैल चुका था। ऐसे में किसी ने बाहर से घर का दरवाजा खटखटाया।

“कौन है?” ब्राह्मण शिशुपाल ने थोड़ा सा दरवाजा खोलते हुए पूछा।

“एक परदेशी” बाहर से आवाज आई- “क्या मुझे रात काटने के लिए स्थान मिल जाएगा?”

जैसे ही शिशुपाल ने पूरा दरवाजा खोला, उनके सामने एक नवयुवक खड़ा था। उन्होंने मुस्कराकर कहा- “यह मेरा सौभाग्य है। अतिथि के चरणों से यह घर पवित्र हो जाएगा। आइए पधारिए।”

अतिथि को लेकर शिशुपाल घर में गए और उनका आदर-सत्कार किया।

फिर दोनों उस समय की देश की अवस्था पर बातें करने लगे। शिशुपाल ने कहा- “आजकल बड़ा अन्याय हो रहा है।” परंतु परदेशी इस बात से सहमत न था। वह बोला- “दोष निकालना तो सुगम है परंतु कुछ करके दिखाना कठिन है,” शिशुपाल बोले- “अवसर मिले तो दिखा दूँ कि न्याय किसे कहते हैं?”

“तो आप अवसर चाहते हैं?”

“हाँ, अवसर चाहता हूँ।”

“फिर कोई अन्याय नहीं होगा?”

“बिलकुल नहीं।”

“कोई अपराधी दंड से न बचेगा।”

“नहीं।”

परदेशी ने मुस्कराकर कहा- “यह बहुत कठिन काम है।”

“ब्राह्मण के लिए कुछ भी कठिन नहीं। मैं न्याय का डंका बजाकर दिखा दूँगा।”

परदेशी धीरे से मुस्कराए, पर कुछ न बोले, फिर कुछ देर बाद वे सो गए।

सुबह उठकर परदेशी ने शिशुपाल को धन्यवाद देकर उनसे विदा ली।

कुछ दिनों बाद शिशुपाल के घर कुछ सिपाही आए और उन्हें दरबार में चलने के लिए कहा। शिशुपाल सहम गए। वे समझ नहीं सके कि सम्राट ने उन्हें क्यों बुलाया है। कहीं उस परदेशी ने तो सम्राट से झूठी-सच्ची शिकायत नहीं कर दी। दरबार में पहुँचकर शिशुपाल का कलेजा धड़कने लगा जब उन्होंने देखा कि परदेशी ही सम्राट अशोक हैं।

सम्राट बोले- “ब्राह्मण देवता! मैं आपको न्याय का अवसर देना चाहता हूँ। आप तैयार हैं?”

पहले तो शिशुपाल घबराए, फिर बोले- “यदि सम्राट की यही इच्छा है तो मैं तैयार हूँ।”

“बहुत ठीक, कल से आप न्यायमंत्री हुए” सम्राट ने कहा और अपने हाथ से अँगूठी उतारकर शिशुपाल को पहना दी। यह सम्राट अशोक की राजमुद्रा थी।

अब शिशुपाल न्यायमंत्री थे। उन्होंने राज्य की समुचित व्यवस्था करना आरंभ कर दिया। उनके सुप्रबंध से राज्य में पूरी तरह शांति रहने लगी। किसी को किसी प्रकार का भय नहीं था, लोग दरवाजे तक खुले छोड़ जाते थे। चारों तरफ न्यायमंत्री के सुप्रबंध और न्याय की धूम मच गई।

लगभग एक महीने बाद, किसी ने रात में एक पहरेदार की हत्या कर दी। सुबह होते ही यह बात चारों तरफ फैल गई। लोग बड़े हैरान थे। शिशुपाल की तो नींद ही उड़ गई। उन्होंने खाना-पीना छोड़कर अपराधी का पता लगाने में रात-दिन एक कर दिया।

बहुत प्रयत्न करने के बाद जब अपराधी का पता चला तो शिशुपाल के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। स्वयं सम्राट ने उस पहरेदार की हत्या की थी। सम्राट को अपराधी घोषित करना बहुत ही कठिन काम था। शिशुपाल करें भी तो क्या करें? एक ओर वे न्यायमंत्री थे और दूसरी ओर सम्राट के सेवक, परंतु न्याय की दृष्टि में सम्राट और साधारण व्यक्ति में कोई अंतर नहीं होता।

अगले दिन शिशुपाल दरबार में पहुँचे। सम्राट अशोक सिंहासन पर बैठे हुए थे। आते ही उन्होंने शिशुपाल से पूछा- “अपराधी का पता चला?”

न्यायमंत्री ने साहसपूर्वक कहा- “जी हाँ, चल गया।”

“तो फिर उसे उपस्थित करो।”

न्यायमंत्री कुछ रुके, फिर अपने उच्च अधिकारी को संकेत करते हुए बोले “धनवीर! इन्हें गिरफ्तार कर लो, मैं आज्ञा देता हूँ।”

संकेत सम्राट की ओर था।

दरबार में निस्तब्धता छा गई। सम्राट का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। वे सिंहासन से खड़े हो गए और बोले- “इतना साहस?”

न्यायमंत्री ने ऐसा भाव प्रकट किया जैसे कुछ सुना ही न हो। उन्होंने अपने शब्दों को फिर दुहराया- “धनवीर! देखते क्या हो? अपराधी को गिरफ्तार करो।

दूसरे ही क्षण सम्राट के हाथों में हथकड़ी पड़ गई।

न्यायमंत्री ने कहा- “अशोक! तुम पर पहरेदार की हत्या का आरोप लगाया जाता है, तुम इसका क्या उत्तर देते हो?” सम्राट होंठ काटकर रह गए।

न्यायमंत्री ने फिर पूछा- “तो तुम अपराध स्वीकार करते हो?” हाँ, मैंने उसे मारा अवश्य है, पर उद्दंड था।” सम्राट का उत्तर था। “वह उद्दंड था या नहीं, तुमने एक राजकर्मचारी की हत्या की है। तुम अपराधी हो। तुम्हें मृत्युदंड दिया जाता है।” न्यायमंत्री ने निर्णय दिया।

सभा में सन्नाटा छा गया। न्यायमंत्री का निर्णय सुन सम्राट ने सिर झुका लिया। वे तो स्वयं शिशुपाल की परीक्षा में सफल हो गए थे। सम्राट का हृदय ऐसे व्यक्ति को पाकर गद्गद हो रहा था।

तभी न्यायमंत्री का संकेत पाकर एक कर्मचारी सम्राट अशोक की सोने की मूर्ति लेकर उपस्थित हो गया। न्यायमंत्री ने खड़े होकर कहा- “सज्जनो! यह सच है कि मैं न्यायमंत्री हूँ और यह भी सच है कि अपराधी को दंड मिलना चाहिए परंतु अपराधी और कोई नहीं स्वयं सम्राट हैं। शास्त्रों में राजा को ईश्वर का रूप माना गया है इसलिए उसे ईश्वर ही दंड दे सकता है। अतएव मैं आज्ञा देता हूँ कि सम्राट को चेतावनी देकर छोड़ दिया जाए और उनके स्थान पर इस सोने की मूर्ति को फाँसी पर लटका दिया जाए जिससे लोगों को शिक्षा मिले।”

न्यायमंत्री का न्याय सुनकर लोग जय-जयकार कर उठे। जब सब लोग चले गए तो शिशुपाल ने राजमुद्रा सम्राट अशोक के सामने रख दी और बोले- “महाराज! यह राजमुद्रा वापस ले लें, मुझसे यह बोझ नहीं उठाया जाएगा।”

अशोक ने सम्मानभरी दृष्टि से उनकी ओर देखते हुए गद्गद कंठ से कहा- “आपने मेरी आँखें खोल दी हैं। आपका साहस प्रशंसनीय है। यह बोझ आपके अतिरिक्त और कोई नहीं उठा सकता।” न्यायमंत्री निरुत्तर हो गए।

### शब्दार्थ और टिप्पणी

सौभाग्य सद्नसीब सुगम सरल अवसर मौका राजमुद्रा राष्ट्र की निशानी सुप्रबंध सुव्यवस्था उद्दंड अविवेकी निःस्तब्धता शांति



## मुहावरें

सहम जाना - आश्चर्यचकित हो जाना । कलेजा धड़कना - चिंतित होना धूम मच जाना - प्रसिद्ध हो जाना । रात-दिन एक करना - कड़ी मेहनत करना। होठ काटना - आश्चर्य में पड़ना। सिर झुकाना - लज्जित होना। गद्गद हो जाना - भावविभोर हो जाना। आँखें खोल देना - सही परिस्थिति समजाना।

## स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए।
  - (1) शिशुपालने अपने घर का दरवाजा क्यों खोल दिया?
  - (2) शिशुपाल किस अवसर की तलाश में था?
  - (3) न्याय के विषय में शिशुपाल के क्या विचार थे?
  - (4) परदेशी कौन था ? उसने दूसरे दिन क्या किया ?
  - (5) सम्राट अशोक ने शिशुपाल को राजमुद्रा क्यों दी?
  - (6) राज्य में न्याय के विषय में परिस्थितियाँ कैसे बदल गईं?
  - (7) पहरेदार की हत्या होने पर शिशुपाल की स्थिति कैसी हो गई?
  - (8) अपराधी का पता चलने पर शिशुपाल ने क्या किया ?
2. विस्तार से उत्तर दीजिए :
  - (1) सम्राट अशोक ने न्यायमंत्री की खोज कैसे की?
  - (2) सम्राट अशोक ने न्यायमंत्री का पद देने हुए शिशुपाल को क्या दिया?
  - (3) सम्राट अशोक क्यों गद्गद हो गए?
  - (4) न्यायमंत्री ने अपराधी सम्राट के जीवन की रक्षा किस प्रकार की?
  - (5) न्यायमंत्री निरुत्तर क्यों हो गए?
3. निम्नलिखित विधान कौन कहता है ? क्यों ?
  - (1) “यह मेरा सौभाग्य है ।”
  - (2) “दोष निकालना तो सुगम है परंतु कुछ कर दिखाना कठिन है।”
  - (3) “ब्राह्मण के लिए कुछ भी कठिन नहीं । मैं न्याय का डंका बजाकर दिखा दूँगा।”
  - (4) तो तुम अपराध स्वीकार करते हो?
  - (5) महाराज! यह राजमुद्रा वापस ले लें, मुझसे यह बोझ नहीं उठाया जाएगा।
4. विरोधी शब्द दीजिए :

परदेशी, आदर, अपराधी, सुप्रबंध, गिरफ्तार, स्वीकार
5. समानार्थी शब्द दीजिए :

अतिथि, सुगम, कठिन, हैरान, निःस्तब्धता, निरुत्तर
6. सोचकर बताइए :
  - (1) अगर आप न्यायमंत्री होते तो क्या करते?
  - (2) सम्राट अशोक की आँखें किस कारण खुल गईं?
  - (3) शिशुपाल के साहस की सम्राट अशोक ने क्यों प्रशंसा की?

7. न्यायमंत्री के रूप में शिशुपाल को घोषित करते हुए सम्राट अशोक ने राजमुद्रा दी इसका अर्थ है-
- (अ) मैं आपसे प्रसन्न हूँ।  
(ब) आपके न्यायमंत्री होने की यह तनरुवाह है।  
(क) यह मेरी ओर से पुरस्कार है।  
(ड) यह तुम्हारे न्यायमंत्री होने की पहचान है।

**योग्यता-विस्तार**

- आपने प्रति अन्याय हुआ हो इस विषय में अपने विचार कक्षा में प्रस्तुत कीजिए ।

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- आपको कहीं पर अन्याय हुआ हो, उसका वर्णन करते हुए न्याय प्राप्ति के लिए क्या प्रयास किए? उसकी चर्चा करें या लिखित ग्रंथ तैयार करें।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- इस कहानी का नाट्य-रूपांतर करके प्रार्थना सभा या रंगमंच पर प्रस्तुत करवाइए।



आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म बलिया (उ.प्र.) जिले के 'दूबे का छपरा' नामक गाँव में हुआ था। पारिवारिक परंपरा अनुसार संस्कृत का अध्ययन शुरू करके उन्होंने हिन्दू काशी विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के आश्रम में 1940 ई.से. 1950 ई. तक हिन्दी भवन के निर्देशक रहे। तत्पश्चात् काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पद पर कार्य किया। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया।

हिन्दी साहित्य जगत में द्विवेदीजी एक निबंधकार, उपन्यासकार, समालोचक तथा शोधकर्ता इतिहासकार के रूप में प्रचलित हैं। 'अशोक के फूल', 'विचारप्रवाह', 'कुटज', 'कल्पलता' आदि निबंधसंग्रह; 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'पुनर्नवा', 'चारुचंद्रलेख', 'अनामदास का पोधा', उपन्यास तथा 'कबीर', 'सूरदास', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', 'साहित्य सहचर', 'हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास' (हिन्दी साहित्य की भूमिका) आदि आलोचना तथा इतिहास ग्रंथ हैं।

प्रस्तुत निबंध में द्विवेदीजी ने यह समझाया है कि तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त अनाचार केवल बाहरी स्तर पर है; वास्तव में आज भी लोगों में मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था कायम है। अपने जीवन में घटित कुछ घटनाओं के द्वारा बताया है कि हमें निराश नहीं होना चाहिए अपितु हमें जीवन के प्रति आस्थावान बने रहना चाहिए।

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार-पत्र में टगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही ऊँचे पद हैं, उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता, जो कुछ भी करेगा, उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दीख रहा है, गुणी कम या बिल्कुल ही नहीं। स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिन्ता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है, जिसका सपना तिलक और गाँधी ने देखा था? रवीन्द्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान् संस्कृत-सभ्य भारतवर्ष किसी अतीत के गह्वर में डूब गया? आर्य और द्रविड़, हिन्दू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलनभूमि 'महामानव समुद्र' क्या सूख ही गया? मेरा मन कहता है, ऐसा हो नहीं सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलानेवाले निरीह और भोले-भोले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करनेवाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदार को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

परंतु ऊपर-ऊपर जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह बहुत ही हाल की मनुष्यनिर्मित नीतियों की त्रुटियों की देन है। सदा मनुष्य-बुद्धि नई परिस्थितियों का सामना करने के लिए, नए सामाजिक विधि-निषेधों को बनाती है, उनके ठीक साबित न होने पर उन्हें बदलती है। नियम-कानून सबके लिए बनाए जाते हैं, पर सबके लिए कभी-कभी एक ही नियम सुखकर नहीं होते। सामाजिक कायदे-कानून कभी युग-युग से परीक्षित आदर्शों से टकराते हैं, इससे ऊपरी सतह आलोड़ित भी होती है, पहले भी हुआ है, आगे भी होगा। उसे देखकर हताश हो जाना ठीक नहीं है।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है। उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक तत्त्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन

तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत निकृष्ट आचरण है। भारतवर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है परंतु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि-कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे-कानून बनाए गए हैं, जो कृषि उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परंतु जिन लोगों को इन कार्यों में लगना है, उनका मन हर समय पवित्र नहीं होता। प्रायः वे ही लक्ष्य को भूल जाते और अपनी ही सुख-सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं।

व्यक्ति-चित्त सब समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता। जितने बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों में मनुष्य की उन्नति के विधान बनाए गए, उतनी ही मात्रा में लोभ, मोह जैसे विकार भी विस्तृत होते गए। लक्ष्य की बात भूल गई। आदर्शों को मजाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है। यह कुछ थोड़े-से लोगों के बढ़ते हुए लोभ का नतीजा है, परंतु इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान् और उपयोगी दिखाई देने लगे हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार-पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीजों को गलत समझते हैं और समाज से उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करते समय उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई को उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं, जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपए का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपए रख दिए और बोला, “यह बहुत गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।” उनके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि दुनिया में सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

एक बार मैं बस-यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे, बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुक कर चलती थी। गंतव्य से कोई पाँच मील पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर ऊपर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरू कर दीं। किसी ने कहा, “यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूट लिया गया था।” परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का डर समा गया था।

कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़ कर मारने-पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा और बोला, “हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे।” डर तो मेरे मन में भी था, पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है, परंतु यात्री इतने घबरा गए कि वे मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, “इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।”

मैं भी बहुत भयभीत था, पर ड्राइवर को किसी तरह मार-पीट से बचाया। डेढ़-दो घंटे बीत गए। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और मेरी पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं, पर उसे बस से उतार कर एक जगह घेर कर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है, तो पहले ड्राइवर को समाप्त कर देना उन्हें उचित जान पड़ा। ये गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, अड्डे से नई बस लाया हूँ, इस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है।” फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, “पंडितजी ! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया।” यात्रियों में फिर जान आई। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गए।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई! कैसे कहूँ कि लोगों में दया-माया रह ही नहीं गई! जीवन में न जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं, जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है, तो जीवन कष्टकर हो जाएगा, परंतु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढाढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने एक प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है। लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान् भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

मेरे मन! निराश होने की जरूरत नहीं है।

### शब्दार्थ और टिप्पणी

तस्करी चोरी मनीषी पंडित, मेधावी माहौल परिस्थिति निरीह निराधार फरेब धोखा भीरु कायर आलोड़न मथना, हिलोरना निकृष्ट अधम, नीच गुमराह भुला हुआ पैमाना मापदंड दक्रियानूसी पुराने ख्यालवाला त्रुटि कमी, गलती कातर लाचार

### मुहावरे

मन बैठ जाना उदास होना, मन मारना फलना-फूलना समृद्ध होना, विकसित होना पर्दाफाश करना भेद खोलना ज्योति बुझना मरना कातर ढंग से देखना भयभीत होकर देखना

### स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :
  - (1) आज समाचारपत्र में कौन-कौन से समाचार भरे रहते हैं?
  - (2) देश का वातावरण आज कैसा बन गया है?
  - (3) भारतवर्ष ने किसको अधिक महत्त्व नहीं दिया है?
  - (4) मनुष्य के मन में कौन-कौन से विचार हैं?
  - (5) भारतवर्ष किसको धर्म रूप में देखता आ रहा है?
  - (6) बस कंडक्टर क्या लेकर लौटा था?
2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :
  - (1) लोगों में महान मूल्यों के बारे में आस्था क्यों हिल गई है?
  - (2) लेखक क्या देखकर हताश हो जाना उचित नहीं मानते?
  - (3) देश के दरिद्रजनों की हीन अवस्था दूर करने के लिए क्या किया गया है?
  - (4) कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने प्रार्थना-गीत द्वारा भगवान से क्या याचना की है?
3. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छ वाक्यों में उत्तर लिखिए :
  - (1) लेखक का मन क्यों बैठ जाता है?
  - (2) भारतवर्ष को 'महामानव' समुद्र क्यों कहा गया है?
  - (3) धर्म को भारतवर्ष में श्रेष्ठ क्यों माना गया है?
  - (4) कंडक्टरने अपनी ईमानदारी कैसे बताई?
4. मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

मन बैठ जाना, पर्दापत्रक करना, फलना-फूलना, हवाईयाँ उडना, पर्दाफाश, ढाँढस बँधाना, कातर ढंग से देखना

शब्द-समूह के लिए एक-एक शब्द दीजिए :  
धर्म से डरनेवाले, मिलन की भूमि, सुख देनेवाला
5. विशेषण बनाइए :

भारत, समाज, क्रोध, समय, धर्म
6. भाववाचक बनाइए :

डाकू, आदमी, बहुत, सभ्य, मानव
7. विरोधी शब्द बनाइए :

ईमानदार, भ्रष्टाचार, आंतरिक, सबल

### योग्यता-विस्तार

#### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता।  
हर अंधकार के पीछे सुबह का सूरज अवश्य छिपा होता है।  
- दोनों विधानों को समझाइए:

#### शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'निराश नहीं होना चाहिए। इस विषय की चर्चा कीजिए।  
भारतवर्ष के 'महान मनीषियों' के बारे में वर्ग में अधिक जानकारी दीजिए।

## मुहावरे

\* जब कोई वाक्यांश अपने साधारण (शाब्दिक) अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ को व्यक्त करे, तो उसे मुहावरा कहते हैं। जैसे नीचे दिए गए उदाहरणों पर ध्यान दीजिए-

मुहावरा	शाब्दिक अर्थ	विशेष अर्थ
- चिकना घडा	ऐसा घडा जो चिकना हो	जिस पर किसी बात का असर न हो
- होंठ काटना	होंठ को काटना	आश्चर्य में पड़ना
- रात-दिन एक करना	रात और दिन को एक करना	कड़ी मेहनत करना

\* मुहावरे के प्रयोग में निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी चाहिए:

- (1) मुहावरों का प्रयोग उनके असली रूपों में ही करना चाहिए। उनके शब्द बदले नहीं जाते हैं। जैसे 'अक्ल का दुश्मन' एक मुहावरा है। यदि इसके स्थान पर 'अक्ल का शत्रु' प्रयोग किया जाए या 'नौ-दो ग्यारह होना' की जगह 'आठ तीन ग्यारह होना' किया जाए तो सर्वथा अनुचित है।
- (2) मुहावरे वाक्यों में ही शोभते हैं, अलग नहीं। जैसे - यदि कहें 'कान काटना' तो इसका कोई अर्थ व्यंजित नहीं होता, किन्तु यदि ऐसा कहा जाय - 'वह छोटा बच्चा तो बड़े-बड़ों के कान काटता है' तो वाक्य में अद्भुत लाक्षणिकता, लालित्य और प्रवाह स्वतः आ जाता है।
- (3) मुहावरे का प्रयोग करते समय इस बात का सदैव ख्याल रखना चाहिए कि समुचित परिस्थिति, पात्र, घटना और प्रसंग का वाक्य में उल्लेख अवश्य हो। केवल वाक्य-प्रयोग कर देने पर संदर्भ के अभाव में मुहावरे अपने अर्थ को अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं।

जैसे - नौ दो ग्यारह होना - भाग जाना ।

इस मुहावरे का वाक्यप्रयोग और स्पष्टता समझिए ।

**वाक्यप्रयोग :** शेर को देखते ही हिरण नौ दो ग्यारह हो गया ।

**स्पष्टता :** शेर, हिरण का शिकार करता है; क्योंकि वह शेर का भक्ष्य है। कोई जीव जान बुझकर मरना नहीं चाहता। अतएव, शेर को देखकर हिरण अपनी जान बचाने के लिए भागेगा ही । 'नौ दो ग्यारह होना' का अर्थ व्यंजित हुआ - 'भाग जाना' ।

यदि सीधा ऐसा वाक्य बनाया जाय- 'हिरण नौ दो ग्यारह हो गया' - तो मुहावरे का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट नहीं हो पाएगा ।

- (4) मुहावरे का एक विलक्षण अर्थ होता है । इसमें वाच्यार्थ का कोई स्थान नहीं होता। जैसे- 'आग में घी डालना' का जब वाक्यप्रयोग होगा, तब इसका अर्थ होगा- 'क्रोध को भड़काना ।'
- (5) मुहावरों के वाक्य-प्रयोग अलग-अलग रूप से हो सकते हैं-

जैसे : पानी-पानी होना - बहुत लज्जित होना ।

1. इसमें पानी-पानी होने की क्या जरूरत है ? इस उम्र में ऐसी गलतियाँ हो ही जाती हैं।
2. तुम कुछ भी कहो, वह आज सबके सामने उन्हें पानी-पानी करके छोड़ेगा।
3. बात में जरूर दम है, तभी तो वह व्यक्ति आज मेरे सामने पानी-पानी है।
4. भरी सभा में पोल खुल जाने से मुखियाजी पानी-पानी हो गए।



रामधारीसिंह 'दिनकर'

(जन्म : ई. सन् 1908 : निधन : ई. सन् 1974)

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि रामधारीसिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव के एक किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा मुंगेर तथा उच्च शिक्षा पटना में प्राप्त की। पटना विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करके कुछ समय तक अध्यापनकार्य किया। दिनकरजी सीतामढ़ी में सब रजिस्ट्रार और मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। वे भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति और भारत सरकार की हिन्दी सलाहकार समिति के अध्यक्ष भी रहे थे।

दिनकरजी की सब-से बड़ी विशेषता है- अपने देश और युग के प्रति-जागरूकता। कवि ने तत्कालीन घटनाओं - विषमताओं का खुलकर चित्रण किया है। उनकी वाणी में शक्ति है, ओज है। उनकी कविता में शोषित और पीड़ित वर्ग की व्यथा और उससे मुक्ति का संघर्ष है।

'उर्वशी', 'रश्मिर्थी', 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'कुरुक्षेत्र' उनकी काव्यकृतियाँ हैं। 'उर्वशी' के लिए उन्हें सन् 1972 का ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था। 'संस्कृति के चार अध्याय' उनका चिंतन ग्रंथ है, जिसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'अर्धनारीश्वर', 'मिट्टी की ओर' आदि उनकी प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं। उनका कृतित्व गुणवत्ता और परिमाण दोनों दृष्टि से विपुल है।

प्रस्तुत खण्डकाव्यांश में 'रश्मिर्थी' महारथी कर्ण के करुण किन्तु भव्य जीवन की मीमांसा करनेवाला खण्डकाव्य है। सारे अन्यायों को सहकर कर्ण जन्मजात महानता पर पुरुषार्थजन्य महानता की विजय चाहता है। अंत में जब पाण्डवश्रेष्ठ के रूप में सब कुछ प्राप्त करने का प्रलोभन सामने आता है तब भी वह अविचलित रहता है और जिसने आज तक साथ दिया उस मित्र को किसी भी मोल पर छोड़ना नहीं चाहता। कृष्ण, कर्ण को पाण्डवों के पक्ष में ले आने के लिए उससे मिलते हैं, उस कथाप्रसंग से प्रस्तुत काव्यांश लिया गया है।

वैभव-विलास की चाह नहीं, अपनी कोई परवाह नहीं,  
 बस यहीं चाहता हूँ केवल, दान की देव सरिता निर्मल,  
 करतल से झरती रहे सदा,  
 निर्धन को भरती रहे सदा।  
 तुच्छ है, राज्य क्या है केशव? पाता क्या नर कर प्राप्त विभव?  
 चिन्ता प्रभूत, अत्यल्प हास, कुछ चाकचिक्य, कुछ क्षण विलास।  
 पर, वह भी यही गँवाना है,  
 कुछ साथ नहीं ले जाना है।  
 मुझ-से मनुष्य जो होते हैं, कंचन का भार न ढोते हैं,  
 पाते हैं धन बिखराने को, लाते हैं रतन लुटाने को।  
 जग से न कभी कुछ लेते हैं,  
 दान ही हृदय का देते हैं।  
 प्रासादों के कनकाभ शिखर, होते कबूतरों के ही घर,  
 महलों में गरुड़ न होता है, कंचन पर कभी न सोता है।  
 बसता वह कहीं पहाड़ों में,  
 शैलों की फटी दरारों में।  
 होकर समृद्धि-सुख के अधीन, मानव होता नित तपःक्षीण,  
 सत्ता, किरिटी, मणिमय आसन, करते मनुष्य का तेज हरण।  
 नर विभव-हेतु ललचाता है,  
 पर, वही मनुज को खाता है।



चाँदनी, पुष्प-छाया में पल, नर गले बने सुमधुर, कोमल,  
 पर, अमृत क्लेश का पिये बिना, आतप, अंघड़ में जिये बिना;  
 वह पुरुष नहीं कहला सकता,  
 विघ्नों को नहीं हिला सकता।  
 उड़ते जो झंझावातों में, पीते जो वारि प्रपातों में,  
 सारा आकाश अयन जिनका, विषघर भुजंग भोजन जिनका;  
 वे ही फणिबंध छुड़ाते हैं,  
 धरती का हृदय जुड़ाते हैं।  
 मैं गरुड़, कृष्ण! मैं पक्षिराज, सिर पर न चाहिए मुझे ताज,  
 दुर्योधन पर है विपद घोर, सकता न किसी विष उसे छोड़।  
 रणखेत पाटना है मुझको,  
 अहिपाश काटना है मुझको।

### शब्दार्थ और टिप्पणी

वैभव धन-दौलत विलास सुखोपभोग चाह इच्छा, अभिलाषा परवाह चिन्ता, व्यग्रता निर्मल पवित्र, शुद्ध करतल हथेली निर्धन धनरहित, कंगाल, दरिद्र विभव धन, संपत्ति, ऐश्वर्य प्रभूत अधिक, प्रचूर अत्यल्प बहुत थोडा हास निंदा, उपहास चाकचिक्य चमक, चकाचौंध कंचन सुवर्ण, सोना प्रासाद देवताओं या राजाओं का घर कनकाभ स्वर्णिम आभावाले शैल पर्वत, पहाड़, चट्टान दरार दरज, चीर, फूट तपःक्षीण निर्बल किरीट मुकुट तेज प्रभाव, कान्ति, चैतन्यात्मक ज्योति, चमक कोमल मृदुल, सुकुमार क्लेश दुःख, कष्ट, वेदना अमृत मुक्ति आतप धूप, उष्णता, गरमी अंघड़ आँधी झंझावात वर्षा सहित तीव्र आँधी वारि जल, पानी प्रपात पहाड़ या चट्टान का खड़ा किनारा अयन गति, चाल, पथ, गमन विष गरल, जहर भुजंग सर्प विपद आपत्ति, संकट धोर भयंकर, विकराल पाटना ढेर लगा देना अहिपाश साँप का बंधन, फणिबंध

### स्वाध्याय

1. ऊँचे स्वर में पढ़िए और वाक्य में प्रयोग कीजिए :  
 अत्यल्प, चाकचिक्य, कनकाभ, तपःक्षीण, क्लेश, झंझावात, फणिबंध
2. संक्षेप में उत्तर दीजिए :  
 (1) विभव से क्या प्राप्त होता है ?  
 (2) धन-संपत्ति किस लिए है ?  
 (3) समृद्धि-सुख के अधीन मानव का क्या होता है ?  
 (4) फणिबंध कौन छुड़ाते हैं ?
3. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :  
 (1) वैभव-विलास की चाह नहीं, अपनी कोई परवाह नहीं,  
 बस यहीं चाहता हूँ केवल, दान की देव सरिता निर्मल,  
 करतल से झरती रहे सदा,  
 निर्धन को भरती रहे सदा।

- (2) मैं गरुड़, कृष्ण ! मैं पक्षिराज, सिर पर न चाहिए मुझे ताज,  
दुर्योधन पर है विपद धोर, सकता न किसी विध उसे छोड,  
रणखेत पाटना है मुझको,  
अहिपाश काटना है मुझको।

4. टिप्पणी लिखिए :

- (1) कर्ण की अभिलाषा  
(2) कर्ण का मित्रधर्म

5. विरोधी शब्द लिखिए :

निर्मल, निर्धन, प्रभूत, कोमल, अमृत

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द कोष्ठक में से ढूँढकर उन शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :  
सुखोपभोग, हथेली, प्रचूर, दरज, आँधी, पानी, गरल, चट्टान

प्र	भू	त	सं	त
क	द	अं	ध	ड
र	रा	वि	ला	स
त	र	नि	शै	वा
ल	वि	ष	ल	रि

7. अंदाज अपना-अपना : अपना मत स्पष्ट कीजिए :

- (1) यदि कोई जरूरतमंद इन्सान आपसे मदद माँगे तो आप क्या करते?  
(2) आपको पता चले कि आपका दोस्त संकट में फँसा हुआ है तो आप क्या करेंगे?  
(3) आपके पास जरूरत से ज्यादा धन-संपत्ति है, तो क्या करेंगे?

योग्यता-विस्तार

● प्रकल्प कार्य (Project Work) :

छात्रों से निर्देशित विषय पर प्रकल्प कार्य करवाइए ।

- (1) भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान देनेवाली व्यक्तियों की जानकारी प्राप्त कीजिए।  
(2) प्रसिद्ध दानवीरों के जीवन-प्रसंगों का संकलन कीजिए।



विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर का जन्म मुजफ्फरपुर जिले के मीरनपुर गाँव में हुआ था। इन्होंने प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में और उच्च शिक्षा हिसार में प्राप्त की थी। कई वर्षों तक पंजाब सरकार की सेवा करने के बाद सन् 1974 से ये दिल्ली आ गए और तब से दिल्ली रहकर पूर्ण समय के लिए साहित्य सेवा में लगे हैं। आपने कहानी, उपन्यास, जीवनी, नाटक, एकांकी, संस्मरण और रेखाचित्र आदि विधाओं में पर्याप्त मात्रा में लिखा है। आपकी प्रमुख रचनाएँ 'ढलती रात', 'स्वप्नमयी' (उपन्यास), 'संघर्ष के बाद' (कहानी संग्रह), 'नव-प्रभात', 'डॉक्टर' (नाटक), 'प्रकाश और परछाईयाँ', 'बारह एकांकी', 'अशोक' (एकांकीसंग्रह), 'जाने-अनजाने' (संस्मरण और रेखाचित्र), 'आवारा मसीहा' (शरतचंद्र की जीवनी) आदि।

विष्णु प्रभाकर की रचनाओं में प्रारंभ से ही स्वदेश प्रेम व राष्ट्रीय चेतना और समाज-सुधार का स्वर प्रमुख रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आपने आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र में नाटक-निर्देशक के पद पर काम किया। बाद में स्वतंत्र लेखन को अपनी जीविका का साधन बना लिया। आपका समस्त साहित्य मानवीय अनुभूतियों से जुड़ा हुआ है। आपकी रचनाओं में रोचकता एवं संवेदनशीलता सर्वत्र व्याप्त है तथा भाषा सहज व सरल है।

प्रस्तुत एकांकी 'स्वराज्य की नींव' में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) में लक्ष्मीबाई के त्याग और संघर्ष का वर्णन किया गया है। स्वराज्य की नींव रखने में स्त्रियों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रस्तुत एकांकी के पात्र स्वराज्य की नींव के पथर हैं; जिनके त्याग, तपस्या व बलिदान के द्वारा भले ही स्वराज्य प्राप्त नहीं हुआ, लेकिन वे स्वराज्य की नींव का पथर बनकर जनमानस में देशप्रेम व नवजागरण की भावना जगाने में अपनी सार्थकता समझते हैं।

## पात्र

लक्ष्मीबाई  
मुंदर  
तात्या

जूही  
रघुनाथराव  
सेनानायक

(रंगमंच पर युद्धभूमि का दृश्य अंकित किया जा सकता है। कैंप कहीं पास ही लगा हुआ है। महारानी लक्ष्मीबाई के तंबू का एक भाग दिखाई देता है। परदा उठने पर महारानी लक्ष्मीबाई अपनी सखी जूही के साथ उत्तेजित अवस्था में मंच पर प्रवेश करती हैं। दोनों लाल कुर्ती के सैनिकों की वेशभूषा में हैं।)

**लक्ष्मीबाई** : मेरे देखते-देखते क्या से क्या हो गया जूही! झाँसी, कालपी, ग्वालियर कहाँ गईं परंतु मंजिल है कि पास आकर भी हर बार दूर चली जाती है। स्वराज्य को आते हुए देखती हूँ, परंतु दूसरे ही क्षण मार्ग में हिमालय अड़ जाता है। उसे पास करती हूँ तो महासागर की डरावनी लहरें थपेड़े मारने लगती हैं। उनसे जूझती हूँ तो नाविक सो जाते हैं। देखो जूही, उधर क्षितिज पर देखो। कैसी लपलपाती हुई लपटें उठ रही हैं! सारा आकाश धूम घटाओं से छाया हुआ है। प्रलय की भूमिका है, लेकिन राव साहब हैं कि रक्तमंडल की छाया में ऐशो आराम में मशगूल हैं। (आवेश में आते-आते सहसा मौन हो जाती है। जूही कुछ कहने के लिए मुँह खोलती है कि महारानी फिर बोल उठती है।) जूही, जूही, मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी लेकिन झाँसी हाथ से निकल गई जूही। (सहसा तीव्र होकर) नहीं, नहीं, झाँसी हाथ से नहीं निकली। मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। मैं अकेली हूँ, लेकिन उससे क्या? मैं अकेली ही झाँसी लेकर रहूँगी।

**जूही** : कौन कहता है, आप अकेली हैं महारानी, आप तो गीता पढ़ती हैं। फिर यह निराशा कैसी?

**लक्ष्मीबाई** : मैं निराश नहीं हूँ। मैं जानती हूँ कि मैं झाँसी लेकर रहूँगी, लेकिन क्या तुम नहीं जानती कि उस दिन बाबा गंगादास ने मुझसे क्या कहा था? "जब तक हमारे समाज में छुआछूत और ऊँच-नीच का भेद नहीं मिट जाता, जब तक हम विलासप्रियता को छोड़कर जनसेवक नहीं बन जाते, तब तक स्वराज्य नहीं मिल सकता। वह मिल सकता है केवल सेवा, तपस्या और बलिदान से।"

**जूही** : लेकिन महारानी, उन्होंने यह भी तो कहा था कि स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थापना के लिए भूमि तैयार करना; स्वराज्य की नींव का पथर बनना। सफलता और असफलता दैव के

- हाथ में है। लेकिन नींव के पथ्थर बनने से हमें कौन रोक सकता है? वह हमारा अधिकार है।
- लक्ष्मीबाई** : (मुस्कराकर) शाबाश मेरी कर्नल! तुम लोगों से मुझे यही आशा है। जिस स्वराज्य की नींव तुम जैसी नारियाँ बनने जा रही हैं, वह निश्चय ही महान होगा। मुझे इस बात की चिंता नहीं है कि वह मेरे जीवनकाल में आता है या नहीं आता, लेकिन मुझे इस बात का दुःख अवश्य है कि हमारे पास शक्ति है, फिर भी हम दुर्बल हैं। हमारे पास तात्या जैसे सेनापति हैं, फिर भी हमारी सेना में अनुशासन नहीं है। हमारे पास ग्वालियर का किला है, फिर भी हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं। क्यों? जानती हो क्यों?
- जूही** : जानती हूँ महारानी! हम विलासिता में डूब गए हैं। (तभी मुस्कराती हुई मुंदर वहाँ प्रवेश करती है।)
- मुंदर** : कौन कहता है कि हम विलासिता में डूब गए हैं? विलासिता में डूबे हैं रावसाहब। बाँदा के नवाब, सेनापति तात्या।
- जूही** : (सहसा) नहीं, मुंदर। सेनापति नहीं।
- मुंदर** : (मुसकराती है) ओह, समझी। तुम तो उनका पक्ष लोगी ही।
- जूही** : (दृढ़ स्वर में) मैं उसका पक्ष नहीं लेती, लेकिन जो तथ्य है, उसको छिपाया नहीं जा सकता। सरदार तात्या राव साहब को अपने तन-मन का स्वामी मानते हैं।
- मुंदर** : और तुम उनको अपना स्वामी मानती हो।
- जूही** : हाँ, मैं उनको अपना स्वामी मानती हूँ और मानती रहूँगी, लेकिन उनसे भी अधिक मैं महारानी को अपना स्वामी मानती हूँ और महारानी से भी बढ़कर मैं अपने देश को अपना स्वामी मानती हूँ। देश के लिए मैं सरदार को भी ठुकरा सकती हूँ, ठुकरा चुकी हूँ।
- मुंदर** : (सकपका कर) जूही तू तो नाराज़ हो गई। मेरा यह मतलब नहीं था। मैं तो केवल इतना ही कहना चाहती थी कि जब तूने उन्हें अपना स्वामी मान लिया है तो तू उन्हें रोकती क्यों नहीं?
- लक्ष्मीबाई** : जूही ने उन्हें रोका है मुंदर। मैं जानती हूँ। जब राव साहब के कहने पर तात्या इसे नाचने के लिए बुलाने को आए थे तो इसने उनको बुरी तरह दुत्कार दिया था।
- जूही** : हाँ रानी, मैं स्वराज्य के लिए नाच सकती हूँ। बराबर नाचती रही हूँ, परंतु विलासिता में डूबने के लिए अपनी कला को किसी के गले की फाँसी नहीं बना सकती हूँ। जो मुझको ऐसा करने के लिए कहते हैं, उनको मैं ठोकर ही मार सकती हूँ।
- लक्ष्मीबाई** : (दीर्घ निःश्वास लेकर) ठोकर ही तो नहीं मार सकती जूही। यही दर्द तो हमें कचोट रहा है। अगर ठोकर मार कर हम उनकी मदहोशी दूर कर सकते तो बात ही क्या थी?
- जूही** : बाई साहब, मैं औरों की बात नहीं जानती। मुझे आज्ञा दीजिए, मैं ठोकर मारने को तैयार हूँ।
- मुंदर** : और मैं भी तैयार हूँ बाई साहब। चलो, हम सब चलकर उनकी नींद हराम कर दें।
- लक्ष्मीबाई** : नहीं मुंदर, नहीं। हम उनकी नींद हराम नहीं कर सकते। अब तो दुश्मन की ठोकर ही उनको उस नींद से जगा सकती है।
- जूही** : दुश्मन की ठोकर? यह आप क्या कह रही हैं?
- लक्ष्मीबाई** : हाँ जूही, दोस्त की ठोकर अविश्वास की खाई को और भी चौड़ा कर देती है। क्या तुम नहीं जानती कि हम एक दूसरे को किस दृष्टि से देखते हैं? क्या ऐसी स्थिति में मेरे कुछ कहने से शंकाओं की घटा और भी गहरा नहीं उठेगी?
- मुंदर** : बाई साहब ठीक कहती हैं। शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झनक उठेगी। श्रीखंड और लड्डुओं पर जान देनेवाले ब्राह्मणों के आशीर्वाद का स्वर और भी तेज हो उठेगा। (सहसा कहीं दूर तोपों का स्वर उठता है।)
- लक्ष्मीबाई** : और जूही तू अगर तात्या को खोज सके तो तुरंत उन्हें यहाँ आने के लिए कह।

- जूही** : खोज क्यों नहीं सकती? आपकी आज्ञा होने पर मैं उन्हें पाताल से भी खींचकर ला सकती हूँ।  
(जाने को मुड़ती है कि रघुनाथराव तेजी से प्रवेश करते हैं।)
- रघुनाथराव** : महारानी, आपने सुना?
- लक्ष्मीबाई** : क्या रघुनाथ?
- रघुनाथराव** : महारानी, जनरल रोज की सेना ने मुरार में पेशवा की सेना को हरा दिया।
- जूही** : (काँपकर) क्या पेशवा की सेना हार गई?
- लक्ष्मीबाई** : पेशवा की सेना हार गई, यह अच्छा ही हुआ। अब पेशवा की आँखें खुलेंगी। रघुनाथ अपनी सेना को तैयार होने की आज्ञा दो। रोज ग्वालियर का किला नहीं ले सकेगा।
- रघुनाथ** : मैं जानता हूँ, वह कभी नहीं ले सकेगा। मैं अभी सेना को कूच के लिए तैयार करता हूँ। केवल आपको सूचना देने के लिए आया था। (जाता है।)
- लक्ष्मीबाई** : और जूही तुम भी जाओ। (सहसा बाहर देखकर) लेकिन ठहरो, शायद सेनापति तात्या इधर ही आ रहे हैं।
- जूही** : (बाहर देखकर) जी हाँ, ये तो सरदार तात्या ही हैं। (सरदार तात्या का प्रवेश)
- लक्ष्मीबाई** : कहिए सरदार तात्या, आज आप इधर कैसे भूल पड़े?
- तात्या** : बाई साहब, मैं किसी के लिए सरदार हो सकता हूँ, पर आपके लिए तो सेवक ही हूँ।
- लक्ष्मीबाई** : (व्यंग्य से) इतने बड़े सेनापति को इस प्रकार एक नारी के सामने झुकते लज्जा नहीं आती? खैर, छोड़ो इस बात को। यह तुम्हारी विनम्रता है। लेकिन यह तोपों की आवाज़ कैसी आ रही है? कौन सा उत्सव मनाया जा रहा है? शायद चाटुकारों में जागीर बाँटना अभी खत्म नहीं हुआ है?
- तात्या** : बाई साहब, आपको हमें लज्जित करने का पूरा अधिकार है। हम इसी योग्य हैं, लेकिन जो कुछ हो रहा है, वह आप जानती ही हैं।
- लक्ष्मीबाई** : शायद ब्रह्मभोज के उपलक्ष्य में ये तोपें चल रही हैं। श्रीखंड और लड्डुओं के लिए घी शक्कर की कमी तो नहीं पड़ी।
- जूही** : सरकार इस बार इनको माफ़ कर दीजिए।
- तात्या** : (व्यग्र होकर) बाई साहब, आप यूँ कब तक फटकारती रहेंगी?
- लक्ष्मीबाई** : तू कहती है, अच्छा। लेकिन (मुंदर का प्रवेश)
- मुंदर** : सरकार सेना तैयार है।
- लक्ष्मीबाई** : तो मैं भी तैयार हूँ। तात्या तुमसे मुझे बहुत आशाएँ थीं। तुम्हारे रहते यह सब क्या हो गया?
- जूही** : सरकार, ये स्वामिभक्त हैं।
- लक्ष्मीबाई** : लेकिन आज हमें देशभक्तों की आवश्यकता है। खैर, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। अब भी बहुत कुछ किया जा सकता है।
- तात्या** : इसीलिए तो आया हूँ बाई साहब। आप जो कहेंगी वही करूँगा। जो योजना बनाएँ, उसी पर चलूँगा।
- लक्ष्मीबाई** : तो जाओ, तलवार सँभाल लो। नूपुरों की झंकार के स्थान पर तोपों का गर्जन होने दो। भूल जाओ राग-रंग। याद रखो, हमें स्वराज्य लेना है। हमें रणभूमि में मौत से जूझना है।
- तात्या** : महारानी आपकी जय हो। मैं युद्ध के लिए तैयार होकर आया हूँ।
- लक्ष्मीबाई** : जानती हूँ। लेकिन सेनापति, इस बार यह याद रखना कि यदि दुर्भाग्य से विजय न मिल सकी तो तुम्हें सेना और सामग्री दोनों को दुश्मन के घेरे से निकालकर ले जाना है।
- तात्या** : ऐसा ही होगा।
- लक्ष्मीबाई** : तात्या, मेरा मन कहता है कि यह मेरे जीवन का अंतिम युद्ध है। जीत हो या हार, मुझे किसी बात की चिंता नहीं। चिंता केवल इस बात की है, हमारी वीरता कलंकित न होने पाए।
- तात्या** : बाई साहब ! वीरता आपको पाकर धन्य है। आपके रहते कलंक हमारी छाया को भी नहीं छू सकेगा। आज्ञा दीजिए, प्रणाम।

- लक्ष्मीबाई** : प्रणाम तात्या ! मैं सीधी युद्धभूमि में जा रही हूँ, देर न लगाना। (तात्या चला जाता है।)  
**मुंदर** : सरकार आज मैं बराबर आपके साथ रहूँगी।  
**जूही** : और मैं तोपखाना सँभालूँगी।  
**लक्ष्मीबाई** : और हम सब मिलकर या तो स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे। हर-हर महादेव। (तीनों हर-हर महादेव का उद्घोष करती हैं। पृष्ठभूमि में यही उद्घोष उभरकर आता है, जो मंच पर प्रकाश के धुँधलाते न धुँधलाते सब कहीं छा जाता है। फिर धीरे-धीरे शांति छाने लगती है। प्रकाश उभरने लगता है और पृष्ठभूमि में गीतापाठ का स्वर उठता है।)

### शब्दार्थ और टिप्पणी

प्रलय सृष्टि का विनाश **एशोआराम** विलासप्रियता **प्रतिज्ञा** प्रण **दुत्कारना** धिक्कारना **स्वराज्य** अपना राज्य **व्यग्र** आतुर **राग-रंग** गाना-बजाना **रणभूमि** लड़ाई का मैदान **अंकित** निशान लगा हुआ **उत्तेजित** भड़का हुआ

### मुहावरे

**अड़ जाना** किसी बात को मनवाने की जिद करना **थपेड़े मारना** समस्याओं का तेजी से उभरना **हाथ से निकल जाना** अपने बस में न रहना **भूमि तैयार करना** आधार बनाना, भूमिका बनाना **नींव का पत्थर बनना** किसी खास कार्य की शुरूआत करना **नींद हराम करना** गहरी चिंता में डाल देना **पाताल से खींच लाना** किसी इच्छित चीज को कहीं से ढूँढ़ लाना **आँखें खुलना** सजग होना **मौत से जूझना** साहस से मौत का सामना करना

### स्वाध्याय

#### 1. एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

- (1) रानी लक्ष्मीबाई की चिंता का कारण क्या था?
- (2) बाबा गंगादास ने रानी लक्ष्मीबाई से क्या कहा था?
- (3) रानी लक्ष्मीबाई ने क्या प्रतिज्ञा की थी?
- (4) जूही सेनापति तात्या का पक्ष क्यों लेती है?
- (5) तात्या रानी लक्ष्मीबाई के सामने लज्जित क्यों हो उठे?

#### 2. पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

- (1) मार्ग में हिमालय अड़ने, डरावनी लहरों के थपेड़े मारने, नाविकों के सो जाने से क्या अभिप्राय है?
- (2) रानी लक्ष्मीबाई देशभक्ति की एक अद्भूत मिसाल थीं- समजाइए।
- (3) 'स्वराज्य की नींव' शीर्षक कहाँ तक सार्थक है? प्रस्तुत एकांकी के लिए कोई अन्य शीर्षक दीजिए।
- (4) प्रस्तुत एकांकी में से उन कथनों को छाँटिए जिससे पता चलता है कि युद्ध की छाया में भी राव साहब वैभव विलास में डूबे थे?

#### 3. आशय स्पष्ट कीजिए :

- (1) "स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थापना के लिए भूमि तैयार करना, स्वराज्य की नींव का पत्थर बनना।"
- (2) "शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झनक उठेंगी।"
- (3) "दोस्त की ठोकर अविश्वास की खाई को और चौड़ा कर देती हैं?"

4. सही शब्द चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :
- (1) वह मिल सकता है, केवल सेवा, तपस्या और ..... से। (बलिदान/युद्ध)  
(2) महासागर की डरावनी ..... थपेड़े मारने लगती हैं। (लहरें/हवाएँ)  
(3) कौन कहता है कि ..... में डूब गए हैं? (विलासिता/तपस्या)  
(4) मैं ..... के लिए नाच सकती हूँ। (विजय/स्वराज्य)  
(5) हमारी ..... कलंकित न होने पाए। (श्रेष्ठता/वीरता)
5. शब्दसमूह के लिए एक शब्द :  
धरती और आकाश के मिलने का स्थान क्षितिज निराशा या क्रोध में मुँह से निकलने वाली श्वास निःश्वास दहीं से बननेवाला एक व्यंजन श्रीखंड ब्राह्मणों को खिलाया जानेवाला भोज ब्रह्मभोज स्वामि के प्रति श्रद्धा रखनेवाला स्वामिभक्त
6. उदाहरण के अनुसार शब्द बनाए :  
राज्य - स्व+राज्य = स्वराज्य  
देश, भाव, तंत्र, जन
7. उदाहरण के अनुसार शब्द बनाए :  
सुन्दर - सुन्दरता - सौंदर्य  
शूर - शूरता  
धीर - धीरता  
उदार - उदारता  
स्थिर - स्थिरता

### योग्यता-विस्तार

### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले किसी एक स्वतंत्रता सेनानी के जीवन पर दस पंक्तियाँ लिखिए।
  - उन देशभक्त नारियों के नाम लिखिए जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया था।
- ### शिक्षक-प्रवृत्ति
- देश की आजादी के लिए शहीद होनेवाले किसी दो शहीदवीरों की फिल्म वर्गखंड में प्रस्तुत करें।



## अशुद्ध और शुद्ध वाक्य

भाषा के वर्ण, शब्द तथा वाक्य आदि के प्रत्येक स्तर पर कुछ ऐसे निश्चित नियम होते हैं जिनसे भाषा का मानक स्वरूप बनता है। जो प्रयोग मानक स्वरूप से भिन्न है वह अशुद्धि है। वाक्यरचना की अशुद्धियों का मुख्य कारण होता है व्याकरणिक नियमों का सही रूप में न जानना। अतः हमें बोलने या लिखने के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे द्वारा जो कुछ कहा या लिखा जाए, वह बिलकुल स्पष्ट, सार्थक और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हो।

यहाँ हम शुद्ध वाक्यरचना के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करेंगे।

### पदक्रम संबंधी नियम :

वाक्य में प्रयुक्त होनेवाले विभिन्न पदों को एक सुनिश्चित क्रम में रखने से वाक्य-रचना शुद्ध होती है। हिन्दी में पदक्रम संबंधी नियम निम्नलिखित हैं-

- (1) वाक्य में पहले कर्ता फिर कर्म तथा अंत में क्रिया आते हैं। उदा.: जितेन्द्र क्रिकेट खेलता है।
- (2) कर्ता और कर्म को छोड़कर शेष कारक प्रायः कर्ता और कर्म के बीच स्थित होते हैं।

**उदाहरण** - माँ अपने पुत्रों के लिए खाना बनाती हैं। (सम्प्रदान)

- माताजी चाकू से फल काटती है। (करण)

- पेड़ से पत्ते गिरते हैं। (अपादान)

- लड़के मैदान में क्रिकेट खेलते हैं। (अधिकरण)

कुछ स्थलों पर ये कारक कर्म के बाद भी प्रयुक्त हो जाते हैं। जैसे-

- प्रियंदा ने मनमोहन को सिर से पैर तक देखा।

- (3) प्रश्नवाचक पद प्रश्न के विषय से ठीक पहले प्रयुक्त होता है।

**उदाहरण** - अपराधी का पता चला?

- क्यों यह सम्राट अशोक की राजमुद्रा है?

- आप को न्याय का अवसर देना चाहता हूँ। आप तैयार हैं?

- (4) क्रियाविशेषण सदैव क्रिया के पूर्व आते हैं।

**उदाहरण** - मोहन धीरे-धीरे चल रहा है।

- श्याम तेजी से दौड़ रहा था।

- (5) वाक्य के विभिन्न पदों के बीच तर्कसंगति होनी चाहिए।

**उदाहरण** - छात्रों ने गुरुजी को एक फूलों की माला पहनाई। (अशुद्ध वाक्य)

छात्रों ने गुरुजी को फूलों की एक माला पहनाई। (शुद्ध वाक्य)

- यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है। (अशुद्ध वाक्य)

गाय का शुद्ध दूध यहाँ मिलता है। (शुद्ध वाक्य)

- (6) 'न' या 'नहीं' का नकारात्मक अर्थ में प्रयोग क्रिया से पहले होता है।

**उदाहरण** - शिक्षक महोदय घर पर नहीं मिलेंगे।

- शिष्य क्षमा नहीं माँगेगा।

- (7) आग्रह के लिए 'न' अव्यय का प्रयोग वाक्य के अंत में होता है।

**उदाहरण** - चलोगे न।

- तुम भी जाओ न।



**अन्वय संबंधी नियम :**

‘अन्वय’ अर्थात् ‘मेल’ या ‘अनुरूपता’। वाक्यों के पदों की क्रिया का उसके लिंग, वचन, काल और पुरुष के अनुरूप होना ‘अन्वय’ कहलाता है। अन्वय संबंधी नियम निम्नलिखित हैं-

- (1) जब कर्ता और कर्म विभक्ति सहित होते हैं तो क्रिया सदा पुल्लिंग एकवचन में रहती है।

**उदाहरण :**

**गलत**

**सही**

- |                                     |                                     |
|-------------------------------------|-------------------------------------|
| 1. माँ ने लड़की को <b>बुलाई</b>     | 1. माँ ने लड़की को <b>बुलाया</b> ।  |
| 2. क्या आपने मीना को <b>पहचानी?</b> | 2. क्या आपने मीना को <b>पहचाना?</b> |

- (2) भिन्न-भिन्न लिंगों की दो या अधिक व्यक्तिवाचक या जातिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में आयें तो क्रिया अक्सर पुल्लिंग बहुवचन में आती है।

**उदाहरण :**

- राम, लक्ष्मण और जानकी वन में गये।
- गाय और बैल चर रहे हैं।
- राजा और रानी नगर में गये।
- जंगल में भालू, शेर और लोमड़ी रहते हैं।

- (3) यदि कर्ता का लिंग अज्ञात हो तो क्रिया पुल्लिंग में प्रयुक्त होती है।

**उदाहरण :** तुम्हारा खर्चा कौन चलाता है?

- (4) आदरार्थक एकवचन कर्ता के लिए क्रिया बहुवचन में प्रयुक्त होती है।

**उदाहरण :** गाँधीजी महान नेता थे।

- (5) आँसू, दर्शन, दाम, प्राण, लक्षण, समाचार, हस्ताक्षर, होश, ओठ, बूँद, लोग आदि शब्दों के साथ क्रिया बहुवचन में प्रयुक्त होती है।

**उदाहरण :**

- उसके आँसू रुकते ही नहीं।
- मेरे प्राण संकट में आ गये।
- विवाह के शुभ समाचार मिले।
- लोग तो बात बनाते रहते हैं।

- (6) प्रत्येक, हरएक, एक एक आदि शब्दों के साथ आनेवाले संज्ञा शब्दों का प्रयोग एकवचन में होता है।

**उदाहरण :**

**गलत**

**सही**

- |   |  |
|---|--|
| - क्लास में प्रत्येक <u>लड़के</u> उत्तीर्ण <u>होंगे</u> । | - क्लास में प्रत्येक <u>लड़का</u> उत्तीर्ण <u>होगा</u> । |
| - हरएक मजदूर अफसर से <u>मिलें</u> ।                       | - हरएक मजदूर अफसर से <u>मिले</u> ।                       |
| - आपके भाषण के एक एक शब्द <u>तुले हुए थे</u> ।            | - आपके भाषण का एक-एक शब्द <u>तुला हुआ था</u> ।           |

- (7) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।

**उदाहरण :**

**गलत**

**सही**

- |                                  |                                  |
|----------------------------------|----------------------------------|
| - <u>तुम्हारी</u> स्कूल कहाँ है? | - <u>तुम्हारा</u> स्कूल कहाँ है? |
|----------------------------------|----------------------------------|

- |                              |                              |
|------------------------------|------------------------------|
| - यह <u>मेरी</u> कॉलिज है।   | - यह <u>मेरा</u> कॉलिज है।   |
| - <u>उसका</u> देह दुर्बल है। | - <u>उसकी</u> देह दुर्बल है। |
| - <u>उनका</u> आवाज़ कोमल है। | - <u>उनकी</u> आवाज़ कोमल है। |

(8) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही विशेषण का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत

सही

- |                                    |                                    |
|------------------------------------|------------------------------------|
| - आज मौसम <u>सुहावनी</u> है।       | - आज मौसम <u>सुहावना</u> है।       |
| - आजकल कपास <u>महँगा</u> है।       | - आजकल कपास <u>महँगी</u> है।       |
| - <u>उसका</u> नाक <u>लम्बा</u> है। | - <u>उसकी</u> नाक <u>लम्बी</u> है। |
| - पीतल <u>पीली</u> होती है।        | - पीतल <u>पीला</u> होता है।        |

(9) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही क्रिया का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत

सही

- |                                       |                                       |
|---------------------------------------|---------------------------------------|
| - <u>मेरी</u> आम <u>सड़ी हुई</u> है।  | - <u>मेरा</u> आम <u>सड़ा हुआ</u> है।  |
| - तुमने झूठ <u>क्यों बोली</u> ?       | - तुमने झूठ <u>क्यों बोला</u> ?       |
| - आत्मा नहीं <u>मरता</u> ।            | - आत्मा नहीं <u>मरती</u> ।            |
| - बर्फ एक रुपये किलो <u>बिकता</u> है। | - बर्फ एक रुपये किलो <u>बिकती</u> है। |

(10) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही संबंध विभक्ति (का, की) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत

सही

- |  |  |
|--|--|
| - <u>परमात्मा का</u> महिमा अपार है।              | - <u>परमात्मा की</u> महिमा अपार है।              |
| - <u>बंबई की</u> बाज़ार अच्छी है।                | - <u>बंबई का</u> बाज़ार अच्छा है।                |
| - उसमें मुकाबला <u>करने का</u> सामर्थ्य नहीं है। | - उसमें मुकाबला <u>करने की</u> सामर्थ्य नहीं है। |
| - मुझे <u>केवड़े की</u> शरबत पसंद है।            | - मुझे <u>केवड़े का</u> शरबत पसंद है।            |

अन्य नियम :

(1) विभक्ति संबंधी नियम :

(क) विभक्ति लगाने पर - यह, ये, वह, वे, कौन, जो, कोई... सर्वनाम के रूप बदल जाते हैं। जैसे-

विभक्ति-रहित रूप

विभक्ति लगाने पर रूप

यह

इस

ये

इन

वह

उस

वे

उन

कौन

किस, किन

जो

जिस, जिन

कोई

किस, किन

**उदाहरण :**

- | <b>गलत</b>                               | <b>सही</b>                                |
|--|---|
| - <u>यह</u> घर में कौन रहता है?          | - <u>इस</u> घर में कौन रहता है?           |
| - <u>ये</u> लोगों में एकता नहीं है।      | - <u>इन</u> लोगों में एकता नहीं है।       |
| - <u>वह</u> आदमी को दौलत का घमंड है।     | - <u>उस</u> आदमी को दौलत का घमंड है।      |
| - <u>वे</u> लोगों को अनाज चाहिए।         | - <u>उन</u> लोगों को अनाज चाहिए।          |
| - आप <u>कौन को</u> बुलाते हैं?           | - आप <u>किसको (किसे)</u> बुलाते हैं?      |
| - ये <u>थैलियाँ कौन की</u> हैं?          | - ये <u>थैलियाँ किन की</u> हैं?           |
| - <u>जोको</u> पुकारूँ वहीं आवे।          | - <u>जिसको</u> पुकारूँ वही आवे।           |
| - जो लड़कों को जाना हो वे तैयार हो जाएँ। | - जिन लड़कों को जाना हो वे तैयार हो जाएँ। |
| - <u>कोई</u> का पेन यहाँ रह गया।         | - <u>किसीका</u> पेन यहाँ रह गया।          |
- (ख) संज्ञा में प्रत्यय अलग से और सर्वनाम में प्रत्यय साथ में लिखा जाता है।
- (ग) पुरुषवाचक सर्वनाम के बाद उसी व्यक्ति का यदि फिर से निर्देश करना हो तो 'अपना', 'अपनी' अपने आदि सर्वनामों का प्रयोग करना चाहिए।

**उदाहरण :**

- | <b>गलत</b>                         | <b>सही</b>                         |
|------------------------------------|------------------------------------|
| - <u>मैं मेरा</u> काम करता हूँ।    | - <u>मैं अपना</u> काम करता हूँ।    |
| - <u>वे उनकी</u> धून में मस्त हैं। | - <u>वे अपनी</u> धून में मस्त हैं। |
| - <u>तुम तुम्हारे</u> घर जाओ।      | - <u>तुम अपने</u> घर जाओ।          |

**(2) शब्दों का उचित प्रयोग :**

- (1) शब्द के अर्थ के संबंध में शब्द का वाक्य में प्रयोग करना आवश्यक है।
- हमें अपने माता-पिता की शुश्रूषा करनी चाहिए। (गलत)
  - हमें अपने माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। (सही)
    - 'शुश्रूषा' रोगी की की जाती है। माता-पिता एवं श्रेष्ठ जनों के लिए 'सेवा' शब्द का प्रयोग होना चाहिए।
  - इस समय उनकी आयु 70 वर्ष है। (गलत)
  - इस समय उनकी उम्र 70 वर्ष है। (सही)
    - 'आयु' जीवन की पूरी गणना को कहते हैं।
  - तलवार एक उपयोगी अस्त्र है। (गलत)
  - तलवार एक उपयोगी शस्त्र है। (सही)
    - 'अस्त्र' हाथ से फेंककर चलाया जानेवाला हथियार है;
    - जबकि 'तलवार' हाथ में रखकर चलाई जाती है।
- (2) दो बलाघातों का लगातार प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- जैसे : - इसे बावजूद भी वह आता-जाता रहा। (गलत)
- इसके बावजूद वह आता-जाता रहा। (सही)

(3) शब्द का निरर्थक प्रयोग नहीं करना चाहिए।

- एक ही भाव को दो बार कहने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

**उदाहरण :**

(1) मात्र केवल छात्रों के लिए। (अशुद्ध)

केवल छात्रों के लिए (अथवा) मात्र छात्रों के लिए (शुद्ध)

(2) आपका भवदीय (अशुद्ध)

आपका (अथवा) भवदीय (शुद्ध)

- मुहावरे का गलत रूप से प्रयोग करने पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

**उदाहरण :**

(1) उसके मुँह से फूल गिरते हैं। (अशुद्ध)

उसके मुँह से फूल झड़ते हैं। (शुद्ध)

(2) सर्व को दूध खिलाकर अच्छा काम नहीं कर रहे। (अशुद्ध)

सर्व को दूध पिलाकर अच्छा काम नहीं कर रहे। (शुद्ध)

- अपने नाम के साथ 'श्री' शब्द को छोड़कर वाक्य लिखना चाहिए।

**उदाहरण :**

(1) मेरा नाम श्री महेशभाई है। (गलत)

मेरा नाम महेशभाई है। (सही)

### स्वाध्याय

1. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

- (1) घर आता है वह आदमी।
- (2) आज वहाँ मीना ने जाना है।
- (3) वह बुद्धिमान स्त्री है।
- (4) वृक्षों पर कोयल बोल रही है।
- (5) उसे कितना आम चाहिए।
- (6) बेटी तो पराया धन होता है न?
- (7) सविता ने चंद्रिका को बुलायी।
- (8) यह घर में कौन रहता है?
- (9) रघुवीर को एक लड़की हुई है।
- (10) मेरा नाम श्री मनोजकुमार है।
- (11) आप यहाँ बैठो।
- (12) वह बड़ा चालाक है।
- (13) यद्यपि वह निर्धन है परंतु ईमानदार है।
- (14) जो करेगा वह भरेगा।
- (15) पुलिस के आते ही चोर दुम उठाकर भाग गया।



हरिवंशराय बच्चन

(जन्म : सन् 1907 ई. : निधन : सन् 2003 ई.)

हिन्दी साहित्य में हरिवंशराय बच्चन का नाम उनकी एकमात्र कृति से ही अमर हो गया। हालाँकि विपुल मात्रा में साहित्यसर्जन किया है। छायावादोत्तर काल के कवियों में 'बच्चन' एक विशिष्ट सर्जक रहे हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी के प्राध्यापक के रूप में, तत्पश्चात् दिल्ली में सरकारी सेवा, आकाशवाणी और दो-एक अन्य स्थलों पर आपने सेवाएँ दी।

भारत के एक विशिष्ट कवि के रूप में राष्ट्रपतिजी ने उन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया था। प्रारंभिक नौकरी पायोनियर प्रेस में की थी।

'मधुशाला' के कवि के रूप में बच्चनजी को इतनी शोहरत मिली कि उनकी मधुशाला का सभा-सम्मेलनों, कवि-गोष्ठी आदि में होता था। लोग बड़ी संख्या में उमड़ते थे।

केम्ब्रिज युनि. से जोहन पेट्स नामक कवि के समग्र वाङ्मय पर आपने पीएच.डी. की है। केन्द्रीय मंत्रालय दिल्ली में आपने हिन्दी-विशेषज्ञ के रूप में अप्रतिम कार्य किया है। आपको कई पुरस्कार जैसे 'सोवियत लेन्ड पुरस्कार', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और 'पद्म विभूषण' आदि प्राप्त हुए हैं।

'तीर पर कैसे रूकूँ मैं आज, लहरों का निमंत्रण।'

और

'इस पार प्रिये तुम हो - मधू है, उस पार न जाने क्या होगा?'

जैसी काव्य-पंक्तियाँ आज भी लोगों की जबान पर हैं।

मधुशाला, निशा-निमंत्रण, सप्त रंगिनी, मिलन-यामिनी, आकुल अंतर और एकांत संगीत नामक इनके सुप्रसिद्ध काव्यसंग्रह हैं तो 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर' और 'दश द्वार से सोपान तक' शीर्षक से चार खंडों में लिखी आपकी आत्मकथा है। 'मेरी बीमारी श्यामा ने ली' आत्मकथांश है। जो 'क्या- भूलूँ क्या याद करूँ?' में से लिया गया है। बच्चनजी की प्रथम पत्नी का नाम श्यामा था, जो सही अर्थ में एक आदर्श जीवनसंगिनी थी। श्यामा की बीमारी, उसकी खुद की न होकर बच्चनजी की थी। जो सेवा करते करते ले ली गयी थी। 'बच्चनजी का यह मंतव्य श्यामा की पति-भक्ति, कर्तव्य-परायणता और निष्ठा का प्रतीक है।

प्रस्तुत आत्मकथांश में श्यामा की बीमारी का दर्दनाक और कारुण्य-सभर निरूपण मिलता है, तो दूसरी ओर कवि की भावुकता और संवेदनशीलता का प्रगटीकरण मिलता है। ('क्या भूलूँ क्या याद करूँ') श्री हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा है। हिन्दी के इस सुप्रसिद्ध कवि ने अपने संस्मरण बड़े ही रोचक ढंग से आलेखित किये हैं। कवि अपने जीवन की घटनाओं के साथ उस युग का चित्र भी दे देता है। प्रस्तुत अंश "क्या भूलूँ क्या याद करूँ" से लिया गया है। इसका यह शीर्षक- 'मेरी बीमारी श्यामा ने ली' विषयवस्तु का भी निर्देश करता है।)

मैं अपनी बीमारी को दुलरानेवालों में न था। सच कहूँ तो मैं अपनी बीमारियों के प्रति प्रायः निर्भय था। शायद मैंने गांधीजी के ही लेख में कहीं पढ़ा था कि बीमार होना अपराध है। हमें जो शरीर दिया गया है उसे हम स्वस्थ न रखें तो हम अपराधी तो हैं हीं। मैं इस तर्क को कुछ और आगे ले गया था। अपराधी को दंड देना चाहिए। मुझे जब कभी छोटी-मोटी बीमारी होती, जुकाम, बुखार, खाँसी, सिरदर्द तो मैं खाट पर न लेटता; और भी अपने से काम लेता। मुझे भरे-भुट्ट बुखार में अपनी रात की ट्यूशनो पर जाने की याद है। बुखार की गर्मी और तेज़ी में तो मैं और जोश से पढ़ाता-मज़दूरी करके रोटी कमानेवाले को बीमार पड़ने का क्या अधिकार है, बीमारी अमीरों की हरमजदगी है, गरीबों को उसे अपने पीछे न लगाना चाहिए- लिखने में तो ऊँचा बुखार मुझे सब तरह से सहायक, प्रेरक और प्रोत्साहक लगता; एक तरह की आग, जिससे मेरी अनुभूतियों में ताप आता, जिसमें गल-पिघलकर मेरा हृदय ढलता; एक तरह की भट्ठी जो मेरे विचार, भाव, कल्पनाओं को उबाल देकर उच्छलित करती। यह तो मैं नहीं कहूँगा कि बुखार में मैं अदबदा कर लिखता था, पर अगर मैं लिखना चाहता था तो बुखार मेरे लिए कोई बाधा नहीं बन सकता था। हल्के बुखार में तो मेरे सब काम हस्वमामूल होते रहते थे। कोई मेरा बदन छूकर कभी कहता था कि तुम्हें तो बुखार है तो मैं पट से जवाब देता था कि हाँ, बुखार है और मैं भी हूँ। शायद किप्लिंग ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि कभी-कभी उसे बुखार में भी काम करना पड़ता था और जब वह बुखार में होता था तो और अच्छी कहानियाँ लिखता था। बुखार में कम लिखने की मुझे याद नहीं, वह कैसा बन पड़ा, इसका निर्णय मैं न देना चाहूँगा; प्रसंगवश मुझे याद आ गया है कि अपनी 'दो चट्टानें' की दो

सबसे बड़ी कविताएँ सात्रं के नोबल पुरस्कार टुकरा देने पर और 'दो चट्टान' अथवा 'सिसिफस बरक्स हनुमान' मैंने प्लूरिसी में पड़े-पड़े लिखी थीं। बहरहाल, जब मैं अपनी जवानी पर था, बीमारी मुझे पराजित न करती थी, मैं ही अपनी जिद से बीमारी को पराजित कर देता था- बुखार-सुखार आखिर कितने दिन चलता। विश्राम तिवारी कहा करते थे, "मार के पीछे भूत भागै।" मैंने अपने प्रयोग से सिद्ध किया था, "काम के पीछे बुखार भागै।"

यह बुखार मामूली न था। इसका संबंध उस तूफान से था जो पिछले नौ महीनों से मुझे झकझोर रहा था और जो शांत होने से पूर्व सबसे अधिक विध्वंसक झटका मुझको दे गया था। स्कूल बंद था। ट्यूशन पर मैं जाता था। उनकी आमदनी की मुझे जरूरत थी। किताबों की बिक्री अभी नियमित नहीं थी। कर्ज सिर पर चढ़े थे। बुखार दस दिन चला, बीस दिन चला, महीनेभर चला, दो महीने चला, जुलाई आ गई। अब बुखार के साथ ट्यूशन पर ही जाना न होता, दिनभर स्कूल में पढ़ाना भी पड़ता। बुखार का नमूना वही, सुबह बिलकुल नहीं, शाम को 101°-102° के बीच। कमजोरी दिन-दिन बढ़ती हुई, कभी-कभी धीमी खाँसी। दवा, शौकिया दवाबाँटू एक होमियोपैथ कर रहा था। कभी-कभी सोचता, क्या मुझे तपेदिक हो गया है? हो गया हो तो एलोपैथी का इलाज तो अपने बूते के बाहर है। क्या उस समय मेरी जिप्सा पर सरस्वती बैठी थी जब मैंने कहा था कि श्यामा का बुखार मैं लेने जा रहा हूँ? बैठी हों तो कितना अच्छा है! क्या मैं बीमार हूँ इसलिए श्यामा स्वस्थ है जिसने पिछले छह वर्षों से इन महीनों में ज्वर-मुक्ति नहीं जानी है? पर श्यामा को मेरी बीमारी भीतर ही भीतर खाये जा रही थी, उसने अपने इच्छाबल से जैसे अपने को स्वस्थ कर लिया था कि वह भी कहीं मेरी चिंता न बन जाए। उसके अतिरिक्त मेरी बीमारी का शायद किसी को पता भी न था, क्योंकि सारे काम तो मैं सामान्य रूप से किये ही जाता था; गर्मी में तो सभी थोड़े-बहुत दुबले हो जाते हैं। एक दिन उसने मुझसे कहा कि मैं डॉ. बी.के. मुखर्जी से अपनी परीक्षा कराऊँ। मैंने टालमटूल की तो उसने ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया, मैं जब तक अपने को डाक्टर को न दिखलाऊँगा वह खाना नहीं खाएगी। ब्रह्मास्त्र तो मानना ही था। डॉ. मुखर्जी को भय था कि मुझ पर क्षय का आक्रमण हुआ है। नुस्खा उन्होंने लिख दिया और कुछ दिन चिंतामुक्त होकर पूरी तरह आराम करने को कहा। नुस्खा मुझे मौत का परवाना लगा- क्या मेरी बिदा का समय आ गया? - क्या इतने ही दिनों के लिए आया था? इतना ही गाने, गुनगुनाने, केवल इतना श्रम-संघर्ष करने, इतने दुःख-संकट उठाने? - 'स्वागत के ही साथ विदा की होती देखी तैयारी, बंद लगी होने खुलते ही मेरी जीवन-मधुशाला।' क्या मैंने अपनी भविष्यवाणी स्वयं कर दी थी? सबसे मर्मवेधी प्रश्न था- क्या श्यामा के भाग्य में वैधव्य भी लिखा है?

मरने से मुझे डर नहीं था; वह मुझे कठिन भी नहीं लगा; कठिन लगा मरने के पहले जीना। पूरे आराम के अर्थ होंगे ट्यूशन छोड़ दूँ, स्कूल से छुट्टी ले लूँ- ज्यादा लूँ तो बगैर तनख्वाह के लेने को तैयार हूँ, फिर घर का खर्च कैसे चलेगा, शालिग्राम केवल अपनी तनख्वाह के बल पर घर नहीं चला सकते; कल उनकी बदली हो सकती है, तब वे एक पैसा भी घर भेजने की स्थिति में न होंगे; महँगी-महँगी दवाएँ कहाँ से आएँगी, किताबों से आमदनी अनियमित और अनिश्चित है, कर्ज भी अदा करने को कम नहीं है।

श्यामा ने मेरी बीमारी सुनी तो काँप उठी, पर तुरत सँभल भी गई, दृढ़ भी हो गई, जैसे उसने पलभर में अनुभव कर लिया कि उसका काँपना मैं सहन नहीं कर सकूँगा।

इस खबर से मेरे माता-पिता को तो लकवा-सा मार गया। पिताजी धैर्यवान् व्यक्ति थे, उन्होंने मुझसे कहा, "घबराओ नहीं, हम घर बैचकर तुम्हारा इलाज करेंगे।"

शालिग्राम असमर्थता की एक उसाँस लेकर रह गये।

मैंने कुछ दिनों के लिए ट्यूशन और स्कूल से छुट्टी ले ली। किताबों की बिक्री से कुछ रुपये पड़े थे, उनसे दवाएँ मँगा लीं और चारपाई पर लेट गया। श्यामा की सेवा साकार हो गई।

डाक्टर ने निश्चित होकर आराम लेने के लिए कहा था। जब बहुत कुछ करने को रहता था चिंता के लिए समय ही कहाँ था, अब तो चिंता ही चिंता करने को थी। विशेष चिंता भी मुझे सिर पर चढ़े कर्ज की। मेरा इलाज हो या न हो, पर कर्ज की किस्तें तो जानी ही चाहिए, उसकी नियमित अदायगी के साथ मेरी साख जुड़ी थी, उसका जाना मेरे मरने से पहले ही मेरी मौत होगी।

श्यामा के लिए मैं पारदर्शी दर्पण था। उसने पूछा, “किसी बात से चिंतित हो? चिंता ही खाती रहेगी तो दवा क्या लाभ पहुँचाएगी?”

मैंने कहा, “ट्रैक्ट सोसायटी के मुझ पर 400, (ऋज हैं, करीब 100) अन्य मित्रों के।”

उसने जो उत्तर दिया उससे मैं चौंक पड़ा और सहसा उठकर उसे घूरकर देखने लगा, जैसे श्यामा को एक बार फिर से पहचानने की जरूरत हो।

उसने कहा था, “ऋज तो मैं तुम्हारे मरने के बाद भी उतार दूँगी। तुम इसकी चिंता छोड़ो।”

मैं सोचने लगा, श्यामा ने वज्र ही अपनी छाती पर रखकर यह वाक्य कहा होगा। मुझे चिंतामुक्त रखने को वह क्या नहीं कर सकती थी।

मरने के लिए जो मैंने अपने आप को छोड़ दिया था, वह मुझे एकदम गलत लगा। मुझे अपने लिए नहीं तो श्यामा के लिए जीने का संघर्ष करना चाहिए। श्यामा के लिए मैंने जीवन में कुछ नहीं किया, कभी करने के योग्य नहीं रहा। अब यदि मैं उसे ऐसी स्थिति में छोड़ जाऊँ कि वह मेरे मरने पर मेरा ऋज उतारने की चिंता करे तो मुझ-सा जघन्य अपराधी कौन होगा! नहीं, मैं श्यामा के लिए चिंताएँ नहीं छोड़ जाऊँगा, जीने का रास्ता खोजूँगा, जीकर अपनी चिंताएँ समाप्त करूँगा। एक रात जैसे मेरे कानों में किसी ने कहा, “एक रास्ता अब भी है।”

पंद्रह दिन के ही इलाज में अपना बटुआ खाली हो गया था। मैं कदापि नहीं चाहता था कि पिताजी घर को हाथ लगाएँ। अपनी वृद्धावस्था में शांति से बैठने को- चाहे उनको भूखे-नंगे ही बैठना पड़े- उन्होंने एक शरणस्थल बनाया था। मैं उससे उन्हें वंचित करने का कारण नहीं बनना चाहता था। पर यह भी नियति का एक व्यंग्य है कि मेरे पिता-माता, दोनों में से किसी को अपनी छत के नीचे अपनी अंतिम श्वासों छोड़ने का योग नहीं बना था- ‘ना जाने राम कहाँ लागै माटी।’ पर उस समय मैं कैसे जानता।

और एक दिन मुझे वह रास्ता दिखाई दिया, जिस पर अपने बल पर चलकर मैं अपनी चिंताएँ समाप्त कर सकता था। किसी के लिए, विशेषकर श्यामा के लिए, मैं कोई चिंताएँ नहीं छोड़ूँगा। इस संकल्प ने मुझे दृष्टि भी दी, बल भी दिया।

मैंने डॉ. बी. के. मुखर्जी के पास जाकर कहा, “डाक्टर साहब, आप का इलाज बहुत महँगा है, मेरे पास आपके इलाज के लिए पैसे नहीं...”

इसके पूर्व कि मैं कुछ और कहूँ या पूछूँ उन्होंने अपने बदनाम मुँहफट स्वभाव से कहा, “पैसे नहीं है तो जाओ मरो!”

मुझे जीवन में चुनौती से ही बल मिलता है। वे यदि मुझे सौ बरस जीने का आशीर्वाद भी देते तो शायद जीने के लिए संघर्ष करने का मुझमें इतना बल न आता जितना मैंने उनके ‘जाओ मरो,’ शब्दों से संचय किया।

लड़कपन में मेरे पड़ोसी बाबू मुक्ता प्रसाद ने लुई कूने के पानी के इलाज से मुझे परिचित कराया था। मेरी ऐसी बीमारी के लिए ठंडे पानी के टब में बैठकर ‘सिट्ज बाथ’ लेने का विधान था। एलोपैथी में क्षय के रोगी को दूध, घी, मक्खन, अण्डा अधिक से अधिक दिया जाता था। कूने के इलाज में चिकना मना था, सिर्फ कच्ची सब्जियाँ, फल, भीगे चने, गेहूँ आदि पर रहना था। न दवा पर कुछ खर्च, न खुराक पर कुछ खर्च- यही इलाज तो मेरी स्थिति के अनुकूल था और काम-काज साधारण किये जाना था। मैंने बी.के. मुखर्जी का नुस्खा फाड़ डाला और कूने के अनुसार सिट्ज बाथ आरंभ किया, तदनुसार खुराक आदि रखी। स्कूल भी जाने लगा, केवल रातवाली ट्यूशन छोड़ दी। उसका मोआवजा एक तरह से किताबों की बिक्री से मिल जाता। श्यामा ने मेरा विरोध न किया। जीवनभर मैं जिस रास्ते पर भी चला उसने ‘स्वस्ति पंथा’ कहा और मेरे पीछे चली। मेरी स्नान-चिकित्सा के संबंध में भी वह प्रतिदिन अपनी सेवा, सहयोग देती रही, सबसे अधिक अपने इच्छा-बल से उसने मुझे अपने रास्ते पर न ठहरने दिया, न पीछे फिरने दिया- ‘राह पकड़ तू एक चलाचल पा जाएगा मधुशाला’। लेकिन अपने अड़िग इच्छा-बल से उसने जो सबसे बड़ा सहयोग दिया और जो सबसे बड़ा चमत्कार किया वह यह था कि जितने दिन मेरा इलाज चलता रहा उसने अपने सारे रोगों को जैसे कील दिया और कभी एक उँगली दुःखने की भी शिकायत

न की। शायद उसके प्रति इस निश्चिंतता ने मुझे अपने रोग से लड़ने का जितना बल दिया उतना किसी चीज ने नहीं। इस आत्म-नियंत्रण, आत्मनिग्रह, इच्छाबल, हठयोग की - समझ में नहीं आता उसे क्या नाम दूँ- बड़ी महँगी क्रीमत उसे चुकानी पड़ी। अपने क्षय-ज्वर से पूर्णतया मुक्त हो जिस दिन मैंने सामान्य भोजन किया- 15 अप्रैल, 1936 को- ठीक उसी दिन वह चारपाई पर गिरी और फिर न उठी; 216 दिन बराबर रोग-शय्या पर पड़े रहने के बाद 17 नवम्बर, 1936 को उसने अपना शरीर छोड़ दिया। श्यामा के और अपने विवाहित जीवन के अंतिम अठारह महीनों में मुझे और उसे, दोनों को मौत के साथ संघर्ष करना पड़ा। मेरे संघर्ष में श्यामा ने अपनी इतनी आंतरिक मंगल कामना दी; इतना सहयोग दिया, इतनी अपनी सेवा दी, इतना अपने को दिया, इतना अपनी ओर से मुझे चिंता-विमुक्त रखा कि मैं उस संघर्ष में विजयी हुआ, पर उसके संघर्ष में बहुत मैंने अपनी शुभकामना दी, बहुत सहयोग दिया, बहुत सेवा दी, बहुत अपने को दिया पर वह पराजित हो गई, संभवतः एक मोर्चे की कमजोरी से, वह मेरे विषय में मृत्यु की अंतिम साँसों तक चिंता-विमुक्त नहीं हो सकी।

### शब्दार्थ और टिप्पणी

प्लूरिसी दांतों की बीमारी, फेफड़ों में पानी भर जाना टाल मटुल टालना अदायगी देना, प्रदान करना नुस्खा उपाय आत्मनिग्रह आत्मा पर अंकुश एलोपैथी अंग्रेजी पद्धति की अचार पद्धति नेचरोपथी प्राकृतिक उपचार पद्धति

### स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :
  - (1) सामान्यतः लेखक कौ कौन-कोन सी बीमारियाँ रहती थीं?
  - (2) लेखक एलोपैथी का उपचार क्यों नहीं कराते थे?
  - (3) बच्चनजी को मुक्ता प्रसादजी ने कौन सा उपचार बताया था?
2. सविस्तर उत्तर दीजिए :
  - (1) लेखक बीमारी में भी क्यों काम करते थे?
  - (2) लेखक की बीमारी सुनकर श्यामा काँपकर तुरंत क्यों संभल गई?
  - (3) लेखक को ऐसा क्यों लगा की उन्हें श्यामा के लिए जीने का संघर्ष करना चाहिए?
  - (4) बच्चनजी की पारिवारिक आर्थिक विपन्नता के बारे में अपने विचार प्रकट कीजिए।
3. नीचे दीये गये वाक्यों का भावार्थ समझाइए :
  - (1) 'बीमारी अमीरों की हरमजदगी है, गरीबों को उसे अपने पीछे न लगाना चाहिए।'
  - (2) 'काम के पीछे बुखार भागे।'
4. शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द दीजिए :
  - (1) जहाँ शरण लिया जा सके
  - (2) सौ-बरस जीने का आशीर्वाद
  - (3) शुभ मार्ग पर चलने का आशीर्वाद
5. विरोधी शब्द दीजिए :
 

चिकना, मधु, कलश, विमुक्त

### योग्यता-विस्तार

### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- बीमारी का इलाज करते बच्चन का शब्दचित्र प्रस्तुत कीजिए ।

### शिक्षक-प्रवृत्ति

- हरिवंशराय बच्चन की प्रख्यात रचना 'मधुशाला' का कैसेट बच्चों को सुनाइये।  
हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा का एक अंश कैसेट द्वारा सुनाइये।



सूरदास

(जन्म : सन् 1478 ई. : निधन : सन् 1573 ई.)

महाकवि सूरदासजी का जन्म कुछ लोगों के मतानुसार दिल्ली के पास सीही नामक गाँव में हुआ था। कई लोगों का मानना है कि इनका जन्म मथुरा के पास रुकना या रेणुका क्षेत्र में हुआ था। इनका जन्मांध होना भी विवादास्पद है। वल्लभाचार्य इनके गुरु थे। इनकी प्रेरणा से वे श्रीनाथजी मंदिर में कृष्ण की लीलाओं से संबंधित पदों की रचना करते थे। ये कृष्ण के अनन्य भक्त थे।

वात्सल्य एवं शृंगार रस के वर्णन में वे अद्वितीय हैं। प्रस्तुत पद में सूरदास की अनन्य भक्ति-भावना का परिचय मिलता है। उनका मन सिवाय कृष्ण के कहीं ओर सुख नहीं पाता। जिन आँखों ने कमल के समान नयनवाले श्रीकृष्ण का दर्शन कर लिया हो वे ओर देव की आराधना कैसे कर सकती हैं? आराध्य देव का गुणगान सूरने किया है। दूसरे पद में भी कृष्ण का मनमोहक वर्णन किया है। बालकृष्ण की चेष्टाओं के माध्यम से बालक कृष्ण का मनोरम्य वर्णन किया है।

### विनय तथा भक्ति

( 1 )

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।  
जैसे उड़ि जहाज को पंछी, फिरि जहाज पर आवै।  
कमल-नैन कौ छाँड़ि महातम, और देव को ध्यावै।  
परम गंगा कौं छाँड़ि, पियासौ, दूरमति कूप खनावै।  
जिहिँ मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यों करील-फल भावै।  
सूरदास-प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।

( 2 )

सोभित कर नवनीत लिए।  
घुटुरुनि चलन रेनु तन-मंडित, मुख दधि लेप किये।  
चारू कपोल, लोल लोचन, गोरोचन-तिलक दिये।  
लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन मादक मधुहिँ पिए।  
कटुला-कंठ, बज्र केहरि-नख, राजत रूचिर हिए।  
धन्य सूर एकौ पल इहिँ सुख, का सत कल्प जिए।

### शब्दार्थ और टिप्पणी

अनत दूसरे स्थान पर, अन्यत्र पंछी पक्षी, विहग महातम महानता, माहात्म्य ध्यावै ध्यान करे छाँड़ि छोड़कर पियासौ प्यासा दूरमति खराब बुद्धिवाला करीला कंटीली झाड़ी छेरी बकरी चारु सुंदर लोचन आँख मादक नशायुक्त

### स्वाध्याय

- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :
  - जहाज का पंछी जहाज से उड़कर फिर कहाँ आता है?
  - सूरदास के मधुकर को करील फल क्यों नहीं भाता?
  - बालकृष्ण के मुख पर किसका लेप किया हुआ है?
  - सूर धन्य क्यों हुए?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :
  - (1) सूर ने किन उदाहरणों द्वारा अपनी अनन्य भक्ति भावना प्रकट की है ?
  - (2) बालक कृष्ण के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
  - (3) सूरदास अपने आपको क्यों धन्य मानते हैं ?
3. तत्सम रूप दीजिए :

अनत, पंछी, महातम, पियासौ, दुरमति, लट, मधुहिँ, केहरि
4. समानार्थी शब्द लिखें :

पक्षी, अंबुज, कूप, मधुकर, धेनु, छेरी, नवनीत, लोचन, कंठ, नख

### योग्यता-विस्तार

### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- चलचित्रों में पाए जानेवाले सूरदासजी के पदों का संग्रह कीजिए ।
- सूरदास के जीवन और साहित्य सर्जन के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त कीजिए।

### शिक्षक-प्रवृत्ति

- सूरदास के चित्र प्राप्त करें तथा छात्रों से उनके जीवन और कथन के चार्ट्स करवाइए।
- मल्टीमिडिया के उपयोग द्वारा सूरदास के पद की सी.डी. बनवाइए।



मोहन राकेश

(जन्म : सन् 1925 ई. : निधन : सन् 1972 ई.)

मोहन राकेश का जन्म जालंधर (पंजाब) में हुआ था। इनके पिता व्यवसाय से वकील थे, परंतु उनकी साहित्य में बहुत रुचि थी। अतः राकेश को बचपन से ही घर में पर्याप्त साहित्यिक वातावरण प्राप्त हुआ। इन्होंने हिन्दी तथा संस्कृत में एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की और तत्पश्चात् डी.ए.वी. कॉलेज, जालंधर में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रूप में अध्यापन कार्य किया। कुछ समय तक इन्होंने 'सारिका' कहानी पत्रिका का सफल सम्पादन किया और बाद में स्वतंत्र लेखन करते रहे। कहानी लेखन के साथ-साथ इन्होंने उपन्यास और नाटक भी लिखे थे। इनकी प्रमुख रचनाओं में 'इंसान के खंडहर', 'नए बादल', 'एक और आदमी' आदि कहानी संग्रह तथा 'अंधेरे बंद कमरे', 'न आनेवाला कल' प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 'आषाढ़ का एक दिन', 'आधे-अधूरे' तथा 'लहरों के राजहंस' इनके प्रसिद्ध नाटक हैं। मोहन राकेश मूलतः एक सफल कहानीकार तथा नाटककार हैं।

'गुलमर्ग की खिड़की से एक रात' 'परिवेश' से लिया गया है। इस यात्रा वृत्तांत में लेखक ने गुलमर्ग के प्राकृतिक सौंदर्य का स्वानुभूत विवरण प्रस्तुत किया है। गुलमर्ग का सारा वातावरण इनको अपने में समाया सा लगता है। 'गुलमर्ग' की एक रात' का अकल्पनीय सौंदर्य इनसे भुलाया ही नहीं जाता।

कुछ जगहें होती हैं जिन्हें आँख एक बार देखती है तो चौंक उठती है, फिर धीरे-धीरे परिचित होकर उदासीन हो जाती है। गुलमर्ग ऐसी जगह नहीं है।

मैं जब पहली बार गुलमर्ग गया, तो मुझे वहाँ कुछ भी असाधारण नहीं लगा—एक खुला सपाट मैदान, देवदारों के घने झुरमुट और बस! तब मैं घण्टे-भर में सारा गुलमर्ग देख आया था।

मगर बाद में महीनों वहाँ रहने पर एहसास हुआ कि पहली बार तो क्या, बाद में भी कभी उस स्थान को पूरा नहीं देख पाया—उसे पूरा कभी देखा ही नहीं जा सकता। शायद यही कारण है कि गुलमर्ग में रहकर वहाँ के साथ व्यक्ति की आत्मीयता धीरे-धीरे इतनी गहरी हो जाती है कि वह अपने को भी उस सपाट मैदान के एक हिस्से के रूप में ही देखने लगता है— काँपती तितलियों उठते बादलों और बर्फ से चमकती पहाड़ियों की तरह। दूसरी ओर वह पूरा विस्तार, जिसमें वह स्वयं भी रहता है, उसे अपने में समाया—सा लगता है— सूर्योदय और सूर्यास्त, दोनों सन्ध्याएँ, घना कोहरा, पीली धूप और सब—कुछ! इसलिए जब व्यक्ति गुलमर्ग से चलता है, तो एहसास होता है अपने से ही बिछुड़ने का— अपने उस रूप से जो कि इतना परिचित होते हुए भी सदा अपरिचित बना रह जाता है!

गुलमर्ग में सपने फूल बनकर उगते हैं— हरियाली के आर-पार, लाल-लाल छतों के ऊपर, आकाश में। आँखें मुग्ध होकर देखती रहती हैं और फूलों में नये-नये रंग भर जाते हैं, वातावरण में नयी-नयी कोंपलें फूट आती हैं। हर क्षण एक नये अनुभव, नये रोमांच की सृष्टि होती है।... बादलों के पोर्टिको के नीचे लोग बाँहें फैलाये घास पर बैठे हैं। दूर-दूर तक सैलानियों की पंक्तियाँ घोड़े दौड़ाती नज़र आती हैं। रंगों के कुछ बिन्दु हरियाली के पट पर जहाँ-तहाँ छिटके हैं। सहसा प्रकाश से नन्हीं-नन्हीं पारदर्शक बूँदे पड़ने लगती हैं। रंगीन बिन्दुओं का पूरा विस्तार एक बार सिहर जाता है और अपने को समेटने लगता है। हरियाली का सपना कुहासे के फूल में बदल जाता है। मैदान सुरमई आभा ओढ़ लेता है। अब चारों तरफ धुन्ध-ही-धुन्ध है और बेबस होकर फैली पगडण्डियों की पतली-पतली नरम बाहें। जब तक बादल बरसेगा, बाँहें फैली रहेंगी—ऐसी ही कोमल, विस्मृत और निढाल।

सूरज चमकेगा तो फूल में से नया सपना जन्मेगा। आकाश में बादलों के नन्हें-नन्हें द्वीप इधर-उधर भटकते फिरेंगे। भेड़ों और बकरियों के रेवड़ पगडण्डियों पर टँक जाएँगे। दिन तब रात की प्रतीक्षा करता—सा प्रतीत होगा। रात आएगी तो सब कुछ खामोश हो जाएगा—मैदान की वह खामोशी भी, जो दिन के समय इतनी वाचाल हो जाती है!

गुलमर्ग की वह रात मुझे कभी नहीं भूलेगी। मैं होटल की खिड़की में खड़ा था। दूर-बहुत दूर सामने से एक बरसती घटा मेरी तरफ बढ़ती आ रही थी। मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि कब वह मुझ तक पहुँचे और मुझे अपने में लपेट ले। बरसती घटा में घिर जाने से बड़ा सुख मैंने बहुत कम जाना है। घटा ऊपर से घिर आये और व्यक्ति को छोटा करके उस पर छा जाए, यह इससे अलग स्थिति है। इस बार आती हुई घटा का हर संकेत मेरे सामने था और मैं उसके बराबर का होकर अपनी खिड़की में खड़ा उसे बुला रहा था कि आ... आ... आ, मैं

तुझसे कमजोर नहीं हूँ। हवा तेज़ थी, मगर घटा तेजी से नहीं बढ़ रही थी- हालाँकि तूफान बहुत उठा हुआ था। बार-बार जोर की गरज होती थी जिससे धरती और आकाश की शिराएँ काँप जाती थी। बार-बार सामने के चित्रपट पर बिजली कौंधती थी-और प्रकाश का वह भयानक विस्फोट हर चीज़ को नंगा कर जाता था। मैं खुश था कि थोड़ी देर में ये बूँदें मेरे ऊपर बरसेंगी-बिजलियों का यह क्रहर मेरे ऊपर टूटेगा। मैं बाँहें फैलाकर सामने से उसे अपने ऊपर लेने के लिए तैयार था।

मगर अचानक हवा रूक गयी। बढ़ता हुआ तूफान जहाँ का तहाँ ठिठक गया और दूर ही पर कटे पक्षी की तरह दम तोड़ने लगा। बिजली की साँस रुकने लगी-और मेरी भी-क्योंकि हवा के रुक जाने से मुझे भी बहुत ऊँचे आसमान से नीचे आना पड़ा था। तूफान का जोम उतर गया और उसके साथ ही मेरा भी। मैं उसके बराबर का कभी नहीं हो सका।

वे ऐसे क्षण थे जो जीवन में दो-एक बार ही आते हैं। गुलमर्ग में रहते हुए ऐसे क्षण हर किसी के जीवन में किसी-न-किसी रूप में अवश्य आते होंगे। तभी तो मुदत तक वहाँ रह चुकने पर भी कोई आकर्षण व्यक्ति को फिर खींचकर वहाँ ले जाता है। वरना वहाँ है क्या-एक खुला सपाट मैदान जहाँ ज्यादा गॉल्फ खेली जा सकती है! व्यक्ति क्यों बार-बार वहाँ जाना चाहता है? क्या गॉल्फ खेलने के लिए ही?

### शब्दार्थ और टिप्पणी

**गुलमर्ग** कश्मीर का एक सुन्दर प्राकृतिक रमणीय स्थान **तिगलिया** तिराहा, जहाँ तीन रास्ते मिलते हों **रोमांचकी** आनन्द देनेवाली, हर्षित करनेवाली **पोर्टिको** बरामदा, ड्योढ़ी **रेबड़** झुंड **कहर** अत्याचार **दम तोड़ना** मर जाना

### स्वाध्याय

- निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :**
  - (1) गुलमर्ग का भौगोलिक वातावरण कैसा है?
  - (2) लेखक ने गुलमर्ग के साथ व्यक्ति की आत्मीयता बढ़ने का क्या कारण बताया है?
  - (3) खिड़की के पास खड़ा लेखक बरसाती घटा को देखकर किस बात की प्रतीक्षा करने लगा?
  - (4) तूफान के एकाएक रुक जाने पर लेखक को कैसा अनुभव हुआ?
  - (5) लेखक को किस बात का अफसोस हुआ?
  - (6) लेखक ने गुलमर्ग की पगडण्डियों के लिए क्या उपमा दी?
- निम्नलिखित प्रश्नों के दो-दो वाक्यों में उत्तर लिखिए :**
  - (1) गुलमर्ग से विदा होते समय सैलानियों को कैसा अहसास होता है?
  - (2) लेखक ने गुलमर्ग के दिन को वाचाल क्यों कहा?
  - (3) सैलानी कब और क्यों सिहर जाते हैं?
  - (4) लेखक की प्रतीक्षा असफल क्यों हुई?
- निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :**
  - (1) लेखक ऐसा क्यों कहता है कि गुलमर्ग को कभी पूरा देखा नहीं जा सकता?
  - (2) 'दिन में गुलमर्ग की शोभा' का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
  - (3) प्रकाश, बादल तथा हवा के कारण गुलमर्ग दर्शन में आए रोमांच का वर्णन कीजिए।
- पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :**
  - (1) गुलमर्ग में सपने फूलकर उगते हैं- हरियाली के आर-पार, लाल-लाल छतों के ऊपर आकाश में।
  - (2) रंगीन बिन्दुओं का पूरा विस्तार एक बार सिहर जाता है और अपने को समेटने लगता है।

5. 'हरियाली का सपना कुहासे के फूल में बदल जाता है' – यह दृश्य किस समय का है?  
(अ) प्रातःकाल (ब) दोपहर (क) सायंकाल (ड) अर्धरात्रि
6. (1) उचित उपसर्ग जोड़कर उनके विरुद्धार्थी शब्द बनाइए :  
साधारण, मान, उदार, रंग, स्मृति  
(2) उचित प्रत्यय जोड़कर विशेषण शब्द बनाइए :  
सुरमा, बरसात, तूफान, चमक, विस्फोट  
(3) उचित प्रत्यय जोड़कर संज्ञा बनाइए :  
लाल, खामोश, कमजोर, आकर्षक
7. वाक्य में प्रयोग कीजिए :  
विस्फोट, आकर्षण, पारदर्शक, रोमांचक

### योग्यता-विस्तार

#### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- राहुल सांस्कृत्यायन की 'मेरी लदाख यात्रा' पुस्तक पढ़िए।
- आपने जिन पर्यटन स्थलों की यात्रा की है, उनका वर्णन कीजिए।

#### शिक्षक-प्रवृत्ति

- किसी यात्रा का आयोजन करें।
- यात्रा वर्णनों का संकलन करवाइए।

●

फणीश्वरनाथ रेणु

(जन्म : सन् 1921 ई. : निधन : सन् 1977 ई.)

प्रसिद्ध आंचलिक कथाकार 'रेणु' का जन्म बिहार में वर्तमान बिहार के पूर्णिया जिले के औराही-हिंगना गाँव में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा उनके गाँव, विराटनगर (नेपाल) तथा वाराणसी में हुई। उन्होंने भारत तथा नेपाल के स्वाधीनता आंदोलनों में सक्रिय भाग लिया तथा कारावास भोगा। कुछ समय तक उन्होंने आकाशवाणी पटना में कार्य किया। अपने पहले उपन्यास "मैला आँचल" के प्रकाशन के साथ ही वे विख्यात हो गए। उसके पहले वे एक कहानीकार तथा रिपोर्ताज लेखक के रूप में साहित्य-जगत में सुपरिचित हो चुके थे।

'रेणु'जी की रचनाओं में उनका जीवन अनुभव मुखरता है। जीवन की सुरुपता-कुरुपता को मानवीय सहृदयता तथा पूर्ण तटस्थता के साथ उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है। उनकी भाषा में लोक बोलियों के शब्दों का प्रयोग ध्यानाकर्षक है। भाषा में ताजगी और नयापन है। मैला आँचल, परती परिकथा, जुलूस, पल्लू बाबू रोड, कितने चौराहे आदि उनके प्रमुख उपन्यास तथा टुमरी, अग्निखोर, एक आदिमरात्रि की महक आदि उनके प्रमुख कहानीसंग्रह हैं। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि से सम्मानित किया था।

यह अंश उनके उपन्यास 'कितने चौराहे' के सातवाँ प्रकरण से लिया गया है। विद्यार्थी जीवन में ही मानवीय-सामाजिक मूल्यों के प्रति कथानायक मनमोहन का कैसे झुकाव होता है, इस अंश में उसका चित्रण है। शिक्षक इस पाठ से निर्भयता के गुण का विकास करने का प्रयास करेगा।

प्रियोदा !

प्रियव्रत राय मैट्रिक में पढ़ता है। स्कूल के सभी लड़के और मास्टर उसको प्यार करते हैं। स्कूल ही नहीं, उस छोटे-से कस्बे में उसको प्रायः सभी जानते हैं। हर रविवार की सुबह बगल में झोली लटकाकर 'संन्यासी-आश्रम' के लिए मुठिया वसूलने निकलता है- कभी अकेला, कभी साथियों के साथ। स्कूल का कोई छात्र या शिक्षक बीमार पड़ा कि प्रियोदा अपनी टोली के साथ उसके घर पर हाजिर। जब तक रोगी भला-चंगा न हो जाए, उसका दल सेवा में जुटा रहता है।

रोबी और कालू प्रियोदा के दल में हैं। उन लोगों ने मनमोहन को भी अपने साथ प्रियोदा के दल में शामिल कर लिया।

हर शनिवार को परमान के उस पार 'बालूचर' पर प्रियोदा के दल के सदस्य, स्कूल की छुट्टी के बाद जमा होते हैं। खेल-कूद, गाने-बजाने के अलावा प्रियोदा दुनिया-भर की खबर सुनाते हैं। रविवार का प्रोग्राम तय करते हैं, किस मुहल्ले में कौन जाएगा मुठिया वसूलने। किस बीमार की सेवा करने कौन-कौन जाएँगे।

उस दिन मनमोहन का परिचय देते हुए कालू ने कहा था, "प्रियोदा! यह मोना-मनमोहन। खूब तेज लड़का है। 'क्लब' का सदस्य होना चाहता है।"

प्रियोदा ने मनमोहन को सिर से पैर तक देखकर पूछा था, "भारतवर्ष के एक ऐसे आदमी का नाम लो, जिसे लोग भगवान का अवतार समझते हैं।"

"महात्मा गांधी।"

"ठीक है। तुम पढ़-लिखकर क्या बनना चाहते हो?" प्रियोदा का दूसरा सवाल।

मनमोहन चुप रहा। फिर बोला, "वकील।"

सभी ठठाकर हँसे। लेकिन प्रियोदा गम्भीर ही रहे। बोले, "ठीक है। बीमार लोगों की सेवा करना जानते हो?"

"सीख लेंगे।"

"शाबाश! यदि रोगी हैजा से पीड़ित हो?"

मनमोहन चुप रहा, क्योंकि हैजा के नाम से ही उसे डर लगने लगता है।

"गाना जानते हो?"

"जी।"

"तैरना?"

“जी नहीं।”

प्रियोदा ने सूर्यनारायण नामक सदस्य से कहा, “सूरज! मोना तैरना नहीं जानता।”

“सीख जाएगा। एक दिन उठाकर पानी में फेंक दूँगा, खुद तैरने लगेगा।”

सभी हँसे। सूर्यनारायण पढ़ने में कमजोर हैं, लेकिन शरीर उसका मजबूत है। रोज एक सौ ‘डंड-बैठक’ करता है। उसके साथी ‘सूरज पहलवान’ कहते हैं, उसको। दल के सदस्यों को तैरना सिखलाना उसी का काम है।

उस दिन सभी ने नए सदस्य मोना, यानी मनमोहन से गीत सुनने की इच्छा प्रकट की। मनमोहन पहले लजाया, किन्तु जब प्रियोदा ने आग्रह किया तो उसने खखारकर गला साफ किया। कौन गीत गाये वह? उसने शुरू किया।

“राम रहीम न जुदा करो भाई

दिल को सच्चा रखना जी...।”

गीत समाप्त होने के बाद प्रियोदा बोले, “वाह! बहुत मीठा गला है तुम्हारा! कालू, तुम ‘प्रभातफेरी’ वाले दोनों गीत मोना को सिखा देना।”

सूरज पच्छिम की ओर झुक गया। बालूचर पर लाली उतर आई। परमान की धारा पर डूबते हुए सूरज की अंतिम किरण झिलमिलाई। पखेरू दल बाँधकर बाँस-वन की ओर लौटने लगे। प्रियोदा के दल के सभी सदस्य पंक्ति बाँधकर लौटे। पुल के पास एक गाड़ीवान तन्मय होकर गीत गा रहा था- “भोला गरीबक दीन-पहिया हरब भोला गरीबक दीन।”

सूरज ने भी उसी सुर में सुर मिलाकर गाना शुरू किया- “एक टा जे लोटा छल, बेटा छल तीन-पनियाँ पीबैत काल लोटा लेलक छीन...”

कृत्यानन्द झा ने कहा, “विद्यापति की ‘लाचारी’ है।”

“लाचारी?”

“लाचारी।”

-ट्रट्टाँय!...

बालूचर के उस पार से किसी ने फायर किया। एक पखेरू बालू पर गिरकर छटपटाने लगा। उसका जोड़ा विकल होकर बहुत देर तक रोता रहा। मटमैले अन्धकार में एक अर्दलीनुमी आदमी दौड़ा हुआ आया और मरी हुई चिड़िया के डैने को पकड़कर चिल्लाया, “मिल गया हुजूर!”

इब्राहीम बोला, “सब-डिप्टी साहब का अर्दली है। साला, भारी खचड़ा है।”

प्रियोदा के मुँह से अचानक निकला, “हॉल्ट!”

तब इब्राहीम को अपनी गलती का एहसास हुआ। दल का नियम है कोई सदस्य किसी किस्म का अपशब्द या गाली मुँह से नहीं निकालेगा। इब्राहीम ने तुरंत सिर झुकाकर दल के नायक प्रियोदा और सदस्यों से माफ़ी माँगी, “बात यह है कि साले ने...।”

सभी हँसे। प्रियोदा ने गंभीर होकर कहा, “इब्राहीम, यह तुम्हारी आठवीं गलती है, ‘दस’ होते ही हम तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे।”

इब्राहीम ने पूछा, “लेकिन सरकारी अफसरों को गाली देने में क्या हर्ज है?”

“तुम्हारा मुँह खराब होगा। उनका कुछ भी नहीं बिगड़ेगा।”

“मगर वे जो गाली देते हैं?”

“वे ही क्यों, बहुत लोग गालियाँ बकते हैं।”

“नहीं प्रियोदा, आप इब्राहीम को नहीं समझा सकिएगा। वह महीन बात देरी से बूझता है। मैं समझा देता हूँ। देखो... इब्राहीम! यदि ‘क्लब’ का मेम्बर रहना है तो इसके ‘रूल्स’ को मानना होगा। नियम है कि कोई सदस्य आपस में बातचीत के सिलसिले में भी कोई खराब शब्द नहीं बोलेगा। जानते हो न?... बस। बात खत्म।”

‘सहुआइन-धर्मशाला’ के पास आकर सभी ने एक-दूसरे से विदाई ली। कालू ने कहा, “मोना, तू रास्ते में डरेगा, मैं जानता हूँ। चल, मैं पहुँचा दूँ।”

प्रियोदा ने कहा, “मोना डरता है? मैं उसे पहुँचा दूँगा। तू घर जा कालू।”

रास्ते में प्रियोदा चुप रहे। एक सूनी जगह पर आकर रुक गए।... सड़क के दोनों ओर बड़े-बड़े पीपल के पेड़। दोनों ओर बहुत दूर तक खंडहर और मैदान। पास के एक उजड़े हुए मकान की ओर इशारा कर प्रियोदा ने कहा, “जानते हो, इस घर में कभी मुर्दों की चीर-फाड़ होती थी- पोस्टमार्टम-हाउस था यह। इसीलिए, लोगों को डर है कि आसपास के पेड़ों पर भूत-पिशाच किलकिल करते रहते हैं, मैदान में प्रेतनियाँ नाचती हैं- संतालियों की तरह झुंड बाँधकर।... क्यों, डरने लगा?”

“अकेले यहाँ आ सकते हो?”

“जी नहीं।”

प्रियोदा हँसे। बोले, “देख मोना, भूत-प्रेत ऐसे आदमी को कभी नहीं तंग करता, जो ‘दस’ काम करता हो। तुम्हारी उम्र में मैं भी डरता था। मेरे गुरु महाजन ने मुझसे हँसकर कहा कि ‘दस’ का काम करनेवाला तो खुद ‘भूत’ होता है- उसको भूत क्या कर सकता है?... चलो, शुरू करो तो वह गाना-राम रहीम ना...”

मनमोहन गाने लगा, “राम रहीम ना जुदा करो भाई, दिल को सच्चा रखना जी-ई-ई-ई!!”

### शब्दार्थ और टिप्पणी

परमान एक नदी का नाम बालूचर रेतीला नदी पट जुदा अलग आग्रह अनुरोध फ़रमाइश, हठ पखेरू पंखवाले, पक्षी दल झुंड, टीली पंक्ति कतार तन्मय तल्लीन, समाधिस्थ नाचारी एक लोकगीत विकल व्याकुल हॉल्ट रुको हर्ज नुकसान रुल्स नियम अपशब्द गाली, बुरा शब्द संताल एक आदिवासी जाति खचड़ा अड़गेबाज, मूर्ख

### मुहावरे

मुठिया वसूलना किसी नेक काम के लिए मुट्ठीभर अनाज की भीख माँगना भला चंगा स्वस्थ सिर से पैर तक देखना भली भाँति देखना महीन बात सूक्ष्म बात

### स्वाध्याय

#### 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

- (1) प्रियोदा को सभी लोग क्यों प्यार करते हैं?
- (2) प्रियोदा के दल के तीन सदस्यों के नाम बताइए।
- (3) प्रियोदा की टोली कौन-कौन से सेवा कार्य करती है?
- (4) मनमोहन को तैरना सिखाने की जिम्मेदारी किसे सौंपी गई?
- (5) इब्राहीम ने किस बात के लिए माफ़ी माँगी?
- (6) अपशब्द न बोलने के बारे में क्लब का क्या नियम था?

#### 2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- (1) प्रियोदा के दल के सदस्य शनिवार की शाम को कहाँ पर एकत्र होते हैं?
- (2) स्कूल की छुट्टी के बाद सभी सदस्य मिलने पर क्या करते हैं?
- (3) मनमोहन ने प्रियोदा के पहले प्रश्न के उत्तर में किस भारतीय महापुरुष का नाम लिया?
- (4) पक्षी को किसने गोली मारी थी?
- (5) प्रियोदा के मुँह से ‘हॉल्ट’ क्यों निकला?
- (6) सड़क के दोनों ओर कौन-से वृक्ष थे?



3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :
- (1) कस्बे के अधिकांश लोग प्रियोदा और साथियों को क्यों पहचानते थे?
  - (2) प्रियोदा की टोली शनिवार को स्कूल से छूटने के बाद क्या करती है?
  - (3) मनमोहन को तैरता सिखाने के बारे में सूर्यनारायण ने क्या कहा?
  - (4) पुल के पास गाड़ीवान क्या कर रहा था?
  - (5) मनमोहन का भय दूर करने के लिए प्रियोदा ने क्या किया?
  - (6) भूत-प्रेत के बारे में प्रियोदा ने मनमोहन से क्या कहा?
  - (7) प्रियोदा की टोली का रविवार को क्या कार्यक्रम होता था?
4. सविस्तार समजाइए :
- (1) सूरज पश्चिम की ओर झुक गया।
  - (2) दस और देश का काम करनेवाला तो खुद भूत होता है- उसको भूत क्या कर सकता है?
  - (3) राम रहीम ना जुदा करो भाई, दिल को सच्चा रखना जी...
  - (4) भोला गरीबक दीन-पहिया हरब भोला...
5. सही जोड़े मिलाइए :
- |                  |                       |
|------------------|-----------------------|
| मनमोहन           | पहलवान                |
| प्रियव्रतराय     | खचड़ा                 |
| सूर्यनारायण      | एक नदी                |
| डिप्टी का अर्दली | मैट्रिक का विद्यार्थी |
| परमान            | हैजे से डरनेवाला      |
6. शब्द समूहों के लिए एक-एक शब्द लिखिए :
- (1) दूसरों के किए हुए उपकार को माननेवाला...
  - (2) दूसरों के किए गए उपकार को न माननेवाला...
  - (3) मुर्दों के चीर-फाड़ की जगह.....
  - (4) जहाँ बीमारों को भर्ती करके इलाज होता है...
7. सूचनानुसार उत्तर दीजिए :
- (क) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए:  
गरीब, प्यार, स्वस्थ, गलत, उजड़ा
- (ख) दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए:  
सुबह, शाम, दल, कमज़ोर, मकान

#### योग्यता-विस्तार

#### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- यदि उपलब्ध हो सके तो 'कितने चौराहे' उपन्यास पढ़िए।

#### शिक्षक-प्रवृत्ति

- निर्भयता के गुणवाली कहानियाँ ढूँढ़कर विद्यार्थियों को पढ़कर वर्ग में सुनाइए।



## कहावतें

हम लोगों को उचित हैं कि दूसरों के लिए जिएँ। जो तन-मन-धन से परोपकार करते हैं, वे ही धन्य हैं। यदि अपने के लिए जन्म गँवा दिया तो क्या किया? अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है।

उपर्युक्त अनुच्छेद में 'अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है'— कहावत है। जो अर्थ का पूर्ण रूप से स्पष्ट करनेवाला स्वतंत्र वाक्य है। जिसका उपयोग किसी कही हुई बात के समर्थन में प्रयुक्त होता है।

कहावत का संबंध किसी-न-किसी घटना से हुआ करता है। लोग उस घटना से संबंधित कोई पंक्ति गढ़ लिया करते हैं और जब कभी वैसा प्रसंग आता है, तब वे उस पंक्ति को दुहराकर घटनाजनित बातों की पुष्टि करते हैं। जैसे— यदि कोई किसी कार्य को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करने की बात करे और प्रस्तुति करण का मौका देने पर कोई बहाना बनाए तो उसके बारे में कहा जाएगा— 'नाच न जाने आँगन टेढा'। अर्थात् जब कोई विशेष अनुभव सामान्य जन-जीवन में सबके मन और बुद्धि पर अपना प्रभाव डालने में समर्थ हो जाता है तब उस अनुभव का कथन कहावत का रूप धारण कर लेता है।

कहावत लोक से संबंधित है इसलिए इसका नाम 'लोकोक्ति' भी है। 'लोकोक्ति' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है— लोक+उक्ति। जिसका अर्थ है— 'लोक' में प्रचलित उक्ति या कथन। ऐसा कथन जो व्यापक लोक अनुभव पर आधारित हो, 'लोकोक्ति' या 'कहावत' कहलाता है।

लोकोक्ति या कहावत मानव के अनुभवों की सुंदर अभिव्यक्ति है। यह वर्तमान पीढ़ी को पूर्वजों से उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त होती है। उसमें गागर में सागर अथवा बिंदु में सिंधु भरने का अद्भुत गुण होता है। इनके प्रयोग से भाषा का सौंदर्य पूर्ण, स्पष्ट तथा प्रभावशाली हो जाता है।

**प्रमुख कहावतें ( लोकोक्तियाँ ), उनके अर्थ एवं वाक्य-प्रयोग :**

1. अंत भले का भला - (अच्छे काम का परिणाम अच्छा होता है) - शैलेश कष्ट सहकर भी ईमानदारी से परिश्रम करता है इसी कारण वह आज ऊँचे पद पर पहुँच गया। इसलिए कहा गया है— अंत भले का भला।
2. अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा— (अयोग्य शासक के कारण कुप्रशासन)— उस कार्यालय का कोई कर्मचारी काम नहीं करता, क्योंकि वहाँ का अधिकारी ही भ्रष्ट है। चारों तरफ 'अंधेरी नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा' वाली बात है।
3. अंधी पीसे कुत्ता खाय— (काम करे कोई, फल कोई खाए)— पिताने दिन-रात कमाई करके धन इकट्ठा किया और उसका बेटा मौज उड़ाते-उड़ाते नहीं थकता। इसी को कहते हैं— अंधी पीसे कुत्ता खाय।
4. अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत— (हानि हो जाने पर पछताने से क्या लाभ)— पहले तो बहुत समझाने पर भी तुमने परिश्रम नहीं किया अब असफल हो गये तो आँसू बहाने लगे। क्या तुम नहीं जानते— अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।
5. मार के पीछे भूत भागे : (किसी की तरह से समस्या का हल करना)  
जब समस्या हद से बढ़ जाती है, तब सरल उपाय के बजाय कठिन या शिक्षात्मक रवैया अपनाना।
6. आँख का अंधा नाम नयनसुख— (गुणों के विरुद्ध नाम होना) - उसका नाम तो है वीरसिंह, मगर वह रात में चूहे से डर गया। उसे देखकर तो यही कहावत याद आती है— आँख का अंधा नाम नयनसुख।
7. आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास—(अच्छा काम छोड़कर महत्त्वहीन काम में लग जाना)— तुम्हें छात्रावास में इसलिए भेजा था कि तुम परीक्षा में अक्विल आ सको पर तुमने तो यहाँ रहकर भी बेकार की बातों में समय बरबाद करना शुरू कर दिया। इसे कहते हैं आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास।
8. एक पंथ दो काज— (एक साधन से दो काम होना)— मैं दिल्ली नौकरी का साक्षात्कार देने के लिए गया था। वहाँ लाल किला आदि भी देख आया। इसे कहते हैं— एक पंथ दो काज।

9. कंगाली में आटा गीला- (मुसीबत में और मुसीबत आना)- व्यापार हेतु कल बैंक से रुपया उधार लाया था वह भी चोरी हो गया। सच है कंगाली में आटा गीला।
10. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली- (दो व्यक्तियों की स्थितियों में अंतर)- उस साधारण गायिका की तुलना लता मंगेशकर से करना उचित नहीं- कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली।
11. ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया- (भाग्य की विचित्रता) - कुछ लोग दूसरों के लिए मंदिर तथा धर्मशालाएँ बनवाते हैं तथा कुछ अपने लिए एक समय का भोजन नहीं जुटा पाते। इसे कहते हैं ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया।
12. एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा- (एक दोष के साथ-साथ दूसरा दोष भी लग जाना) - वह शराबी तो था ही, जुआ भी खेलने लगा। इसे कहते हैं एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा।
13. काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती- (छल, कपट तथा चालाकी से एक ही बार काम निकलता है)- एक बार तो तुम मुझे धोखा देकर रुपए ले जा चुके हो, अब मैं तुम्हारी चिकनी-चुपड़ी बातों में नहीं आ सकता क्योंकि काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती।
14. खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे- (लज्जित या अपमानित होकर इधर-उधर रोष प्रकट करना) - जब पुलिस तुम्हारी पिटाई कर रही थी तब तो तुम कुछ भी न बोले, अब मुझ पर बरस रहे हो। किसी ने ठीक ही कहा है- खिसियानी बिल्ली खंभा नाचे।
15. घर की मुर्गी दाल बराबर - (आसानी से प्राप्त हुई वस्तु को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता)- उसका बड़ा भाई डॉक्टर है मगर वह बीमार हुआ तो शहर से दूसरा डॉक्टर बुलाया गया। इसे कहते हैं- घर की मुर्गी दाल बराबर।
16. चार दिनों की चाँदनी फिर अँधेरी रात- (थोड़े समय का सुख)- धन-दौलत, ऐश्वर्य तथा जवानी पर गर्व नहीं करना चाहिए। जानते नहीं संसार की रीति-चार दिनों की चाँदनी फिर अँधेरी रात।
17. छछूँदर के सिर में चमेली का तेल- (अयोग्य व्यक्ति को अच्छी चीज मिल जाना) - मनोज को न पढ़ाने का काम आता है न वह बी.एड्. है, पर आज वह शिक्षक है। ऐसे लोगों के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है- छछूँदर के सिर में चमेली का तेल।
18. जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय- (जिसका रक्षक भगवान है उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता)- कार गहरी खाई में गिर गई किंतु सभी यात्री सकुशल हैं। सच है जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय।
19. डूबते को तिनके का सहारा- (विपत्ति में जरा सी भी मदद किसी को उबार सकती है)- वह जीवन से निराश हो चुका है तुम थोड़ा-सा उत्साह दे दो शायद उबर जाए, डूबते को तिनके का सहारा काफी होता है।
20. नाम बड़े दर्शन छोटे- (प्रसिद्धि अधिक किंतु तत्त्व कुछ भी नहीं)- तुम्हारे विद्यालय की बहुत ही प्रशंसा सुन रखी थी, पर आकर देखा तो पढ़ाई का स्तर कुछ भी नहीं। इसीको कहते हैं- नाम बड़े दर्शन छोटे।
21. नाच न जाने आँगन टेढ़ा- (गुण न होने पर बहाना बनाना या दूसरों को दोष देना)- अरे भाई, तुम्हें गाना तो ठीक से आता नहीं और कभी तुम बता रहे हो हारमोनियम में। इसीको कहते हैं- नाच न जाने आँगन टेढ़ा।
22. पर उपदेश कुशल बहुतेरे- (दूसरों को उपदेश देने में सब चतुर होते हैं)- मंदिर में बैठकर उपदेश देते हो कि मदिरापान पाप कर्म है और घर में बैठकर स्वयं मदिरापान कर रहे हो। इसीको कहते हैं- पर उपदेश कुशल बहुतेरे।
23. बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी- (आनेवाला दुःख आकर ही रहता है) - तुम अपने अपराधों को कब तक छुपाते रहोगे? आखिर बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी।

24. मन चंगा तो कठौती में गंगा- (हृदय की पवित्रता हो तो घर में ही तीर्थयात्रा का लाभ मिल सकता है)- जिसका मन पवित्र है, उसे तीर्थयात्रा करने की आवश्यकता नहीं रह जाती क्योंकि किसीने सच ही कहा है- मन चंगा तो कठौती में गंगा।
25. होनहार बिरवान के होत चीकने पात- (योग्य व्यक्ति के लक्षण बचपन से ही प्रकट होने लगते हैं)- गोपालदास नीरजने पहली कविता दस वर्ष की उम्र में ही लिख दी थी। सच है- होनहार बिरवान के होत चीकने पात।
26. हाथ कंगन को आरसी क्या ?- (प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं)- तुम कहते हो कक्षा में पच्चीस छात्र हैं मैं कहता हूँ तीस छात्र हैं। चलकर कक्षा में गिन लेते हैं- हाथ कंगन को आरसी क्या ?



मैथिलीशरण गुप्त

( जन्म : सन् 1886 ई. : निधन : सन् 1964 ई. )

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म झाँसी जिले के चिरगाँव में हुआ था। बाल्यावस्था से ही कविता में इनकी रुचि थी। इनकी प्रारंभिक रचनाएँ हिन्दी की पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित हुईं। महावीरप्रसाद द्विवेदी के प्रोत्साहन ने इनके कवि-व्यक्तित्व का परिष्कार कर दिया। राम-भक्ति में सराबोर पारिवारिक संस्कारों ने इन्हें राम-काव्य लिखने के लिए प्रोत्साहित किया और तत्कालीन राष्ट्रीय परिस्थितियों से प्रभावित होकर इनकी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना और स्वदेश गौरव की गूँज सुनाई देने लगी। इसी कारण ये राष्ट्रकवि के संबोधन से प्रसिद्ध हुए। 'भारत-भारती', 'साकेत', 'पंचवटी', 'यशोधरा', 'विष्णुप्रिया' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। हिन्दी साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में अनुपम योगदान के कारण इन्हें 1954 में 'पद्म-भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया तथा राज्यसभा का सदस्य भी मनोनीत किया गया।

प्रस्तुत काव्य 'भारत-भारती' से लिया गया है जिसमें तीन खंड में देश का अतीत, वर्तमान और भविष्य चित्रित है। गुप्तजी ने भारत के अतीत का गौरवशाली चित्र प्रस्तुत किया है और इन्हीं विशेषताओं के आधार पर उसे विश्व के सिरमौर पद पर प्रतिष्ठापित किया है। इस काव्य में कवि ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति का गौरव गान किया है। इसके साथ-साथ आर्यों के महान जीवन आदर्शों का भी चित्रण किया है।

भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?  
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।  
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?  
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है ॥

हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,  
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?  
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है?  
विधि ने किया नर सृष्टि का पहले यही विस्तार है।

यह पुण्यभूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी आर्य हैं,  
विद्या, कला-कौशल सबके जो प्रथम आचार्य हैं।  
सन्तान उनकी आज यद्यपि, हम अधोगति में पड़े,  
पर चिह्न उनकी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े।

वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे;  
वे स्वार्थ-रत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।  
संसार के उपकार-हित जब जन्म लेते थे सभी,  
निश्चेष्ट होकर किस तरह वे बैठ सकते थे कभी?

### शब्दार्थ और टिप्पणी

गौरव सम्मान, प्रतिष्ठा भू-लोक संसार, दुनिया लीला स्थल महान पुरुषों की क्रीड़ा भूमि उत्कर्ष उन्नति, प्रगति सिरमौर श्रेष्ठ पुरातन प्राचीन भव-भूति संसार का वैभव विधि ब्रह्मा, सृष्टि की रचना करनेवाला देवता आचार्य शिक्षक, आदर्श आचार को आचरण में लानेवाला अधोगति अवनति, दयनीय दशा स्वार्थरत केवल अपना ही लाभ देखनेवाला मदिरा शराब, मद्य संसार दुनिया निश्चेष्ट निष्क्रिय, चेष्टारहित

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो वाक्य में उत्तर दीजिए :
  - (1) भारत को प्रकृति का लीला-स्थल क्यों कहा है?
  - (2) भारतवर्ष को वृद्ध क्यों कहा गया है?
  - (3) विधाता ने नर-सृष्टि का विस्तार कहाँ से किया है?
  - (4) आर्य किन-किन विषयों के आचार्य थे?
  - (5) आर्यों की संतान आज किस स्थिति में जी रही है?
  - (6) आर्यों की क्या विशेषताएँ रही हैं?
2. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :
  - (1) गुप्तजी ने भारत के गौरव को किस रूप में हमारे सामने रखा है?
  - (2) भारतवासियों के बारे में गुप्तजी क्या कहते हैं?
3. योग्य विकल्प द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :
  - (1) भारत को ..... कहा गया है ।

(क) ऋषिभूमि	(ख) तपोभूमि	(ग) वीरभूमि
-------------	-------------	-------------
  - (2) वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का ..... है।

(क) तिलक	(ख) आभूषण	(ग) सिरमौर
----------	-----------	------------
  - (3) विधि ने ..... का विस्तार यहीं से किया है।

(क) नरसृष्टि	(ख) जीवसृष्टि	(ग) पशुसृष्टि
--------------	---------------	---------------
  - (4) भारत के निवासी ..... हैं।

(क) मंगोल	(ख) आर्य	(ग) शक
-----------	----------	--------
  - (5) आर्यों की संतानों की आज ..... हो गई है।

(क) अधोगति	(ख) उन्नति	(ग) अवगति
------------	------------	-----------
4. 'क' विभाग को 'ख' विभाग के साथ उचित रूप में जोड़ते हुए पूरा वाक्य लिखिए :

'क'	'ख'
(1) वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का	(1) उत्कर्ष है।
(2) विद्या कला कौशल के	(2) प्रथम भंडार है।
(3) सम्पूर्ण देशों से अधिक भारत का	(3) सिरमौर है।
(4) भगवान की भव-भूति का	(4) दुनिया में कोई दूसरा नहीं है।
(5) भारत जैसा पुरातन देश	(5) आर्य हैं।
(6) भारत के निवासी	(6) प्रथम आचार्य आर्य हैं।

5. भाव स्पष्ट कीजिए :
- (1) वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है।
  - (2) भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है।
6. शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :  
अधोगति, वृद्ध, पुरातन, प्रथम, विस्तार, पुण्यभूमि, उत्कर्ष, उच्च
7. शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :  
हिमालय, गंगा, गिरि, भूमि, विश्व, मदिरा

#### योग्यता-विस्तार

#### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- भारत-गौरव से संबंधित कविताओं का संकलन कीजिए।
- 'भारत देश' पर एक निबंध लिखिए।



रामदरश मिश्रजी हिन्दी साहित्य के प्रथम कोटि के साहित्यकार हैं। आपने कहानियाँ, काव्य एवं उपन्यास आदि क्षेत्रों में अपनी कलम चलाई है। आपके बहुचर्चित उपन्यास हैं- जल टूटता हुआ और 'पानी के प्राचीर'। आपकी कविताओं के संग्रह हैं- 'बैरंग-बेनाम चिट्ठियाँ', 'पक गई है धूप', 'जुलूस कहाँ जा रहा है?', 'आम के पत्ते'। आपके कहानी संग्रह हैं- 'खाली घर', 'बसंत का एक दिन', 'इकसठ कहानियाँ', तथा 'मेरी प्रिय कहानियाँ'। 'आम के पत्ते' काव्य संग्रह को व्यास सम्मान से सम्मानित किया गया है। आपका हिन्दी अकादमी के शिखर सम्मान एवं उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान के भारतभारती पुरस्कार से प्रतिष्ठित किया गया है।

'एक यात्रा यह भी'- कहानी में रिक्शावाले से परिचित होने पर उसके जीवन की घटनाओं से नारी के प्रति उसका दृष्टिकोण देखकर तथा जीवन में उतारे गए कर्तव्यबोध से प्रेरणा प्राप्त होती है- स्त्रीसम्मान, स्त्री सुरक्षा एवं आत्मीयतापूर्ण संबंधों को खूबी से प्रस्तुत किया गया है जो अत्यंत प्रेरक है।

मैं बहुत यात्रा-भीरु हूँ। यात्रा पर निकलते समय डर बना होता है कि पता नहीं कैसे-कैसे लोगों से पाला पड़ेगा। सबसे बड़ी असहजता तो अनुभव होती है अंट-शंट किराया माँगनेवाले ऑटोवालों से। नए शहर में कैसे-कैसे लोग-मिलेंगे, यह चिंता भी बनी होती है।

तो इस बार एक डॉक्टर से मिलने के लिए ग्वालियर जाना पड़ गया। पत्नी साथ थी, इसलिए आश्वस्ति बनी हुई थी। स्टेशन पर उतरते ही ऑटोवाले पीछे पड़ गए। हम चुपचाप आगे बढ़ते रहे। एक नवयुवक ऑटोवाला साथ लग गया। हम कुछ बोले बिना आगे बढ़ते रहे कि उसकी आवाज आई, "बाबूजी, आप आखिर कहीं जाएँगे ही और कोई ऑटो करेंगे ही, तो फिर मेरा ऑटो क्यों नहीं?" उसकी जिद और आवाज में कुछ ऐसा आकर्षण महसूस हुआ कि मैंने स्वीकृति दे दी।

वह प्रेम-भरी बातें करता रहा और हमें डॉक्टर के यहाँ पहुँचा दिया। उसके द्वारा बताए वांछित पैसे देकर डॉक्टर के घर की कॉल-बेल बजाई। ज्ञात हुआ कि डॉक्टर ने क्लीनिक की जगह बदल दी है।

ऑटोवाला बिना हमारे कहे हमारा इंतजार कर रहा था। हमें नई जगह पर पहुँचा दिया। मैंने पूछा, "कितने पैसे दे दूँ?"

बाबूजी, "जो इच्छा हो दे दीजिए। वैसे डॉक्टर के घर से यहाँ तक का किराया तो अतिरिक्त हो गया न।"

उसने पूछा, "बाबूजी यहाँ से कहाँ जाएँगे?" मैंने होटल का नाम बता दिया और कहा, "भाई, तुम जाओ, यहाँ देर लग सकती है।"

वह कुछ बोला नहीं। हम डॉक्टर के पास चले गए। घंटा भर बाद निकले तो देखा, वह वहीं खड़ा था। अब हमें महसूस होने लगा था कि यह ऑटोवाला कुछ और है। वह हमारे भीतर घर करता गया। होटल पर छोड़कर उसने पूछा, "फिर कब आऊँ?"

"यानी"

"यानी आप शहर में घूमेंगे-फिरेंगे न? आपको जहाँ जाना होगा, ले चलूँगा। वैसे यहाँ कब तक हैं?"

"कल शताब्दी से लौटेंगे।"

"तो आपको घुमाने के लिए कब आ जाऊँ?"

"भाई, आज तो थके हैं। आराम करेंगे, कल घूमेंगे।"

"ठीक है बाबूजी, यह रहा मेरा मोबाइल नंबर, मुझे फोन करके बुला लीजिएगा।"

"अरे, तुमने अपना नाम तो बताया ही नहीं।"

"मोहन।"

"मोहन। अच्छा नाम है।"

दूसरे दिन घूमने का कार्य शुरू हो गया। वह बहुत प्रेम से एक के बाद एक स्थान दिखाता गया। मुझे



‘बाबूजी’ और पत्नी को ‘अम्माँ’ नाम से संबोधित करता रहा। घूम-घूमाकर होटल पर लौटे तो चाय पीने के लिए उसे भी कमरे में बुला लिया। वह बहुत संकोच के साथ आया। चाय-पान के साथ हमारी पारिवारिक वार्ता शुरू हो गई। पत्नी ने पूछा, “बेटे, तुम ग्वालियर के हो?”

“नहीं अम्माँ! मैं मूलतः आगरा का हूँ। यहाँ आना पड़ गया।”

हमें लगा कि वह यह कहते-कहते कुछ भर आया है। इसलिए चुप रहे, लेकिन वह स्वयं बोलने लगा, “आगरा में अपना घर है। माँ-बाप तो बचपन में ही गुज़र गए, बड़े भाई ने मेरी परवरिश की। भाई वकील हैं। मैं भी बी.ए. पास हूँ। कोई नौकरी खोज रहा था कि...”

एक चुप्पी सी छा गई। हमें लगा कि इसके साथ कोई अवांछित घटना घटी है। उसे छेड़ा नहीं, किंतु उसने फिर कहना शुरू किया, “मैं नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। एक दिन भटककर लौट रहा था कि रास्ते में एक परिचित लड़की मिल गई, बदहवास सी, घिघियाती हुई बोली, “मोहन, मुझे बचा लो।”

“क्यों, क्या हुआ?”

“मेरे माँ-बाप एक अधेड़ के हाथ मुझे बेच रहे हैं। मैं कुएँ में गिरकर जान दे दूँगी, किंतु उस खूसट अधेड़ के साथ नहीं जाऊँगी।”

“मैं बहुत असमंजस में पड़ गया। क्या करूँ? कर भी क्या सकता हूँ। मुझे लगा कि स्टेशन चलना चाहिए। वहाँ उसे ले गया और थानेदार से हकीकत बयान की। वे कुछ देर सोचते रहे कि क्या किया जा सकता है।”

थानेदार साहब बोले, “इसकी एफ.आई.आर. लिखकर इसके माँ-बाप को हवालात में बंद कर देता, लेकिन फ़िलहाल चिंता इस लड़की की है कि आखिर इसके लिए क्या किया जाए?”

एक छोटी सी चुप्पी के बाद वे एकाएक बोले, “तुम्हारी शादी हो गई है?” मैंने न में सिर हिलाया। तो बोले, “तुम इससे शादी क्यों नहीं कर लेते?”

मैं तो इस आकस्मिक प्रस्ताव से चकरा गया, किंतु कुछ पल बाद लगा कि इसमें बुराई क्या है। मैंने कहा, “सर, इससे तो पूछ लीजिए।”

थानेदार ने उससे पूछा तो उसने स्वीकृति-सूचक सिर हिला दिया। “लेकिन।”

“लेकिन क्या मोहन?”

“बाबूजी, लेकिन यह कि भाभी अपनी बहन से मेरी शादी कराना चाहती रहीं। बात तय हो चुकी थी।”

“फिर?”

“बाबूजी, मैंने सोचा, भाभीजी की बहन से तो कोई भी अच्छा आदमी शादी कर लेगा। वहाँ कोई संकट नहीं है, लेकिन इस लड़की की तो जिंदगी खतरे में है। लड़की सुंदर भी है, परिचित भी और सबसे अहम बात यह कि वह संकट में है। इससे विवाह करना प्रीतिकर भी होगा और मानवीय भी। लेकिन...”

“फिर लेकिन?”

“हाँ, अब समस्या यह कि विवाह एकदम तो न हो जाएगा। यदि लड़की घर गई तो फिर वही बेच दिए जाने का संकट। मैं साथ ले जाऊँ तो भैया-भाभी तो नाराज होंगे ही, इसके माँ-बाप मेरे ऊपर लड़की भगाने का केस कर देंगे। जब मैंने थानेदार के सामने यह समस्या रखी तो वे बोले, कुछ दिन के लिए इसे नारी-निकेतन में रखवा देता हूँ। लड़की से माँ-बाप के खिलाफ शिकायत लिखवाकर रख लेता हूँ।”

“पंद्रह दिन बाद उन्होंने मंदिर में उससे मेरी शादी करवा दी।”

मैंने कहा, “मोहन, ऐसे थानेदार कहाँ होते हैं। मुझे तो इस घटना पर विश्वास ही नहीं हो रहा है। लगता है, कथा सुन रहा हूँ।”

“आप सही कह रहे हैं बाबूजी, लेकिन यह थानेदार कवि भी है। कवि-सम्मेलनों में कविताएँ पढ़ता है और इसकी कविताएँ मानवीय संवेदना से भरी होती हैं।”

“हाँ, तब ठीक है। भाई, हर क्षेत्र में कोई-न-कोई मसीहा दिखाई पड़ ही जाता है। हाँ, तब।”

“तब यह कि मेरे भाई-भाभी मुझसे खफा हो गए और हमें घर से निकाल दिया। एक तो मैंने उनकी साली

से शादी नहीं की, दूसरे जिस लड़की से की, वह किसी और जाति की है।”

“तो तुम लोग ग्वालियर आ गए।”

“हाँ, बाबूजी, आगरा में हमारा निबाह होना कठिन था। पराए शहर में भले ही कोई अपनापन न हो, किंतु यह परायापन उस अपनेपन से अच्छा है न, जो दिन-रात अप्रीतिकर व्यवहार बनकर तन-मन को उद्विग्न करता रहे।”

“हाँ, सही कह रहे हो।”

“तो यहाँ कोई नौकरी तो रखी नहीं थी। बस ऑटो का दामन थाम लिया और उसी के सहारे चल रहा हूँ।”

“वास्तव में तुम बहुत बड़े हो मोहन। बड़े-बड़े लोग तो नारी-हित में बड़े-बड़े लैक्चर देते हैं, लेख-कविताएँ लिखते रहते हैं, किंतु अपने व्यवहार में नहीं उतारते। लेकिन तुमने तो बहुत सहज भाव से एक लड़की को दुर्दशाग्रस्त होने से बचा लिया और अपने जीवन के साथ उसे सम्मानपूर्वक लगा लिया।”

“बाबूजी, इस कार्य से मुझे भी बहुत संतोष मिला। मैंने तो एक बार उसका उद्धार किया, किंतु वह तो प्रायः मुझे संकटों से उबारती रहती है।”

मोहन की यह कहानी हम पर छा गई और वह हमारे मन में कितना बड़ा हो गया।

गाड़ी का समय हो रहा था। मोहन हमें लेकर स्टेशन आ गया। उसे मैं पाँच सौ रुपए का नोट देने लगा। वह बोला, “रहने दीजिए बाबूजी।”

“अरे यह तुम्हारा पारिश्रमिक है, कोई दान थोड़े ही दे रहा हूँ।”

“बाबूजी, मैंने माँ-बाप का प्यार नहीं पाया। कल से ही लग रहा है कि मुझे माँ-बाप मिल गए हैं। इस सुख के आगे पैसे का तो कुछ भी मोल नहीं है। पैसा तो और लोगों से कमाँ ही लेता हूँ।”

“बेटे, लेकिन मेरी भी तो सोचो। मैं बेटे का शोषण कैसे कर सकता हूँ?”

“लेकिन यह तो बहुत है। इतना लूँगा तो आपका शोषण हो जाएगा।” यह कहकर वह पाँच सौ का नोट लेकर तीन सौ वापस करने लगा।

बोला, “मुझे इतना पराया न कीजिए, बाबूजी। हाँ, जब भी ग्वालियर आइएगा, मुझे बुला लीजिएगा। मेरा फोन नंबर तो आपके पास है ही।”

“लेकिन मेरी एक शर्त है।”

“वह क्या बाबूजी?”

“ये पाँच सौ रुपए चुपचाप तुम्हें लेने ही पड़ेंगे।”

उसने तीन सौ रुपए अपनी जेब में रख लिये। जैसे कह रहा हो ‘यह कैसी शर्त आपने रख दी बाबूजी।’ कुछ क्षण बाद बोला, “बाबूजी, आपका फोन नंबर तो मेरे फोन पर आ ही गया है। कभी-कभी फोन करता रहूँ क्या?”

“हाँ-हाँ भाई, शौक से। मुझे अच्छा लगेगा।”

“लेकिन आपका नाम तो मैंने पूछा ही नहीं।”

“मैं हूँ सत्यकेतु और पत्नी हैं कामना।”

और जब हम स्टेशन के अंदर जाने लगे तब वह आँखों में न जाने कितना अपनापन लिये हमें निहारता रहा।

### शब्दार्थ और टिप्पणी

यात्रा-भीरु यात्रा से डरनेवाला अंट-शंट मरजी में आए ऐसा, निरंकुश आश्वस्ति आशवासन, तसल्ली वांछित इच्छा अनुसार इन्तजार प्रतीक्षा वाट राह अतिरिक्त उपरांत छेड़ना उकसाना खूसट अप्रिय अथेड़ आधेड़ उम्रका प्रौढ हवालात जेल अहम बात मुख्य बात प्रीतिकर मनभावन संवेदना पीड़ा मसीहा देवदूत उबारना बचाना, से बाहर निकालना

### मुहावरे

पाला पड़ना सम्बन्ध जुड़ना चुप्पी-सी छा जाना शांति छा जाना, असमंजस में पड़ जाना द्विधा में पड़ना, क्या करूँ क्या न करूँ यह समझ में न आना, निबाह होना घर खर्च निकलाना उद्विग्न करना पीड़ा देना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :
  - (1) लेखक को ग्वालियर क्यों जाना पड़ा?
  - (2) लेखक के न कहने पर भी ऑटोवाला उनका इन्तजार क्यों करने लगा?
  - (3) लड़कीने मोहन से घिघियाते हुए क्या कहा?
  - (4) मोहन लड़की से विवाह करने क्यों तैयार हो गया?
  - (5) थानेदार की क्या विशेषता थी?
  - (6) मोहनने ज्यादा पैसै लेने से क्यों इन्कार किया?
2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :
  - (1) लेखकने ऑटोवाले की बात को स्वीकृति क्यों दी?
  - (2) मोहन की पारिवारिक स्थिति क्या थी?
  - (3) लड़की किस बात के लिए तैयार नहीं थी? क्यों?
  - (4) लेखक मोहन को बहुत बड़ा क्यों बताते हैं?
3. विस्तार से उत्तर दीजिए :
  - (1) लेखक यात्रा से क्यों डरते थे?
  - (2) मोहन का चरित्र चित्रण कीजिए।
  - (3) लेखक के साथ मोहन ने अपनापन कैसा जताया?
4. निम्नलिखित विधान किसने किससे और क्यों कहा?
  - (1) “इससे विवाह करना प्रीतिकर भी होगा और मानवीय भी।”
  - (2) भाई हर क्षेत्र में कोई न कोई मसीहा दिखाई पड़ ही जाता है।
  - (3) मुझे इतना पराया न कीजिए, बाबूजी?
5. सही शब्द चुनकर योग्य उत्तर दीजिए।
  - (1) ऑटोवाले ने लेखक को नई जगह पर पहुँचा दिया, क्योंकि...
    - (अ) लेखक को दूसरी जगह घूमने जाना था।
    - (ब) वहाँ डॉक्टर हाजिर नहीं था।
    - (क) डॉक्टर ने क्लीनिक की जगह बदल दी थी।
  - (2) बात करते हुए मोहन रुक गया और चुप्पी सी छा गई, क्योंकि...
    - (अ) कोई अवांछित घटना घटी थी।
    - (ब) नौकरी की तलाश में उसे आगरा से भटकते हुए ग्वालियर आना पड़ा।
    - (क) उसे एक लड़की मिल गई।
  - (3) लेखक को मोहन की बात कहानी-कथा सुन रहे ही ऐसी लगी, क्योंकि...
    - (अ) लेखक सोचने लगे कि कोई थानेदार ऐसा सहद व्यवहार कर सकता है?
    - (ब) लेखक को मोहन की बात पर विश्वास नहीं आ रहा था।
    - (क) मोहन कोई कहानी सुना रहा था।

- (4) मोहनने ज्यादा पैसे लेने से इन्कार कर दिया, क्योंकि...
- (अ) मोहन चाहता था कि उसे इतना पराया न समजा जाय।
- (ब) वह परिश्रम से ज्यादा पैसे लेने के पक्ष में नहीं था।
- (क) वह चाहता था कि लेखक दूबारा ग्वालियर आए तो उसके ही ऑटों का उपयोग करें।

6. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

- (1) पाला पड़ना (2) असमंजस में पड़ना (3) दामन थाम लेना

7. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द दीजिए :

वांछित, परिचित, समस्या, मसीहा, प्रीति, संतोष, शोषण

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- मैं ऑटोवाला होता तो.... विषय पर छात्र अपने विचार व्यक्त करें।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- नारी सशक्तिकरण-छात्रों से एवं नारी सुरक्षा के विषय में साहित्य सामग्री का संग्रह करवाइए।
- किसी व्यक्ति का साक्षात्कार करने के लिए प्रश्नसूची तैयार करें।
- छात्रों के द्वारा किसी व्यक्ति का परिचय लिखवाइए।
- किसी घटना का रिपोर्ट तैयार करवाइए।



महादेवी वर्मा

(जन्म : सन् 1907 ई. : निधन : सन् 1583 ई.)

हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा अर्थात् 'मैं नीर भरी दुःख की बदरी' और तुम को नीव में ढूँढा, तुममें ढूँढी पीड़ा।' कहनेवाली सहृदय, भावुक, अत्यंत संवेदनशील और समग्र नीव सृष्टि पर अनुकंपावर्षण करनेवाली छायावादी युग की अप्रतिम रचनाकार। छायावादी युग के चार स्तंभ गिने जाते हैं- प्रसाद, पंत, महादेवी और निराला। इनमें प्रसाद के साथ सदैव इतिहास बोध रहा तो पंत प्रकृति के कोमल कांत पदावली के रचनाकार के रूप में पहचाने गये। निराला अपनी ओजस्विता और रौद्रता के लिए तो महादेवी धीर गंभीर दर्द की दास्तान सुनानेवाली कवयित्री के रूप में पहचानी गयी।

फरुखाबाद में (उत्तर प्रदेश) जन्मी-महादेवी सही अर्थ में एक विदूषी और प्रगल्भा नारी के रूप में समग्र जीवन जी गयी। मुख्यतया महादेवी कवयित्री ही-रही किंतु 'स्मृति की रेखाएँ' जैसी रचना के द्वारा उत्तम गद्यकार-रेखाचित्रकार के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल रही है। प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या और कुलगुरु के पद पर रह कर शिक्षा के क्षेत्र में आपने अनुपम योगदान दिया है। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, अतीत के चलचित्र और स्मृति की रेखाएँ आदि आप की बहुचर्चित एवं लोकप्रिय रचनाएँ हैं।

यहाँ 'रानी' नामक एक घोड़ी उनके दो साथी 'निक्की' और 'रोजी' के साथ आयी है- सम्मिलित है जिसका बड़ा मार्मिक और भावुकतापूर्ण शैली में चित्र अंकित किया है। ऐसा लगता है यह नेवला, यह कुत्ती और यह घोड़ी हमारे सामने ही हैं। पशु-पंछी और निर्दोष भोले ऐसे प्राणियों के प्रति महादेवीजी का स्नेह और प्रेम छलकता नजर आता है।

रियासत होने के कारण इंदौर में शानदार घोड़ों और सवारों का आधिक्य था। इसके अतिरिक्त हम अंग्रेजों के बच्चों को छोटे टट्टूओं या सफेद गधों (जिसकी जाति के संबंध में रामा ने हमारा ज्ञानवर्धन किया था।) पर घूमते देखते थे। रामा की कहानियों में तो राजा, अपराधियों को गधे पर चढ़ाकर देश निकाला देता था। इन्हें गधों पर बैठकर प्रसन्नता से घूमते देखकर विश्वास करना कठिन था कि इन्हें दंड मिला है। रामा के पास हमारी जिज्ञासा का समाधान था। इन्हें विलायत में गधे पर बैठने का दंड देकर भारत भेजा गया है, क्योंकि वहाँ यह वाहन नहीं है।

एक दिन हम तीनों ने बाबूजी को मौखिक स्मृतिपत्र (मेमारंडम) दिया कि हमारे पास छोटा घोड़ा न रहना अन्याय की बात है। यदि अन्य बच्चों को घोड़े पर बैठने का अधिकार है तो हमें भी वह अधिकार मिलना चाहिए।

बाबूजी ने हँसते हुए पूछा- सफेद टट्टू पर बैठोगे? 'तुम कहो, तुम कहो' के साथ टेलमठाल के उपरांत मैंने अगुआ होकर गंभीर मुद्रा में उत्तर दिया- सफेद टट्टू तो गधा होता है, जिस पर बैठाकर सजा दी जाती है।

पता नहीं हमारे ज्ञान के वज्रस्त्र स्रोत रामा को बाबूजी ने डाँटा या नहीं, परंतु कुछ दिन बाद हमने देखा कि एक छोटा-सा चाकलेटी रंग का टट्टू आँगन के पश्चिम वाले बरामदे में बाँधा गया है। बरामदा तो घोड़े बाँधने के लिए बनाया नहीं गया था, अतः बाहर से टट्टू को लाने के लिए दीवाल में एक नया दरवाजा लगाया गया और उसकी मालिश करने तथा खाने, पीने, घूमने आदि की उसकी देखरेख के लिए छुट्टन नाम का साईस रखा गया।

अब तो हम उस छोटे टट्टू से बहुत प्रभावित और आतंकित हुए। हमारे तथा हमारे अन्य साथी जीवों के लिए न मकान में कोई परिवर्तन हुआ न कोई विशेष नौकर रखा गया। रामा को तो नौकर कहा नहीं जा सकता, क्योंकि वह तो डाँटने-फटकारने के अतिरिक्त हमारे कान भी खींचता था और हमारी खिड़की तक दरवाजे में परिवर्तित नहीं हो सकी, जिससे हम रोजी और निक्की के साथ कूदने के कष्ट से मुक्त हो सकते। बाबूजी से यह सुनकर भी कि वह टट्टू हमारी सवारी के लिए आया है। हम सब चार-पाँच दिन उससे रुष्ट और अप्रसन्न ही घूमते रहे, परंतु अंत में उसने हमारी मित्रता प्राप्त ही कर ली। रामा से उसका नाम पूछने पर ज्ञात हुआ कि उसे ताजरानी कहकर पुकारा जाता है। ताजमहल का चित्र हमने देखा था और रामा और कल्लू को माँ की सभी कहानियों में रानी के सुख-दुःख की गाथा सुनते-सुनते हम उसके प्रति बड़े सदय हो गए थे। ताजमहल जैसे भवन की रानी होने पर भी यह वहाँ से कहानी की रानी की तरह निकाल दी गई है, यह कल्पना करते ही हमारी सारी ईर्ष्या और सारा रोष करुणा से पिघल गया और हम उसे और अधिक आराम देने के उपाय सोचने लगे।

वह इतनी सुंदर थी कि अब तक उसकी छवि आँखों में वसी जैसी है। हल्का चाकलेटी चमकदार रंग जिस पर दृष्टि फिसल जाती थी। खड़े छोटे कानों के बीच में माथे पर झूलता अयाल का गुच्छा, बड़ी, काली-स्वच्छ

और पारदर्शी जैसी आँखें, लाल नथूने जिन्हें फुला-फुलाकर चारों ओर की गंध लेती रहती। उजले दाँत और लाल जीभ की झलक देते हुए गुलाबी ओठोंवाला लंबा मुँह जो लोहा चबाते रहने पर भी क्षत-विक्षत नहीं होता था। ऊँचाई के अनुपात से पीठ की चौड़ाई अधिक है, सुडौल, मजबूत पैर और सघन पूँछ जो मक्खियाँ उड़ाने के क्रम में मोरछल के समान उठती-गिरती रहती थी। उस समय यह सब समझने की बुद्धि नहीं थी, परंतु इतने दीर्घ काल के उपरांत भी स्मृतिपट पर वे रेखाएँ ऐसे उभर आती हैं जैसे किसी अदृश्य स्याही से लिखे अक्षर अग्नि के ताप से प्रत्यक्ष होने लगते हैं।

हम बार-बार सोचते हैं कि वह कुछ और छोटी क्यों न हुई। होती तो हम रोजी और निक्की के समान उसे भी अपने कमरे में रख लेते।

रानी को अपने कमरे में ले जाना संभव नहीं था, अतः अस्तबल बना हुआ बरामदा ही हमारी अराजकता का कार्यालय बना।

बरामदा घोड़े बाँधने के लिए तो बना नहीं था अतः उसकी दीवार में एक खुली आल्मारी और कई आतेताक थे। उन्हीं में हमारा स्वेच्छया विस्थापित और शरणार्थी खिलौनों का परिवार स्थापित होने लगा।

रानी की गर्दन में झूल-झूलकर, उसके कान और अयाल में फूल खोंस-खोंसकर और उसको बिस्कुट, मिठाई आदि खिला-खिलाकर थोड़े ही दिनों में हमने उससे ऐसी मैत्री कर ली कि हमें न देखने पर वह अस्थिर होकर पैर पटकने और हिनहिनाने लगती।

फिर हमारी घुड़सवारी का कार्यक्रम आरंभ हुआ। मेरे और बहिन के लिए सामान्य, छोटी पर सुंदर जीन खरीदी गई और भाई के लिए चमड़े के घेरेवाली ऐसी जीन बनवाई गई जिससे संतुलन खोने पर भी गिरने का भय नहीं था।

बाहर के चबूतरे पर खड़े होकर हम बारी-बारी से रानी पर आरूढ़ होते और छुट्टन साथ दौड़ता हुआ हमें घुमाता। सबेरे भाई-बहन घूमते और स्कूल से लौटने पर तीसरे पहर या संध्या समय मेरे साथ यह कार्यक्रम दोहराया जाता। परंतु ऐसी सवारी से हमारी विद्रोही प्रकृति कैसे संतुष्ट हो सकती थी? अस्तबल में रानी की गर्दन में झूलकर तथा स्टूल के सहारे उसकी पीठ पर चढ़कर भी हमें संतोष न होता था।

अंत में एक छुट्टी के दिन दोपहर में सब के सो जाने पर हम रानी को खोलकर बाहर ले आए और चबूतरे पर खड़े होकर उसकी नंगी पीठ पर सवारी करके बारी-बारी से अपनी अधूरी शिक्षा की पूरी परीक्षा लेने लगे।

यह स्वाभाविक ही था कि ताजरानी हमारी अराजक प्रवृत्तियों से प्रभावित हो जाती। वास्तव में बालकों में चेतना के विभिन्न स्तरों का बोध न होकर सामान्य चेतना का ही बोध रहता है। अतः उनके लिए पशु, पक्षी, वनस्पति सब एक परिवार के हो जाते हैं।

निक्की रानी की पूँछ से झूलने लगता था, रोजी इच्छानुसार उसकी गर्दन पर उछलकर चढ़ती और नीचे कूदती थी और हम सब उसकी पीठ पर ऐसे गर्व से बैठते थे मानो मयूर सिंहासन पर आसीन हों।

रानी हम सब की शक्ति और दुर्बलता जानती थी। उसकी नंगी पीठ पर अयाल पकड़कर बैठनेवालों को वह दुल्की चाल से इधर-उधर घुमाकर संतुष्ट कर देती थी परंतु एक बार मेरे बैठ जाने पर भाई ने अपने हाथ की पतली संटी उसके पैरों में मार दी। चोट लगने की तो संभावना ही नहीं थी, परंतु इससे न जाने उसका स्वाभिमान आहत हो गया या कोई दुःखद स्मृति उभर आई। वह ऐसे वेग से भागी मानो सड़क, पेड़, नदी, नाले सब उसे पकड़-बाँध रखने का संकल्प किए हों।

कुछ दूर मैंने अपने आपको उस उड़नखटोले पर सँभाला, परंतु गिरना तो निश्चित था। मेरे गिरते ही रानी मानो अतीत से वर्तमान में लौट आई और इस प्रकार निश्चल खड़ी रह गई जैसे पश्चाताप की प्रस्तर प्रतिमा हो।

साथियों की चीख-पुकार से सब दौड़े और फिर बहुत दिनों तक मुझे बिछाने पर पड़ा रहना पड़ा। स्वस्थ होकर रानी के पास जाने पर वह ऐसी करुण पश्चातापभरी दृष्टि से मुझे देखकर हिनहिनाने लगी कि मेरे आँसू आ गए।

एक बार भाई के जन्मदिन पर नानी ने उसके लिए सोने के कड़े भेजे। सामान्यतः हम कोई भी नया कपड़ा

या आभूषण पहनकर रानी को दिखाने अवश्य जाते थे। सुंदर छोटे-छोटे शेरमुँहवाले कड़े पहनकर भाई भी रानी को दिखाने गया और न जाने किन प्रेरणा से वह दोनों कड़े उतारकर रानी के खड़े सतर्क कानों में वलय की तरह पहना आया।

फिर हम सब खेल में कड़ों की बात भूल गए। संध्या समय भाई के कड़े रहित हाथ देखकर जब माँ ने पूछ-ताँछ की तब खोज आरंभ हुई पर कहीं भी कड़ों का पता नहीं चला।

रानी अपने कान को खुरों से खोदती और हिनहिनाती रही। अंत में बाबूजी का ध्यान उसकी ओर गया और उन्होंने मिट्टी हटाने का आदेश दिया। किसी ने कुछ गहरा गुड़वा खोदकर दोनों कड़े गाड़ दिए थे। दंड तो किसी को नहीं मिला, परंतु रानी सारे घर के हृदय में स्थान पा गई।

एक घटना अपनी विचित्रता में स्मरणीय है। एक सबेरे उठने पर हमने रानी के पास एक छोटे-से घोड़े के बच्चे को देखा। 'यह कहाँ था?' कह-कहकर हमने रामा को इतना थका दिया कि उसने निरुपाय घोषणा की कि वह नया जीव रानी के पेट में दाना-चारा खाकर सो रहा था। भाई ने उत्साह से पूछा 'और भी है' और रामा ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

अब तो हम विस्मित भी हुए और क्रोधित भी। ये छोटे जीव कोई काम-धाम नहीं करते और हमको पीठ पर बैठाकर दौड़नेवाली रानी का दाना-चारा स्वयं खाकर उसके पेट में लेते रहते हैं।

भाई ने कहा-रानी का पेट चीरकर हम कम-से-कम एक और बच्चा घोड़ा निकाल लें- तब बच्चे घोड़ों पर वे छोटे बहिन-भाई बैठेंगे और रानी मेरी सेवा में रहेगी। प्रस्ताव मुझे भी उचित जान पड़ा पर जब एक दोपहर को वह कहीं से शाक काटने का चाकू ले आया तब मेरे साहस ने जवाब दे दिया। एक और भी समस्या की ओर हमारा ध्यान गया। आखिर हम रानी का पेट सिएँगे कैसे? माँ की महीन-सी सुई से तो सीना संभव नहीं था। टाट सीने का बड़ा सूजा रामा अपनी कोठरी में रखता था जहाँ हमारी पहुँच नहीं थी। कुछ दिनों के उपरांत जब रानी का अश्व शिशु कुछ बड़ा होकर दौड़ने लगा तब हमें न अपना क्रोध स्मरण रहा और न प्रस्ताव।

### शब्दार्थ और टिप्पणी

बदरी बादल अनुकंपा दया, भावना प्रकट करना रियासत राज्य ठेलमठाल चलना विलायत ब्रिटैन विस्थापित स्थान से छुटा हुआ अस्तबल घोड़ों का आवास अयाल लगाम, बागड़ौर, संटी सोटी बरामदा बरंडा

### मुहावरे

आँखों में बसना हृदय में समाना, जवाब दे देना अंत हो जाना, नष्ट होना

### स्वाध्याय

- निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :
  - 'रानी' कौन-सी साहित्यिक विद्या है?
  - लेखिका ने रानी के अलावा और कौन-कौन से चरित्र लिए हैं?
  - लड़कों ने स्मृतिपत्र में किस अन्याय की बात लिखी थी?
- निम्नलिखित प्रश्नों के तीन-चार वाक्यों में उत्तर दीजिए :
  - रानी के साथ मित्रता स्थापित करने के लिए कैसे प्रयास किये गये?
  - रानी की पीठ पर सवारी करने पर कौन-सी दुर्घटना घटित हुई? क्यों?

3. शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

- (1) ज्ञान में वृद्धि करनेवाला
- (2) बच्चे सरलता से कर सकें ऐसी प्रवृत्तियाँ
- (3) घोड़े पर बैठकर की जानेवाली सवारी

4. विरुद्धार्थी शब्द दीजिए :

- (1) अपराधी (2) प्रसन्नता (3) दंड

#### योग्यता-विस्तार

#### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रेखाचित्र 'रानी' में प्रस्तुत पालतु प्राणियों और उनकी विशेषताओं के बारे में जानकारी दें।

#### शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'पशु और अबोल प्राणियों-पशुओं के साथ सद्भाव और प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।' विषय पर कक्षा में परिचर्चा का आयोजन करें।
- महादेवी वर्मा के अन्य रेखाचित्र, संस्मरण 'गूँगिया', 'ठकुरीबाबा' आदि के बारे में पात्रों को जानकारी दें।





## वर्तनी

वर्तनी को उर्दू में 'हिज्जे' और अंग्रेजी में 'Spelling' कहा जाता है। जिस शब्द में जितने वर्ण या अक्षर जिस अनुक्रम में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें उसी क्रम में लिखना ही 'वर्तनी' है।

हम वर्तनी-संबंधी कुछ जानकारियों का अभ्यास करेंगे। उन्हें लिखते एवं बोलते समय मनन करने से वर्तनी-दोष निश्चित रूप से दूर हो जाएगा-

### वर्णों की लिखावट में सावधानी :

- 'ख' को 'रव' की तरह न लिखें इससे 'ख', 'रव' बनकर वर्ण से शब्द बन जाएगा और अर्थ हो जाएगा-दाना। जैसे रवादार (दानेदार)
- 'घ' पर पूरी शिरोरेखा होती है जबकि 'त' वर्गीय व्यंजन 'ध' का पूर्व का गोलवाला शिरा मुड़ा होता है और मुड़े भाग तथा शिरोरेखा के बीच रिक्त स्थान रहता है।
- इसी तरह थ, भ, य, श, क्ष और श्र की लिखावट में ऊपर से मुड़े भाग के ऊपर शिरोरेखा नहीं होती। भ के ऊपर पूरी तरह से शिरोरेखा देने से 'म' का भ्रम पैदा हो सकता है।
- निम्नांकित संयुक्ताक्षर एवं इन संयुक्ताक्षरों का जिन शब्दों में उपयोग हुआ है, ऐसे शब्दों का अध्ययन कीजिए।
  - द् + व = द्व - विद्वान, द्वार
  - द् + द = द्द - तद्द, राजगद्दी
  - द् + म = द्म - पद्म, छद्म
  - द् + य = द्य - पद्य, विद्या
  - द् + ध = द्ध - युद्ध, प्रसिद्ध
  - द् + घ = द्घ - उद्घाटन, उपोद्घात
  - ह् + य = ह्य - बाह्य, सह्य
  - ह् + ऋ = ह्र - हृदय, अपहृत
  - श् + र = श्र - श्रवण, श्रेष्ठ
  - ट् + र = ट्र - राष्ट्र, ट्रक
- संयुक्ताक्षरों का प्रयोग हुआ हो, ऐसे अन्य शब्द अपनी किताब

### अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु :

पूर्ण अनुस्वार	अर्ध-अनुस्वार ( चन्द्रबिन्दु )
अंत	आँत
गंध	गाँव
तंतु	ताँत
दंभ	दाँत
पंच	पाँच
हंस	हाँसी

- ऊपर दिये गए उदाहरणों में अंत, दंभ, पंच इत्यादि में जिस चिह्न (.) का प्रयोग किया गया है उसे 'अनुस्वार' कहते हैं; और आँत, दाँत, पाँच इत्यादि में जिस चिह्न (ँ) का प्रयोग हुआ है, उसे अर्ध-अनुस्वार या चन्द्रबिन्दु कहते हैं।

पूर्ण अनुस्वार ड़, ज़, ण, न् और म इन अनुनासिक पंचम वर्णों की सहायता से भी लिखा जाता है। इनमें से प्रत्येक अपने वर्ग के अक्षरों के साथ संयुक्त वर्ण के रूप में प्रयुक्त होता है:-

क	ख	ग	ध	....	के साथ	....	ड
च	छ	ज	झ	....	के साथ	....	ज
ट	ठ	ड	ढ	....	के साथ	....	ण
त	थ	द	ध	....	के साथ	....	न
प	फ	ब	भ	....	के साथ	....	म

पूर्ण अनुस्वार दो तरह से लिखा जाता है। उसके लिखने की दोनों रीतें निम्नांकित हैं :-

वर्ग के अंतिम अनुनासिक वर्ग के साथ	अनुस्वार के चिह्न के साथ
शङ्कर, शङ्ख - ड़	शंकर, शंख
अञ्जन, चञ्चल - ज़	अंजन, चंचल
घण्टा, डण्डा - ण्	घंटा, डंडा
चन्दन, सन्त - न्	चंदन, संत

अर्धानुस्वार का उच्चारण पूरे अनुस्वार की अपेक्षा कोमल और हल्का होता है। इसे पूरे अनुस्वार की भाँति अनुनासिक वर्ण के साथ नहीं लिखा जा सकता। उदाहरण के लिए 'अंत' को हम 'अन्त' लिख सकते हैं, पर 'आँख' को 'आन्ख' नहीं लिख सकते। अतएव जहाँ अनुस्वार का उच्चारण कोमल हो और जिसे ड़, ज़, ण् न् और म् आदि अनुनासिक संयुक्त वर्णों से न लिखा जा सके वहाँ अर्धानुस्वार समझना चाहिए और उसे चन्द्रबिन्दु के साथ लिखना चाहिए।

शिरोरेखा के ऊपर लिखी जानेवाली मात्राओं के ऊपर सामान्यतया 'अनुस्वार' तथा नीचे लिखी जानेवाली मात्राओं के ऊपर चन्द्रबिन्दु का प्रयोग होता है। जैसे-

शिरोरेखा के ऊपर	शिरोरेखा के नीचे
मैं, क्यों, हैं, उन्हें, उन्होंने, इन्हें, इन्होंने, किन्हें, किन्होंने, जिन्हें, जिन्होंने	कहाँ, आँगन, अँगना, जहाँ, गाँधी, आँधी, आँख, जाँघ, माँद, नाँद, बाँध, काँख

**'श', 'ष' एवं 'स' का प्रयोग :**

- यदि किसी शब्द में 'स' हो और उसके पहले 'अ' या 'आ' हो तो 'स' नहीं बदलता।  
जैसे - दस ('स' के पहले 'अ')  
पास, घास, विश्वास, इतिहास ('स' के पहले 'आ')
- यदि अ/आ से भिन्न स्वर रहे तो 'ष' का प्रयोग होता है।  
जैसे - प्रेषित, आकर्षित, विषम, भूषण, आकर्षण, हर्षित, धनुष आदि।
- 'ह' वर्ग के पूर्व 'ष' का प्रयोग होता है।  
जैसे - क्लिष्ट, विशिष्ट, नष्ट, कष्ट, भ्रष्ट, षडानन, षोडश आदि।
- 'ऋ' के बाद 'ष' का प्रयोग होता है।  
जैसे - ऋषि, कृषि, वृष्टि, कृषक, तृषित, ऋषभ आदि।

- आगे 'च' वर्ग रहने पर 'श' का प्रयोग होता है।  
जैसे - निश्चित, निश्चय, निश्छल आदि।
- यदि 'श' एवं 'ष' दोनों का साथ प्रयोग हो तो पहले 'श' फिर 'ष' का प्रयोग होगा। यदि 'स' भी रहे तो क्रमशः स, श और ष होगा।  
जैसे - विशेष, शेष, शोषण, शीर्षक, विश्लेषण, संश्लेषण आदि।

**क्र, ख, ग, ज और फ़ का प्रयोग :**

क्रतल	खबर	गरीब	जमाना	फ़कीर
क्रदम	खर्च	ग़लत	ज़मीन	फ़र्ज
क्रद्र	खानदान	गाफिल	ज़हर	फ़रमान
क्रलम	खुदा	गुस्सा	ज़िन्दगी	फ़रेब
क्राबिल	खुश	ग़ैर	नमाज़	फ़ुरसत

ऊपर दिये गए उदाहरणों को ध्यान से देखें। इनमें क्र, ख, ग, ज और फ़ के बगल में नुक्ता या बिन्दी लगाई गई है। इन शब्दों के बगल में बिन्दी केवल इनके उच्चारण को स्पष्ट करने के लिए लगाई जाती है। अरबी-फ़ारसी भाषा के इन शब्दों में निर्देशित वर्णों का उच्चारण कोमल और हल्का होता है।

**ड़ और ढ़ का प्रयोग:**

(1)	डमरु	अकड़	(2)	ढंग	गढ़
	डर	बड़ाई		ढब	पढ़ाई
	डाक	रणछोड़		ढेरी	बाढ़
	डाली	झाड़		ढोल	सीढ़ी

ऊपर दिये गए नं. (1) और (2) के शब्दों को ध्यान से पढ़िए। नुक्तावाले इन 'ड़' और 'ढ़' के संबंध में यह बात याद रखनेलायक है कि दोनों अक्षर कभी शब्द के शुरु में और अनुस्वार के बाद नहीं आते।

**ह्रस्व-दीर्घ की भूलों के उदाहरण:**

(1) 'इ' की जगह 'ई' की भूलें:

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ईस	इस	फीर	फिर
कीस	किस	रीहा	रिहा
जीस	जिस	लीया	लिया
चाहीए	चाहिए	बहीन	बहिन
नीकट	निकट	वीकट	विकट
कोशीश	कोशिश	विदीत	विदित
गीरना	गिरना	मीलना	मिलना
कठीनाई	कठिनाई	विकसीत	विकसित

(2) 'ई' की जगह 'इ' की भूलें:

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
चिज़	चीज़	सति	सती
नारि	नारी	स्त्रि	स्त्री
निंद	नींद	महिना	महीना

निचे	नीचे	यक्रिन	यक्रीन
पिछे	पीछे	विनति	विनती
क्रिमत	क्रीमत	शरिर	शरीर
तिसरा	तीसरा	गृहिणि	गृहिणी
बिमर	बीमार	स्विकार	स्वीकार
नज़दिक	नज़दीक	हारजित	हारजीत

(3) 'ऊ' की जगह 'उ' की भूलें:

<b>अशुद्ध</b>	<b>शुद्ध</b>	<b>अशुद्ध</b>	<b>शुद्ध</b>
तुने	तूने	भुल	भूल
दुध	दूध	सुर्य	सूर्य
पुज्य	पूज्य	शुरु	शुरू
उपर	ऊपर	हिन्दु	हिन्दू
क्रानुन	क्रानून	मालुम	मालूम
दुसरी	दूसरी	मज़मुन	मज़मून
पुछना	पूछना	महसुस	महसूस
फिजुल	फिजूल	प्रतिकुल	प्रतिकूल
जरुरत	जरूरत	गोमुत्र	गोमूत्र

(4) 'उ' की जगह 'ऊ' की भूलें:

<b>अशुद्ध</b>	<b>शुद्ध</b>	<b>अशुद्ध</b>	<b>शुद्ध</b>
तूम	तुम	पूजारी	पुजारी
तूम्हारा	तुम्हारा	सूख	सुख
पहुँचना	पहुँचना	सचमूच	सचमुच

ह्रस्व-दीर्घ की भूलों के निर्देशित उदाहरणों के अलावा कुछ और भूलों के उदाहरण और उनसे बचने के सामान्य नियम निम्नांकित हैं:

(1) जब संयुक्ताक्षर के अंत्य स्वर पर भार हो तो उसके

उदाहरण :

<b>अशुद्ध</b>	<b>शुद्ध</b>	<b>अशुद्ध</b>	<b>शुद्ध</b>
कूत्ता	कुत्ता	कीशती	किशती
गूच्छा	गुच्छा	चीट्ठी	चिट्ठी
बील्ली	बिल्ली	नूस्खा	नुस्खा
सूस्त	सुस्त	लूत्फ	लुत्फ

(2) ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन के रूपों में दीर्घ 'ई' ह्रस्व 'इ' में बदल जाती है।

उदाहरण :

<b>अशुद्ध</b>	<b>शुद्ध</b>	<b>अशुद्ध</b>	<b>शुद्ध</b>
थालीयाँ	थालियाँ	दासीयाँ	दासियाँ
ज़िन्दगीयाँ	ज़िन्दगियाँ	पोथीयाँ	पोथियाँ
टोपीयाँ	टोपियाँ	सदीयाँ	सदियाँ

(3) संस्कृत से आये हुए तत्सम शब्दों की अंत्य 'ति' अधिकतर ह्रस्व होती है।

उदाहरण :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
गती	गति	मती	मति
पती	पति	रीती	रीति
भक्ती	भक्ति	स्थिती	स्थिति

(4) श्रेष्ठतावाचक शब्दों का प्रत्यय 'इष्ट' की जगह 'इष्ठ' होता है।

उदाहरण :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कनिष्ठ	कनिष्ठ	धर्मिष्ठ	धर्मिष्ठ
घनिष्ठ	घनिष्ठ	बलिष्ठ	बलिष्ठ
जयेष्ठ	ज्येष्ठ	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ

(5) 'ईय' प्रत्यय में 'ई' दीर्घ होती है।

उदाहरण :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
जातिय	जातीय	देशिय	देशीय
प्रांतिय	प्रांतीय	वर्षिय	वर्षीय
राजकिय	राजकीय	स्वर्गिय	स्वर्गीय

(6) सामान्यतया 'इक' प्रत्यय में 'इ' ह्रस्व होता है।

उदाहरण :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
औद्योगीक	औद्योगिक	नैतीक	नैतिक
ऐच्छीक	ऐच्छिक	शारीरीक	शारीरिक
दैनिक	दैनिक	स्थानीक	स्थानिक

(7) सामान्यतया 'ईन' प्रत्यय में 'ई' दीर्घ होता है।

उदाहरण :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अर्वाचिन	अर्वाचीन	प्राचिन	प्राचीन
नविन	नवीन	कुलिन	कुलीन
पराधिन	पराधीन	स्वाधिन	स्वाधीन

प्रत्यय संबंधी भूलें :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
उत्कर्षता	उत्कर्ष	ऐक्यता	ऐक्य / एकता
औदार्यता	औदार्य/उदारता	कार्पण्यता	कृपणता / कार्पण्य
गौरवता	गौरव / गुरुता	दारिद्रता	दारिद्र्यता / दारिद्र्य
धैर्यता	धीरता / धैर्य	पौरुषत्व	पौरुष / पुरुषत्व
साम्यता	साम्य / समता	वैमनस्यता	वैमनस्य
सौजन्यता	सौजन्य / सुजनता	सौदर्यता	सुन्दरता / सौंदर्य

उपर्युक्त शब्दों के उदाहरण से पता चलता है कि, भाव प्रत्ययांत शब्दों के बाद प्रत्यय लगाना ठीक नहीं है।

**हलन्त का प्रयोग :**

- मान्/वान्/हान् प्रत्ययान्त शब्दों में हलन्त का प्रयोग अवश्य होना चाहिए ।  
जैसे - श्रीमान्, आयुष्यमान्, महान्, विद्वान्
- त्/मम्/उत् प्रत्ययान्त तत्सम शब्दों में हलन्त का प्रयोग किया जाता है ।  
जैसे - स्वागतम्, जगत्, परिषद्, पश्चात्, शरद्, सम्राट्, विद्युत् आदि।

**ये दोनों प्रचलित हैं और सही भी :**

दुकान - दूकान	उषा - ऊषा
अंजलि - अंजली	गरमी - गर्मी
सरदी - सर्दी	वरदी - वर्दी
तुरग - तुरंग	भुजग - भुजंग
बिलकुल - बिल्कुल	हलुआ - हलवा
विहग - विहंग	रियासत - रिआसत
आत्मा - आतमा	सोसाइटी - सोसायटी
कलश - कलस	मुस्कान - मुसकान
धबराना - धबड़ाना	एकत्र - एकत्रित
चाहिए - चाहिये	ग्रस्त - ग्रसित
दम्पती - दम्पति	जाए - जाये
पृथिवी - पृथ्वी	पिंजरा - पिंजड़ा
वशिष्ठ - वसिष्ठ	सामान्यतः - सामान्यतया

**स्वाध्याय**

**1. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप के सामने ( 3 ) का चिह्न लगाइए :**

(क) आविष्कार ( )	आविष्कार ( )	आविषकार ( )	आविश्कार ( )
(ख) पूजनीय ( )	पूज्यनीय ( )	पुजनीय ( )	पुज्यनीय ( )
(ग) सुषोभित ( )	शुसोभित ( )	सुसोभित ( )	सुशोभित ( )
(घ) शंगार ( )	शृंगार ( )	श्रृंगार ( )	श्रिंगार ( )
(ङ) स्वास्थ्य ( )	सवास्थ्य ( )	स्वासथ्य ( )	स्वास्थ्य ( )
(च) कवयित्री ( )	कवियित्री ( )	कवियत्री ( )	कवियित्री ( )

**2. निम्नलिखित शब्दों में अशुद्ध वर्तनीवाले बीस शब्द हैं। उन्हें छाँटकर उनके सामने उनके शुद्ध रूप लिखिए :**

नैन	पीढ़ी	उलंघन	शुरु	प्रसाद	निर्दयी	शब्दकोश
कृपया	अमावश्या	दृष्टि	उसर	ऊर्जा	एच्छिक	वंदना
सहस्त्र	एश्वर्य	डमरु	संतुष्ट	बढई	एनक	हंसमुख
दिवार	अतएव	वाटिका	पढ़ाई	पाँचवाँ	अरोग्य	उद्देश्य
लडाई	बांसुरी	बुधवार	अनधिकार	श्रीमती	सन्मुख	जाग्रति

अशुद्ध वर्तनीवाले शब्द तथा उनके शुद्ध रूप :

1. ....	10. ....
2. ....	11. ....
3. ....	12. ....
4. ....	13. ....
5. ....	14. ....
6. ....	15. ....
7. ....	16. ....
8. ....	17. ....
9. ....	18. ....

3. निम्नलिखित वाक्यों में दो-दो शब्दों की वर्तनी अशुद्ध है। अशुद्ध शब्दों के स्थान पर शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करते हुए वाक्यों को दुबारा लिखिए :

- (1) गुरुजीने छात्रों को आशीर्वाद दिया।
- (2) नेताजीने औजस्वी भाषण दिया।
- (3) मैंने प्रातकाल घास पर औस पड़ी देखी।
- (4) नोकर तोलिया लेकर आया।
- (5) बूड़ा सीड़ियाँ नहीं चढ़ पाया।
- (6) भारत ने औद्योगिक क्षेत्र में बहुत उन्नति की है।
- (7) ददीचि ने धर्म की रक्षा के लिए अपनी हड्डीयाँ दे दी।
- (8) व्यापार में घाटा होने के कारण वह टनटनगोपाल हो गया है।
- (9) हमें दुसरोँ के कार्य में हस्ताक्षेप नहीं करना चाहिए।
- (10) उसकी अलोचना सुनकर मुझे कष्ट हुआ।



रहीम

(जन्म : लगभग 1553 ई. : निधन : सन् 1626 ई.)

रहीम का पूरा नाम अब्दुरहीमखान खाना था। उनके पिता का नाम बैरमरबाँ था। जो अकबर के अभिभावक थे। रहीम अकबर के नवरत्नों में से एक थे। रहीम की कार्यक्षमता और बुद्धिमत्ता से अकबर बहुत प्रभावित थे और इसीलिए उन्होंने रहीम को अपने दरबार का महामंत्री का सर्वोच्च पद प्रदान किया था। रहीम संस्कृत, अरबी, फ़ारसी के विद्वान थे। दानी के रूप में बहु सुविख्यात है। जीवन के व्यावहारिक अनुभवों को उन्होंने अपनी 'सतसई' में व्यक्त किया है।

प्रथम दोहे में परहित की भावना, दूसरे दोहे में सही संबंध की रीत और सच्चा प्यार, तीसरे दोहे में छोटी चीज़ का महत्त्व, चौथे दोहे में सही दीनबंधु की बात की गई है। पाँचमें दोहे में कड़वे वचन बोलनेवाले की स्थिति का वर्णन है। छठवें दोहे में उत्तम व्यक्ति की प्रवृत्ति, सातवें दोहे में बिगड़ी हुई बात को छोड़ देने की, आठवें दोहे में धैर्य का महत्त्व तथा अंतिम दोहे में किसीसे माँगना नहीं चाहिए - इस बात को उद्धृत किया है।

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।  
 कहि रहीम परकाज हित, सम्पत्ति सुचहिं सुजान ॥1 ॥  
 कहिं रहीम सम्पत्ति सगे, बनत बहुत बहु रीत।  
 बिपत्ति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत ॥2 ॥  
 रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।  
 जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तरवारि ॥3 ॥  
 दीन सबनको लखत है, दीनहिं लखै न कोय।  
 जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय ॥4 ॥  
 खीरा को मुँह काटिकै, मलियत नोन लगाय।  
 रहिमन करुए मुखन की, चहिए यही सजाय ॥5 ॥  
 जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।  
 चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ॥6 ॥  
 बिगरी बात बनै नहीं, लाख करो किन कोय।  
 रहिमन बिगर दूध को, भथे न माखन होय ॥7 ॥  
 रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।  
 हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ॥8 ॥  
 रहिमन वे नर मर चुके, जे कहूँ माँगन जाहिं।  
 उनसे पहिले वे मुएँ, जिन मुख निकसत नाहिं ॥9 ॥

### शब्दार्थ और टिप्पणी

तरुवर वृक्ष परकाज दूसरों के काम बिपत्ति आपत्ति मीत प्यारा लघु छोटा तरवारि तलवार दीन गरीब सम समान  
 खीश ककड़ी करुण करुए भुजंग साँप बिगरी बिगड़ी हुई थोरे थोड़े निकसत निकलना



### स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :
  - (1) रहीम के अनुसार संपत्ति का महत्त्व क्या है?
  - (2) छोटों का तिरस्कार क्यों नहीं करना चाहिए?
  - (3) सुई का काम कौन नहीं कर सकता?
  - (4) उत्तम प्रवृत्ति का क्या लक्षण है?
  - (5) सीसे क्यों नहीं चाहिए?
  - (6) माँगने के बारे में रहीम क्या कहते हैं?
2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :
  - (1) वृक्ष और सरोवर के उदाहरण से रहीम हमें क्या समझाते हैं?
  - (2) रहीम कड़वे मुखवाली मनुष्य की प्रकृति को कैसे समझाते हैं?
  - (3) 'लाख प्रयत्न करने पर बिगडी हुई बात नहीं बनती' - ऐसा रहीम किस उदाहरण से समझाते हैं ?
3. आशय स्पष्ट कीजिए :
  - (1) 'रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।'
  - (2) चंदन विष व्याप्त नहीं, लपटे रहत भुजंग।

### योग्यता-विस्तार

### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रहीम के दोहो में निष्पन्न नीतिविषयक बात को चुनकर सुवाच्य अक्षरों में लिखिए और स्पष्ट कीजिए।

### शिक्षक-प्रवृत्ति

- रहीम के अन्य दोहे का संग्रह कीजिए।



नरेन्द्र शर्मा

कवि नरेन्द्र शर्मा का जन्म 1913 ई. में जहाँगीरपुर (बुलंदशहर) में हुआ। शिक्षा प्रयाग विश्व विद्यालय में एम.ए. तक हुई। वे आकाशवाणी के विविध भारती कार्यक्रम के प्रधान के रूप में सक्रिय रूप से जुड़े रहे।

उनका नाम प्रगतिवादी कवियों में भी लिया जाता है, जो अंशतः उचित भी है। नरेन्द्र शर्मा के कवि जीवन का विकास भी सुमित्रानंदन पंतजी की तरह तीन युगों में रहा है। वे पहले प्रेम और विरह के छायावादी गीतकार रहे, फिर प्रगतिवादी कवि के रूप में और अंत में अरविंदवादी दार्शनिक के रूप में। उनके कविता संकलनों में प्रमुख हैं— प्रभातफेरी, प्रवासी के गीत, अग्निशस्य, रक्तचंदन, लालनिशान, पलाशवन आदि कवितासंग्रहों के अतिरिक्त नरेन्द्रजी का एक कहानीसंग्रह भी है— 'कड़वी मीठी बातें' उनकी कई कविताओं में तत्कालीन समय की वेदना प्रतिबिंबित है।

'युग और मैं' कविता में देश में जो विनाशक वातावरण पैदा हुआ, बस्तियाँ उजड़ने लगीं, मानवता जख्मी हुई, इस की कवि को असह्य पीड़ा है। सारी दुनिया की पीड़ा के सामने कवि को अपनी पीड़ा नगण्य लगती है। मनुष्य को धरती पर स्वर्ग निर्मित करने के लिए परमात्मा ने हाथ दिए हैं, पर अपने में देवत्व पैदा करने का काम अधूरा छोड़कर मनुष्य आत्मघाती बनकर एक-दूसरे का पराभव कर जगत के वैभव को तहस-नहस कर रहा है, इसकी वेदना 'युग और मैं' कविता में अभिव्यक्त हुई है।

उजड़ रहीं अनगिनत बस्तियाँ, मन, मेरी ही बस्ती क्या!

धब्बों से मिट रहे देश जब, तो मेरी ही हस्ती क्या!

बरस रहे अंगार गगन से, धरती लपटें उगल रही,

निगल रही जब मौत सभी को, अपनी ही क्या जाय कही?

दुनियाँ भर की दुःख कथा है, मेरी ही क्या करुणा कथा!

जाने कब तक धाव भरेंगे इस घायल मानवता के?

जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सब की समता के?

सब दुनिया पर व्यथा पड़ी है, मेरी ही क्या बड़ी व्यथा!

खौल रहे हैं सात समुन्दर, डूबी जाती है दुनिया

ज्ञान थाह लेता था जिस से, गर्क हो रही वह दुनिया!

डूब रही हो सब दुनिया, जब, मुझे डूबता गम तो क्या!

हाथ बने किसलिये? करेंगे भू पर मनुज स्वर्ग निर्माण!

बुद्धि हुई किस लिए? कि डाले मानव-जग-जड़ता में प्राण!

आज हुआ सबका उलटा रुख, मेरा उलटा पासा क्या!

मानव को ईश्वर बनना था, निखिल सृष्टि वश में लानी,

काम अधूरा छोड़, कर रहा आत्मघात मानव ज्ञानी।

सब झूठे हो गये, निशाने, तुम मुझ से छूटे तो क्या!

एक दूसरे का अभिभव कर, रचने एक नये भव को।

हैं संघर्ष-निरत मानव अब, फूंक जगत-गत वैभव को

तहस-नहस हो रहा विश्व, तो मेरा अपना आपा क्या!

## शब्दार्थ और टिप्पणी

धब्बा दाग, कलंक हस्ती अस्तित्व लपटें ज्वालाएँ समता समानता व्यथा दुःख, पीड़ा रूख वर्तन, व्यवहार निखिल सारी, संपूर्ण अभिभव आदर भव संसार, दुनिया वैभव संपत्ति आपा अभिमान

### मुहावरे

गर्क होना डूब जाना तहस-नहस होना नष्ट होना पासा उलटा पड़ना परिस्थितियाँ विपरीत होना

### स्वाध्याय

- निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर दीजिए :
  - प्रस्तुत कविता के रचनाकार का नाम बताईए।
  - गगन और धरती से क्या हो रहा है?
  - सात समंदर में क्या हो रहा है?
  - काव्य-शीर्षक का समानार्थी शब्द दीजिए।
- संक्षेप में उत्तर लिखिए :
  - बुद्धि और हाथ किस कार्य के लिए हैं?
  - ज्ञान और पृथ्वी की कैसी स्थिति हो रही है?
  - मानव की क्या स्थिति हो गयी है?
- सविस्तार उत्तर दीजिए :
  - कवि के हृदय में कैसी व्यथा है?
  - 'युग और मैं' कविता का संदेश लिखिए।
- संदर्भ सहित स्पष्टीकरण दीजिए :
  - मानव को ईश्वर बनना था, निखिल सृष्टि वश में लानी, काम अधूरा छोड़कर रहा आत्मघात मानव ज्ञानी।  
सब झूठे हो गये, निशाने, तुम मुझसे छूटे तो क्या!
  - जाने कब तक घाव भरेंगे इस घायल मानवता के?  
जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सब की समता के?  
सब दुनिया पर व्यथा पड़ी है, मेरी ही क्या बड़ी व्यथा!
- विरोधी शब्द लिखिए :  
हस्ती, अंगार, समुंदर
- निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द देकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :  
अनगिनत, गगन, दुनिया, निखिल, तहस-नहस, आपा

7. ऐसी स्थिति में आप क्या कर सकते हैं?

जब मौत सभी को निगल रही हो? चारो ओर अत्र-तत्र सर्वत्र आग लगी हो, हत्याएँ हो रही हों।

#### योग्यता-विस्तार

#### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- हमारे आसपास परिस्थिति जब विषम हो गयी हो, हमें क्या करना चाहिए? इस विषय पर चर्चा-विमर्श कीजिए।

#### शिक्षक-प्रवृत्ति

- पंडित नरेन्द्र शर्माजी की अन्य कृतियों के बारे में छात्रों को परिचित करवाइये।

●

शेखर जोशी

शेखर जोशी का जन्म 10 सितंबर 1932 को अल्मोड़ा (उत्तरांचल) के ओलियागांव नामक स्थान पर हुआ। आपने केकड़ी एवं अजमेर में स्कूली शिक्षा प्राप्त की। लगभग तीस वर्षों तक इलाहाबाद के निकट एक सैनिक औद्योगिक प्रतिष्ठान में कार्यरत रहने के बाद आप स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं। आपके चर्चित कहानीसंग्रह हैं “कोसी का घटवार”, “साथ के लोग”, “दाज्यू”, “हलवाहा” एवं “नौरंगी बीमार है। आपकी आदमी और कीड़े कहानी को 1955 में धर्मयुग द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। नई कहानी आंदोलन के चर्चित कथाकार “महावीरप्रसाद द्विवेदी पुरस्कार” और “पहल” सम्मान से सम्मानित। “दाज्यू” कहानी पर चिल्ड्रन फिल्म सोसायटी द्वारा फिल्म का निर्माण।

दाज्यू कहानी बाल-श्रमिक पर लिखी गयी कहानी है। मदन एक पहाड़ी बालक है, जो पेट की आग बुझाने के लिए शहर में आकर एक होटल में काम करता है। भोलेपन में जिसे वह अपना “दाज्यू” अर्थात् बड़ा भाई समजने लगता है, वही किस प्रकार एक दिन उसके बाल-मन पर आघात कर जाता है इसका मार्मिक चित्रण इस कहानी में हुआ है।

चौक से निकल कर बायीं ओर जो बड़े साइनबोर्डवाला छोटा कैफे है, वहीं जगदीशबाबू ने उसे पहली बार देखा था। गौरा-चिट्टा रंग, नीली शफ़्फ़ाफ़ आँखें, सुनहरे बाल और चाल में एक अनोखी मस्ती-पर शिथिलता नहीं। कमल के पत्ते पर फिसलती हुई पानी की बूँद की सी फुर्ती। आँखों की चंचलता देखकर उसकी उम्र का अनुमान केवल नौ-दस वर्ष ही लगाया जा सकता था और शायद यही उम्र उसकी रही होगी।

अधजली सिगरेट का एक लम्बा कश खींचते हुए जब जगदीशबाबू ने कैफे में प्रवेश किया तो वह एक मेज पर से प्लेटें उठा रहा था और जब वे पास ही कोने की टेबल पर बैठे तो वह सामने था। मानो, घंटों से उनकी, उस स्थान पर आनेवाले व्यक्ति की, प्रतीक्षा कर रहा हो। वह कुछ बोला नहीं। हां, नम्रता प्रदर्शन के लिये थोड़ा झुका और मुस्कुराया भर था, पर उसके इसी मौन में जैसे सारा ‘मीनू’ समाहित था। “सिंगल चाय” का आर्डर पाने पर वह एक बार पुनः मुस्करा कर चल दिया और पलक झपकते ही चाय हाज़िर थी।

मनुष्य की भावनाएँ बड़ी विचित्र होती हैं। निर्जन, एकांत स्थान में निस्संग होने पर भी कभी-कभी आदमी एकाकी अनुभव नहीं करता। लगता है, इस एकाकीपन में भी सब कुछ कितना निकट है, कितना अपना है। परंतु इसके विपरीत कभी-कभी सैकड़ों नर-नारियों के बीच जनरवमय वातावरण में रह कर भी सूनेपन की अनुभूति होती है। लगता है, जो कुछ है वह पराया है, कितना अपनत्वहीन! पर यह अकारण ही नहीं होता। इस एकाकीपन की अनुभूति, इस अलगाव की जड़ें होती हैं- विछोह या विरक्ति की किसी कथा के मूल में।

जगदीशबाबू दूर देश से आये हैं, अकेले हैं। चौक की चहल-पहल कैफे के शोरगुल में उन्हें लगता है, सब कुछ अपनत्वहीन है। शायद कुछ दिनों रहकर, अभ्यस्त हो जाने पर उन्हें इसी वातावरण में अपनेपन की अनुभूति होने लगे, पर आज तो लगता है यह अपना नहीं अपनेपन की सीमा से दूर, कितना दूर है, और तब उन्हें अनायास ही याद आने लगते हैं अपने गाँव पड़ोस के आदमी, स्कूल-कालेज के छोकरे, अपने निकट शहर के कैफे-होटल...।

‘चाय साब !’

जगदीशबाबू ने राखदानी में सिगरेट झाड़ी। उन्हें लगा, इन शब्दों की ध्वनि में वही कुछ है जिसकी रिक्तता उन्हें अनुभव हो रही है और उन्होंने अपनी शंका का समाधान कर लिया-

‘क्या नाम है तुम्हारा?’

‘मदन।’

‘अच्छा, मदन! तुम कहाँ के रहनेवाले हो?’

‘पहाड़ का हूँ, बाबूजी!’

‘पहाड़ तो सैकड़ों हैं- आबू, दार्जिलिंग, मसूरी, शिमला, अल्मोड़ा! तुम्हारा गाँव किस पहाड़ में है?’

इस बार शायद उसे पहाड़ और जिले का भेद मालूम हो गया। मुस्करा कर बोला-

‘अल्मोड़ा सा’ब अल्मोड़ा।’

‘अल्मोड़ा मैं कौन-सा गाँव है?’ विशेष जानने की गरज से जगदीशबाबू ने पूछा।

इस प्रश्न ने उसे संकोच में डाल दिया। शायद अपने गाँव की निराली संज्ञा के कारण उसे संकोच हुआ था। इस कारण टालता हुआ सा बोला, वह तो दूर है सा 'ब अल्मोड़ा से पंद्रह-बीस मील होगा।'

'फिर भी, नाम तो कुछ होगा ही।' जगदीशबाबू ने जोर देकर पूछा।

'डोट्यालगों' वह सकुचाता हुआ सा बोला।

जगदीशबाबू के चेहरे पर पुती हुए एकाकीपन की स्याही दूर हो गयी और जब उन्होंने मुस्करा कर मदन को बताया कि वे भी उसके निकटवर्ती गाँव के रहनेवाले हैं तो लगा जैसे प्रसन्नता के कारण अभी मदन के हाथ से 'ट्रे' गिर पड़ेगी। उसके मुँह से शब्द निकलना चाह कर भी न निकल सके। खोया-खोया सा वह अपने अतीत को फिर लौट-लौट कर देखने का प्रयत्न कर रहा हो।

अतीत-गाँव... ऊँची पहाड़ियाँ... नदी... ईजा (मां)...बाबा... दीदी... भुलि (छोटी बहन)... दाज्यू (बड़ा भाई)...!

मदन को जगदीशबाबू के रूप में किसकी छाया निकट जान पड़ी! ईजा?— नहीं, बाबा? नहीं, दीदी, ...भुलि? — नहीं, दाज्यू? हाँ, दाज्यू!

दो-चार ही दिनों में मदन और जगदीशबाबू के बीच की अजनबीपन की खाई दूर हो गयी। टेबल पर बैठते ही मदन का स्वर सुनाई देता—

'दाज्यू, जैहिन्न...।'

'दाज्यू, आज तो ठंड बहुत है।'

'दाज्यू, क्या यहाँ भी 'ह्यू' (हिम) पड़ेगा?'

'दाज्यू, आपने तो कल बहुत थोड़ा खाना खाया।' तभी किसी ओर से 'बाँय' की आवाज़ पड़ती और मदन उस आवाज़ की प्रतिध्वनि के पहुँचने से पहले ही वहाँ पहुँच जाता! आर्डर लेकर फिर जाते-जाते जगदीशबाबू से पूछता, 'दाज्यू, कोई चीज?'

'पानी लाओ।'

'लाया दाज्यू', शब्द को उतनी ही आतुरता और लगन से दुहराता जितनी आतुरता से बहुत दिनों के बाद मिलने पर भी माँ अपने बेटे को चूमती है।

कुछ दिनों बाद जगदीशबाबू का एकाकीपन दूर हो गया। उन्हें अब चौक, कैफे ही नहीं सारा शहर अपनेपन के रंग में रंगा हुआ सा लगने लगा परंतु अब उन्हें यह बार-बार 'दाज्यू' कहलाना अच्छा नहीं लगता और यह मदन था कि दूसरी टेबल से भी 'दाज्यू'...।

'मदन! इधर आओ।'

'आया दाज्यू!'

'दाज्यू' शब्द की आवृत्ति पर जगदीशबाबू के मध्यमवर्गीय संस्कार जाग उठे— अपनत्व की पतली डोरी 'अहं' की तेज धार के आगे न टिक सकी।

'दाज्यू, चाय लाऊँ?'

'चाय नहीं, लेकिन यह दाज्यू-दाज्यू क्या चिल्लाते रहते हो दिन रात। किसी की प्रेस्टिज का ख्याल भी नहीं है तुम्हें?'

जगदीशबाबू का मुँह क्रोध के कारण तमतमा गया, शब्दों पर अधिकार नहीं रह सका। मदन 'प्रेस्टिज' का अर्थ समझ सकेगा या नहीं, यह भी उन्हें ध्यान नहीं रहा, पर मदन बिना समझाये ही सब कुछ समझ गया था।

मदन को जगदीशबाबू के व्यवहार से गहरी चोट लगी। मैनेजर से सिरदर्द का बहाना कर वह घुटनों में सर दे कोठरी में सिसकियाँ भर-भर रोता रहा। घर-गाँव से दूर ऐसी परिस्थिति में मदन का जगदीशबाबू के प्रति आत्मीयता-प्रदर्शन स्वाभाविक ही था। इसी कारण आज प्रवासी जीवन में पहली बार उसे लगा जैसे किसी ने उसे ईजा की गोदी से, बाबा की बांहों के और दीदी के आंचल की छाया से बलपूर्वक खींच लिया हो परंतु भावुकता स्थायी नहीं हो तो। रो लेने पर, अंतर की घुमड़ती वेदना की आँखों की राह बाहर निकाल लेने पर मनुष्य जो भी निश्चय करता है वे भावुक क्षणों की अपेक्षा अधिक विवेकपूर्ण होते हैं।

मदन पूर्ववत् काम करने लगा।

दूसरे दिन कैफे जाते हुए अचानक ही जगदीशबाबू की भेंट बचपन के सहपाठी हेमंत से हो गयी। कैफे में पहुँच कर जगदीशबाबू ने इशारे से मदन को बुलाया परंतु उन्हें लगा जैसे वह उनसे दूर-दूर रहने का प्रयत्न कर रहा हो। दूसरी बार बुलाने पर ही मदन आया। आज उसके मुँह पर वह मुस्कान न थी और न ही उसने 'क्या लाऊँ दाज्यू' कहा। स्वयं जगदीशबाबू को ही कहना पड़ा, 'दो चाय, दो ऑमलेट' परंतु तब भी 'लाया दाज्यू' कहने की अपेक्षा 'लाया सा'ब' कहकर वह चल दिया। मानों दोनों अपरिचित हों।

'शायद पहाड़िया है?' हेमंत ने अनुमान लगाकर पूछा।

'हाँ', रूखा सा उत्तर दे दिया जगदीशबाबू ने और वार्तालाप का विषय ही बदल दिया।

मदन चाय ले आया था।

'क्या नाम है तुम्हारा लड़के?' हेमंत ने अहसान चढ़ाने की गरज से पूछा।

कुछ क्षणों के लिए टेबुल पर गंभीर मौन छा गया। जगदीशबाबू की आँखें चाय की प्याली पर ही झुकी रह गयीं। मदन की आँखों के सामने विगत स्मृतियाँ घूमने लगीं... जगदीशबाबू का एक दिन ऐसे ही नाम पूछना... फिर... दाज्यू आपने तो कल थोड़ा ही खाया... और एक दिन 'किसी की प्रेस्टिज का ख्याल नहीं रहता तुम्हें...'

जगदीशबाबू ने आँखें उठाकर मदन की ओर देखा, उन्हें लगा जैसे अभी वह ज्वालामुखी सा फूट पड़ेगा। हेमंत ने आग्रह के स्वर में दुहराया, 'क्या नाम है तुम्हारा?'

बाँय कहते हैं सा'ब मुझे। संक्षिप्त-सा उत्तर देकर वह मुड़ गया। आवेश में उसका चेहरा लाल होकर और भी अधिक सुंदर हो गया था।

### शब्दार्थ और टिप्पणी

शक्काफ उजली मीनू व्यंजन, सूची निस्संग अकेला जनश्रमय शोरगुलयुक्त हिम बर्फ ह्यू बर्फ अहं घमंड प्रेस्टिज इज्जत वेदना पीड़ा

### स्वाध्याय

1. सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) मदन का गाँव किस पहाड़ी क्षेत्र में था?

(अ) मसूरी (ब) शिमला (क) दार्जिलिंग (द) अल्मोड़ा

(2) कहानी के अंत में नए ग्राहक हेमंत को मदन ने अपना नाम क्या बताया?

(अ) मदन (ब) पहाड़ी (क) बाँप (द) बेयश

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) मदन का गाँव किस पहाड़ी क्षेत्र में था?

(2) नए ग्राहक हेमंत को मदन ने अपना नाम क्या बताया?

(3) जगदीशबाबू के व्यवहार से मदन को चोट क्यों लगी?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर दीजिए :

(1) जगदीशबाबू को पहले-पहले नए शहर आकर कैसा लगता था?

(2) प्रारंभ में जगदीशबाबू का व्यवहार मदन के प्रति कैसा था?

(3) जगदीशबाबू ने मदन को 'दाज्यू' कहने पर क्यों डाँटा?

(4) 'दाज्यू' कहानी में बाल-मन की संवेदना का मार्मिक चित्रण हुआ है- समझाइए।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- गाँव की मुलाकात कीजिए और गाँव के मानवीय संबंधों को समझाइए।
- परिश्रम का महत्त्व - निबंध लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- बाल श्रमिकों के चित्रों का संग्रह करवाइए।





आनंदशंकर माधवन

श्री आनंदशंकर माधवन का जन्म केरल प्रदेश के क्विलन जिले में हुआ। डॉ. जाकिरहुसेन के संपर्क में आने से हिन्दु-मुस्लिम के मधुर संबंधों के पक्षधर बन गए। महात्मा गांधी के भारत छोड़ो आंदोलन में भी माधवनजी का सक्रीय सहभाग रहा। जेल में रहकर हिन्दी भाषा का अध्ययन किया। जेल से छूटकर आप भारतभ्रमण को निकल पड़े और बाद में बिहार में मंदार विद्यापीठ की स्थापना की। सन् 1984 में 'अद्वैत मिशन' और सन् 1985 में शिवधाम अभिनव शिक्षा नगरी की स्थापना की। अब आप तीनों संस्थाओं के संचालक हैं। मलयालम तथा तमिल दोनों ही भाषाओं पर पूर्ण अधिकार होने के बावजूद आपने हिंदी साहित्य में सृष्टि की। आपके विषयों में दार्शनिकता, आधुनिकता एवं आध्यात्मिकता का बाहुल्य है। 'बिखरे हीरे', 'अनलशलाका', 'हिंदी आंदोलन', 'आमंत्रित मेहमान', 'आरती', 'उषा', 'संजीवनी' आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। 'आमंत्रित मेहमान' बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा पुरस्कृत है।

माधवनजी ने प्राचीन गुरु-शिष्य-परंपरा की गरिमा को स्पष्ट करते हुए वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर परोक्ष रूप में करारा व्यंग्य किया है। हमारे समाज में व्यावसायिक संस्कृति का बोलबाला है। इस कारण गुरु-शिष्य संबंधों में परिवर्तन आया है। पहले विद्यालय मंदिर के समान माने जाते थे। शिक्षा देना एक आध्यात्मिक अनुष्ठान था। वह परम सुख प्राप्ति का एक माध्यम था। उस जमाने में पैसे देकर शिक्षा खरीदी नहीं जाती थी। क्या आज वैसी स्थिति है? क्या आज शिक्षा के क्षेत्र में वहाँ निष्ठा, वही त्याग नजर आता है? लेखक ने हमें अंतर्मुख होकर सोचने के लिए बाध्य किया है।

हमारे समाज में व्यावसायिक संस्कृति का बोलबाला है, इसी कारण गुरु-शिष्य संबंधों में परिवर्तन आया है। पहले विद्यालय मंदिर के समान माने जाते थे। शिक्षा देना एक आध्यात्मिक अनुष्ठान था। वह परमेश्वर प्राप्ति का एक माध्यम था। पैसे देकर शिक्षा खरीदी नहीं जाती थी। आज स्थिति बिल्कुल बदल गई है और अब शिक्षणकार्य पेट पालने का साधन बन गया है।

जिसे भारतीय संस्कृति कहा जाना चाहिए वह आज भारतीय मानसिक क्षितिज में क्रियाशील नहीं है। आज एक प्रकार की अव्यवस्थित व्यावसायिक संस्कृति व्याप्त है जिसकी जड़ शायद यूरोप में है। भारतीयों के सार्वजनिक व्यवहार में गुरु-शिष्य संबंध का भी तदनु रूप परिवर्तन हो गया है। यहाँ गुरु वेतनभोगी नहीं होते थे और न शिष्य को ही शुल्क देना पड़ता था। पैसे देकर विद्या खरीदने की यह क्रय-विक्रय पद्धति/निस्संदेह उस भारतीय मिट्टी का उपज नहीं है। शिक्षणालय एक प्रकार के आश्रम अथवा मंदिर के समान थे। गुरु को साक्षात् परमेश्वर ही समजा जाता था। शिष्य पुत्र से अधिक प्रिय होते थे। यहाँ सम्मान मिलना ही शक्ति पाने का रहस्य है। प्राचीन काल में गुरु की शिक्षादान क्रिया उनका आध्यात्मिक अनुष्ठान थी, परमेश्वरप्राप्ति उनका एक माध्यम था। वह आज पेट पालने का ज़रिया बन गई है।

प्रारंभ में विवेकानंद को भारत में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं हुआ पर जब उन्होंने अमेरिकन नाम कमा लिया तो भारतवासी दौड़े मालाएँ लेकर स्वागत करने! रवीन्द्रनाथ ठाकुर को भी नोबल पुरस्कार मिला तो बंगाली लोग दौड़े यह राग अलापते हुए - अमादेर ठाकुर अमादेर कठोर सुपूत...। दक्षिण भारत में कुछ समय पहले तक भरतनाट्यम् और कथकली को नहीं पूछता था, पर जब उसे विदेशों में मान मिलने लगा तो आश्चर्य से भारतवासी सोचने लगे अरे, हमारी संस्कृति में इतनी अपूर्व चीजें भी पड़ी थीं क्या...। यहाँ के लोगों को अपनी खूबसूरती नहीं नजर आती; मगर पराए के सौंदर्य को देखकर मोहित हो जाते हैं। जिस देश में ज्ञान पाने के लिए मैक्समूलर ने जीवनभर प्रार्थना की उस देश के निवासी आज जर्मनी और विलायत जाना स्वर्ग जाने जैसा अनुभव करते हैं। ऐसे लोगों को प्राचीन गुरु-शिष्य संबंध की महिमा सुनाना गधे को गणित सिखाने जैसा व्यर्थ प्रयास ही हो सकता है।

एक बार सुप्रसिद्ध भारतीय पहलवान गामा मुंबई आए। उन्होंने विश्व के सारे पहलवानों को कुश्ती में चैलेंज दिया। अखबारों में यह समाचार प्रकाशित होते ही एक पारसी पत्रकार ने उत्सुकतावश उनके निकट पहुँचकर उनसे पूछा, 'साहब, विश्व के किसी भी पहलवान से लड़ने के लिए आप तैयार हैं तो आप अपने अमुक शिष्य से ही लड़कर विजय प्राप्त करके दिखाओ। गामा आजकल के शिक्षाक्रम में रंगे नहीं थे। इसलिए उन्हें इन शब्दों ने हैरान कर दिया। आँखे फाड़कर उस पत्रकार का चेहरा ताकते ही रह गए। बाद में धीरे से कहा, "भाई साहब, मैं हिंदुस्तानी हूँ। हमारा अपना एक निजी रहन-सहन है। शायद इससे आप परिचित नहीं हैं। जिस लड़के का आपने नाम लिया,

वह मेरे पसीने की कमाई, मेरा खून है और मेरे बेटे से भी अधिक प्यार है इसमें और मुझमें फ़रक ही कुछ नहीं है। मैं लड़ा या वह लड़ा, दोनों बराबर ही होगा। हमारी इस परंपरा को आप समझने की चेष्टा कीजिए। हम लोगों को वंशपरंपरा से शिष्य परंपरा अधिक प्रिय है। ख्याति और प्रभाव में हम सदा यह चाहते हैं कि हम अपने शिष्यों से कम प्रभावी रहें। यानी हम यही चाहेंगे कि संसार में जितना नाम मैंने कमाया उससे कहीं अधिक मेरे पिता कमाएँ। मुझे लगता है, आप हिंदुस्तानी नहीं है...।”

भारत में गुरु-शिष्य संबंध का वह भव्य रूप आज साधुओं, पहलवानों और संगीतकारों में थोड़ा बहुत ही सही, पाया जाता है। भगवान रामकृष्ण बरसों योग्य शिष्य को पाने के लिए प्रयत्न करते रहे। उनके जैसे व्यक्ति को भी उत्तम शिष्य के लिए रो-रोकर प्रार्थना करनी पड़ी थी। इसे समझा जा सकता है कि एक गुरु के लिए उत्तम शिष्य कितना महंगा और महत्त्वपूर्ण है। संतान प्राप्ति वर्ग उन्हें दुःख नहीं देता पर बगैर शिष्य के रहने के लिए वे एकदम तैयार नहीं होते। इस संबंध में भगवान ईसा का एक कथन सदा स्मरणीय है। उन्होंने कहा था, ‘मेरे अनुयायी लोग मुझसे कहीं अधिक महान हैं और उनकी जूतियाँ होने की योग्यता भी मुझमें नहीं है।’ यही बात है, गांधीजी बनने की क्षमता जिनमें है उन्हें गांधीजी अच्छे लगते हैं और वे ही उनके पीछे चलते भी हैं। विवेकानंद सिर्फ उन्हें पसंद आयेगें जिनमें विवेकानंद बनने की अद्भुत शक्ति निहित है।

कविता के मर्मज्ञ और रसिक स्वयं कवि से अधिक महान होते हैं। संगीत के पागल सुननेवाले ही स्वयं संगीतकार से अधिक संगीत का रसास्वादन करते हैं। यहाँ पूज्य नहीं, पुजारी ही श्रेष्ठ है। यहाँ सम्मान पानेवाले नहीं, सम्मान देनेवाले महान हैं। स्वयं पुष्प में कुछ नहीं है, पुष्प का सौंदर्य उसे आनेवाले की दृष्टि में है। दुनिया में कुछ नहीं है, जो कुछ भी है हमारी चाह में, हमारी दृष्टि में है। यह अद्भुत भारतीय व्याख्या अजीब-सी लग सकती है, पर हमारे पूर्वज सदा इसी पथ के यात्री रहे हैं।

उत्तम गुरु में जातिभावना भी नहीं रहती। कितने ही मुसलमान पहलवानों के हिंदू चेले हैं और संगीतकारों के मुसलमान शिष्य रहे हैं। यहाँ परख गुण की, साधना की और प्रतिभा की होती भक्ति और श्रद्धा की ही कीमत है, न कि जातिसंप्रदाय, आचार-विचार या धर्म की। मुझे क्या लिखाया था एक विद्वान मुसलमान ने ही। उन्होंने कभी नहीं सोचा कि यह हिंदू है और मुसलमान बनाना चाहिए। पुराने जमाने में मौलवी लोग बड़े-बड़े रामाणी होते थे और आज देहांतों में भरत मियाँ, रंजीत मियाँ आदि अधिक संख्या में दिखाई देते हैं।

आज के गुरु भी सिर्फ सेवा लेने में ही चतुर हैं, देने में नहीं। उपनिषदों में आचार्यों ने कहा, सेवा देने की चीज है, लेने की नहीं। सेवा लेने के अधिकारी बच्चे, रोगी, असहाय और वृद्ध बच्चों को परमेश्वर का ही मूर्त रूप समझ। सेवा रूपी पूजा से उनकी शक्ति को प्रज्वलित करने क्षमता और सहृदयता रखनेवाले ज्ञानी और तपस्वी पुरोहित आजकल के गुरु नहीं रह गए। किसी भी देवमंदिर की मूर्ति की शक्ति उतनी मात्रा तक ही संभव है जितनी मात्रा तक उसके पुजारी की भावपूजा में नैवेद्यभावना भरी रहती है।

### शब्दार्थ और टिप्पणी

परिवर्तन बदलाव सुप्रसिद्ध सर्वश्रेष्ठ निजी अपना उत्तम श्रेष्ठ अनुयायी शिष्य

### मुहावरे

गधे को गणित सिखाना व्यर्थ प्रयास करना ताकते रहना आश्चर्य से देखते ही रहना पसीने की कमाई कठिन परिश्रम का फल रंग जाना (किसी काम में) निमग्न होना

### स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :
  - (1) प्राचीन काल में भारतीय शिक्षा केन्द्र कैसे थे ?
  - (2) जब रवीन्द्रनाथ ठाकुर को नोबल पुरस्कार मिला तब बंगाली लोग कौन-सा राग आलापने लगे ?
  - (3) भगवान रामकृष्ण बरसों तक योग्य शिक्षा पाने के लिए क्या करते थे ?
  - (4) भगवान ईसा का कौन-सा कथन सदा स्मरणीय है ?
  - (5) गांधीजी किन्हीं अच्छे लगते हैं ?
2. निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तार से उत्तर लिखिए :
  - (1) युरोप के प्रभाव के कारण आज गुरु-शिष्य संबंधों में क्या अंतर आया है ?
  - (2) पुजारी की शक्ति मूर्ति में कैसे विकसित होने लगी ?
  - (3) विवेकानंद और रवीन्द्रनाथ ठाकुर को इस देश में अधिक महत्त्व कब मिला ?
3. आशय स्पष्ट कीजिए :
  - (1) सम्मान पानेवालों से सम्मान देनेवाले
  - (2) “जो गुरु से मार खाते हैं उनका भविष्य उज्ज्वल होगा ही।”
4. सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :
  - (1) इसमें ओर मुजमें फ़रक ही कुछ नहीं है। (भविष्यकाल)
  - (2) हम अपने शिष्यों से कम प्रमुख रहें। (पूर्ण भूतकाल)
  - (3) उपनिषदों में आचार्यों ने कहाँ है। (सामान्य भूतकाल)
5. मुहावरों का अर्थ देकर वाक्यप्रयोग कीजिए :

ताकते रहना, पसीने की कमाई, रंग जाना
6. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

रोगी, असहाय, वृद्ध

### योग्यता-विस्तार

#### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- पढ़ो हिन्दी, बोलो हिन्दी में और जोड़ो भारत निबंध का लेखन कीजिए।

#### शिक्षक-प्रवृत्ति

- परिसंवाद :
  - (1) ‘गुरु-शिष्य संबंध’ कल और आज
  - (2) वर्तमान शिक्षा में अनुशासन का महत्त्व



## शब्द-संरचना

भाषा में एक शब्द से दूसरा शब्द बनाने की प्रक्रिया को शब्द-संरचना कहा जाता है। शब्द-संरचना में मूल शब्दों में कुछ शब्दांश या शब्दों को जोड़कर नए शब्द बनाए जाते हैं। हिन्दी में शब्द-संरचना की प्रक्रिया तीन प्रकार से होती है-

1. उपसर्ग द्वारा
2. प्रत्यय द्वारा
3. समास / संधि के द्वारा

यहाँ हम उपसर्ग और प्रत्यय की सहायता से शब्द-संरचना की जानकारी प्राप्त करेंगे।

### उपसर्ग द्वारा शब्द-संरचना :

- वे शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जुड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं और उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन कर देते हैं वे उपसर्ग कहलाते हैं जैसे-

उप + देश = उपदेश

स्व + देश = स्वदेश

वि + देश = विदेश

- उपर्युक्त उदाहरण में 'देश' शब्द से पूर्व 'उप' उपसर्ग जुड़ने से नया शब्द 'उपदेश' और 'वि' उपसर्ग जुड़ने से नया शब्द 'विदेश' बने। अतः यहाँ 'उप', 'स्व', 'वि' - उपसर्ग हैं।

- उपसर्ग की तीन विशेषताएँ होती हैं-

(1) शब्द के अर्थ में नई विशेषता लाना।

जैसे : प्र + बल = प्रबल

अनु + शासन = अनुशासन

(2) शब्द के अर्थ को उलट देना।

जैसे : अ + धर्म = अधर्म

अप + मान = अपमान

(3) शब्द के अर्थ में, कोई खास परिवर्तन न करके मूलार्थ के इर्द-गिर्द अर्थ प्रदान करना।

जैसे : वि + शुद्ध = विशुद्ध

परि + भ्रमण = परिभ्रमण

- उपसर्ग शब्द निर्माण में बड़ा सहायक होता है। एक ही मूल शब्द विभिन्न उपसर्गों के योग से विभिन्न अर्थ प्रकट करता है। जैसे-

- आ + हार = आहार - भोजन

- सम् + हार = संहार - नाश

- उप + हार = उपहार - सौगात

- उत् + हार = उद्धार - मुक्ति, मोक्ष

- प्र + हार = प्रहार - चोट करना

- वि + हार = विहार - मनोरंजनार्थ यत्र-तत्र घूमना

- हिन्दी भाषा में हिन्दी के अपने उपसर्ग, संस्कृत के उपसर्ग और अरबी, फारसी, उर्दू के उपसर्गों का प्रयोग होता है। यहाँ इन भाषाओं के प्रमुख उपसर्ग, उनके अर्थ एवं उनसे बने शब्द दिए जा रहे हैं।

हिन्दी के उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अ	अभाव, निषेध	अचेत, अज्ञान, अभाव, अमर
अन	अभाव निषेध	अनपढ़, अनमोल, अनजान, अनबन
अध	आधा	अधपका, अधखिला, अधमरा
औ	हीन, निषेध	औगुन, औघट, औढ़र
क/कु	बुरा, बुराई	कपूत, कुचाल, कुपात्र, कुकर्म
दु	कम, बुरा	दुबला, दुश्चरित्र, दुकाल
नि	निषेध, अभाव	निगू, निकम्मा, निहत्था, निधड़क
बिन	अभाव, निषेध	बिनदेखा, बिनब्याहा, बिनबोला
भर	पूरा	भरपूर, भरसक, भरपेट
स	अच्छा, सहित	सपूत, सचेत, सहर्ष, सजातीय
सु	उत्तमता, साथ	सुझौल, सुजान
पर	अधिक, आगे	परपोता, परदादा
न	अभाव	नपूता, नपूती

संस्कृत के उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अ	अभाव, निषेध	अधर्म, अनीति, अज्ञान, असत्य
आ	तक, पूर्ण, सहित, उल्टा	आमरण, आकण्ठ, आमुख, आक्रोश, आक्रमण, आरोहण
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ, समीपता	अधिनायक, अधिपति, अध्ययन, अधीक्षक, अध्यात्म, अधिकार
अति	अधिक	अतिक्रमण, अतिपात, अतिरिक्त, अत्याचार, अतिशय, अत्यंत, अत्याचार
अनु	पीछे, समान, बाद में आनेवाला	अनुशासन, अनुरूप, अनुभूति, अनुकंपा, अनुगामी, अनुज, अनुकूल, अनुकरण, अनुराग, अनुशीलन
अभि	सामने, ओर, अच्छा, पास	अभिमुख, अभियोग, अभियान, अभिज्ञान, अभ्यास, अभिलाषा, अभिनव, अभिप्राय, अभिशाप
अव	बुरा, हीन	अवनति, अवगुण, अवज्ञा
उत्	ऊपर, श्रेष्ठ, निकट, सादृश्य	उपनाम, उपकृत, उपदेश, उपनगर, उपकार, उपवन, उद्धार, उत्कृष्ट, उदय, उत्पत्ति, उत्कर्ष
दुर्	कठिन, बुरा, हीनता	दुर्लभ, दुर्भाग्य, दुर्बल, दुर्गति, दुर्गुण, दुर्दशा, दुराचार, दुर्जन, दुर्दिन
दुस्	कठिन, बुरा	दुस्साहस, दुष्कर, दुष्कर्म, दुसाध्य, दुर्गम, दुःसह, दुश्शासन

निर्	बिना, नहीं	निर्जन, निर्भय, निर्वाह, निर्गम, निर्मल, निर्बल, निर्दोष, निरपराध, निराकार
निस्	रहित, नहीं	निष्कपट, निष्काम, निश्छल, निश्चल, निस्संदेह, निस्तेज
परा	उल्टा, विपरीत, नाश, दशा	पराधीन, पराजय, पराभव, पराक्रम, परामर्श, पराकाष्ठा
परि	चारों ओर, आस-पास, पूर्णता	परिक्रमा, परिणाम, परिमाण, परिश्रम, परित्यक्त
प्र	अधिक, आगे, गति	प्रयत्न, प्रसिद्ध, प्रहार, प्रलय, प्रताप, प्रबल, प्रक्रिया, प्रकोप
प्रति	सामने, विरुद्ध, विशेषार्थ में	प्रतिहिंसा, प्रतिध्वनि, प्रतिवाद, प्रतिकार, प्रतिज्ञा, प्रतिभा, प्रतिष्ठा, प्रतिदान
वि	विशिष्ट, भिन्न	विख्यात, विज्ञान, विपक्ष, विदेश, वियोग
सम्	संयोग, अच्छा, पूर्ण, साथ	संतोष, संस्कार, संयुक्त, संवाद, सम्मेलन
सु	अच्छा, श्रेष्ठता	सुपुत्र, सुशिक्षित, सुरम्य, सुजन, सुकाल, सुगम
स्व	अपना	स्वराज्य, स्वतंत्र

अरबी, फारसी, उर्दू के उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अल	निश्चित	अलबेला, अलबत्ता
ऐन	ठीक, पूरा	ऐनवक्त, ऐन मौका
कम	अल्प, हीन	कमजोर, कमअक्ल, कमउम्र
खुश	अच्छा, उत्तमता	खुशबू, खुशमिजाज, खुशकिस्मत, खुशखबरी, खुशहाल
गैर	भिन्न, निषेध	गैरकानूनी, गैरहाज़िर
दर	में, अन्दर	दरअसल, दरहकीकत, दरकार
ना	अभाव	नापसंद, नामंजूर, नाराज़, नालायक, नादान, नाजायज
ब	के अनुसार, और	बनाम, बदौलत, बखूबी
बद	बुरा, हीनता	बदनाम, बदतमीज, बदबू
बर	बाहर, पर	बरदाश्त, बरखास्त, बरवक्त
बा	साथ, से	बाकायदा, बाइज्जत, बाकलम
बिला	बगैर, बिना	बिलावजह, बिलाकसूर, बिलाअक्ल
बे	बिना, अभाव	बेईमान, बेकसूर, बेचारा, बेहोश
ला	बिना, अभाव	लावारिस, लाज़वाब, लापरवाह
सर	मुख्य, श्रेष्ठ	सरपंच, सरनाम, सरताज
हम	साथ, बराबर	हमदर्द, हमसफ़र, हमउम्र, हमराज
हर	प्रत्येक	हरसाल, हरघड़ी, हररोज, हरदफा

## स्वाध्याय

1. उपसर्ग से आप क्या समझते हैं?
2. किन्ही तीन उपसर्ग चुनकर उन उपसर्गों के योग से तीन-तीन शब्द बनाइए।
3. सही विकल्प चुनिए :
  - (1) किस शब्द में 'आ' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?
 

(क) आजीवन	(ख) आमरण	(ग) आकर्षक	(घ) आराम
-----------	----------	------------	----------
  - (2) किस शब्द में 'अप' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?
 

(क) अपमान	(ख) अपना	(ग) अपकार	(घ) अभिशाप
-----------	----------	-----------	------------
  - (3) किस शब्द में 'अप' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?
 

(क) अवसर	(ख) अवज्ञा	(ग) अवगुण	(घ) अवनति
----------	------------	-----------	-----------
  - (4) किस शब्द में 'स' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?
 

(क) सत्कार	(ख) सपूत	(ग) सहर्ष	(घ) सजातीय
------------	----------	-----------	------------
  - (5) किस शब्द में 'वि' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?
 

(क) विदेश	(ख) विपक्ष	(ग) विख्यात	(घ) विमान
-----------	------------	-------------	-----------
4. निम्नलिखित उपसर्गों में प्रयुक्त उपसर्गों के सही विकल्प का चयन कीजिए :
  - (1) संयोग-
 

(क) सन	(ख) सन्	(ग) सम	(घ) सम्
--------	---------	--------	---------
  - (2) पुनर्विवाह-
 

(क) पुनः	(ख) पुनर	(ग) पुनर्	(घ) पुन
----------	----------	-----------	---------
  - (3) अपव्यय-
 

(क) अप	(ख) अ	(ग) अपि	(घ) अप्
--------	-------	---------	---------

## प्रत्यय द्वारा शब्द संरचना :

- ऐसे शब्दांश जो शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं और उनके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं वे प्रत्यय कहलाते हैं जैसे-  
चाचा + ई = चाची  
लड़ + आई = लड़ाई  
दया + आलु = दयालु
- उपर्युक्त उदाहरणों में 'चाचा', 'लड़' और 'दया' शब्दों में क्रमशः 'ई', 'आई', तथा 'आलु' शब्दांशों का प्रयोग करके नए शब्द बनाए गए हैं। अतः यहाँ 'ई', 'आई' तथा 'आलु' प्रत्यय हैं।
- प्रत्यय के भेद :  
प्रत्यय के मुख्य रूप से दो भेद किए जा सकते हैं:  
(1) कृत् प्रत्यय और  
(2) तद्धित प्रत्यय  
अब, इन प्रत्ययों के बारे में समझेंगे।

(1) कृत प्रत्यय :

- जो प्रत्यय क्रिया के धातु रूप के पीछे जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें कृत प्रत्यय कहा जाता है।
- हिन्दी में मुख्य रूप से कर्तृवाचक, कर्मवाचक, करणवाचक, भाववाचक और क्रियावाचक कृत प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

(1) **कर्तृवाचक कृत प्रत्यय** : जिस प्रत्यय से कार्य करनेवालों अर्थात् 'कर्ता' का बोध हो, उन्हें कर्तृवाचक कृत प्रत्यय कहा जाता है। कर्तृवाचक कृत प्रत्यय के उदाहरण निम्नांकित हैं :

कर्तृवाचक कृत प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बने शब्द
अक्कड़	पी, धूम, भूल	पिवक्कड़, घुमक्कड़, भुलक्कड़
आक	तैर	तैराक
आका	लड़, उड़	लड़ाका, उड़ाका
आडी	खेल	खिलाडी
इयल	मर, अड़	मरियल, अड़ियल
ऊ	खा, कमा, चल, बिक	खाऊ, कमाऊ, चलाऊ, बिकाऊ
एरा	लूट, कमा	लुटेरा, कमेरा

(2) **कर्मवाचक कृत प्रत्यय** : जिस प्रत्यय से कर्म का बोध करानेवालों का बोध होता है उसे कर्मवाचक कृत प्रत्यय कहा जाता है। कर्मवाचक कृत प्रत्यय के उदाहरण निम्नांकित हैं:

कर्मवाचक कृत प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बने शब्द
औना	बिछ, खेल	बिछौना, खिलौना
ना	गा, ओढ़	गाना, ओढ़ना
नी	ओढ़, सूँघ	ओढ़नी, सूँघनी

(3) **करणवाचक कृत प्रत्यय** : जो प्रत्यय क्रिया के करण-रूप (क्रिया के साधन) रूप बनाते हैं, उन्हें करणवाचक कृत प्रत्यय कहते हैं। करणवाचक कृत प्रत्यय के उदाहरण निम्नांकित हैं:

करणवाचक कृत प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बने शब्द
आ	धेर, झूल	धेरा, झूला
ई	फाँस, बुहार, रेत	फाँसी, बुहारी, रेती
ऊ	झाड़	झाड़ू
न	बेल, ढक, झाड़	बेलन, ढक्कन, झाड़न
नी	कतर, सूँघ, ओढ़	कतरनी, सूँघनी, ओढ़नी

(4) **भाववाचक कृत प्रत्यय** : जिन प्रत्ययों से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं, उन्हें भाववाचक कृत प्रत्यय कहते हैं। भाववाचक कृत प्रत्यय के उदाहरण निम्नांकित हैं:

भाववाचक कृत प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बने शब्द
आई	उतर, बुन, धो, पढ़, सी, लड़	उतराई, बनाई, धुलाई, पढ़ाई, सिलाई, लड़ाई
आवट	लिख, दिख, मिल, गिर, बुन, सजा	लिखावट, दिखावट, मिलावट गिरावट, बुनावट, सजावट
आहट	गड़गड़, चिल्ला	गड़गड़ाहट, चिल्लाहट
आव	बह, बच, झुक	बहाव, बचाव, झुकाव
आन	उड़, थक, मिला	उड़ान, थकान, मिलान



- (5) क्रियावाचक कृत् प्रत्यय : जिन प्रत्ययों के योग से क्रियाविशेषण अव्यय अथवा विशेष प्रकार के क्रिया शब्दों का निर्माण होता है, उन्हें क्रियावाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

क्रियावाचक कृत् प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
ता	चल, खा, पी, लिख	चलता, खाता, पीता, लिखता
या	खा, रो, दिखा, सजा	खाया, रोया, दिखाया, सजाया
कर	सुन, पढ़, लिख, आ	सुनकर, पढ़कर, लिखकर, आकर
ते-ते	चल, सुन	चलते-चलते, सुनते-सुनते

- (2) तद्धित प्रत्यय :

- जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा अव्यय के अंत में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

शब्द	प्रत्यय	प्रत्यय के योग से बना शब्द
कला (संज्ञा)	कार	कलाकार
मीठा (विशेषण)	आस	मिठास
अपना (सर्वनाम)	पन	अपनापन
बाहर (प्रत्यय)	ई	बाहरी

- तद्धित प्रत्यय के विभिन्न भेद एवं उनके उदाहरण इस प्रकार हैं।

- (1) स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय : जिन तद्धित प्रत्ययों के योग से शब्द स्त्रीलिंगवाची बन जाते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग वाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

स्त्रीलिंग वाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
ई	चाचा, लड़का	चाची, लड़की
इन	धोबी, लुहार	धोबिन, लुहारिन
आ	शिष्य, बाल	शिष्या, बाला
आनी	देवर, नौकर	देवरानी, नौकरानी
नी	शेर, मोर	शेरनी, मोरनी
आइन	बाबू, पंडा	बबुआइन, पंडाइन
इया	बूढ़ा, बंदर	बुढ़िया, बंदरिया
इनी	तपस्वी, हाथी	तपस्विनी, हथिनी

- (2) कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय : जिन तद्धित प्रत्ययों के योग से किसी कार्य के करनेवाले का बोध होता है, वे कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे-

कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
गर	जादू, बाजी	जादूगर, बाजीगर
वाला	दुकान, दूध	दुकानवाला, दूधवाला
आरी	भीख	भिखारी
कार	चित्र, पत्र	चित्रकार, पत्रकार
ई	तेल, रोग	तेली, रोगी
एरा	लुट	लुटेरा

- ( 3 ) **स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय** : जिन तद्धित प्रत्ययों से स्थान का बोध हो, उन्हें स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
इया	जयपुर, मुंबई	जयपुरिया, मुंबइया
वाला	दिल्ली, मथुरा	दिल्लीवाला, मथुरावाला
ई	बंगाल, गुजरात	बंगाली, गुजराती
वी	लुधियाना, लखनऊ	लुधियानवी, लखनवी

- ( 4 ) **गुणवाचक तद्धित प्रत्यय** : जिन तद्धित प्रत्ययों से किसी वस्तु या प्राणी या व्यक्ति के गुण या विशेषता का बोध हो, उसे गुणवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

गुणवाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
आ	प्यास, ठंड	प्यासा, ठंडा
ई	क्रोध, कीमत	क्रोधी, कीमती
ईय	दर्शन, प्रार्थना	दर्शनीय, प्रार्थनीय
ईला	रंग, शर्म	रंगीला, शर्मीला
इक	धर्म, दिन	धार्मिक, दैनिक
लु	दया, श्रद्धा	दयालु, श्रद्धालु
वान	धन, गुण	धनवान, गुणवान
ईन	रंग, नमक	रंगीन, नमकीन
ईय	जाति, राष्ट्र	जातीय, राष्ट्रीय
वती	गुण, बल	गुणवती, बलवती
मती	बुद्धि, रूप	बुद्धिमती, रूपमती
ऐला	विष, वन	विषैला, वनैला
इल	स्वप्न, स्नेह	स्वप्निल, स्नेहिल
अंत	सुख, दुःख	सुखांत, दुःखात
इत	हर्ष, धृणा	हर्षित, धृणित

- ( 5 ) **भाववाचक तद्धित प्रत्यय** : जिन तद्धित प्रत्ययों के योग से भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण होता है, उन्हें भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

भाववाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
ता	मनुष्य, मित्र	मनुष्यता, मित्रता
त्व	देव, व्यक्ति	देवत्व, व्यक्तित्व
आपा	बूढ़ा, पूजा	बुढ़ापा, पुजापा
पन	लड़का, बच्चा	लड़कपन, बचपन
ई	बीमार, चालाक	बीमारी, चालाकी
आई	अच्छा, कंबा	अच्छाई, लंबाई
इमा	काला, लाल	कालिमा, लालिमा
आहट	चिकना, कडुवा	चिकनाहट, कडुवाहट
इयत	इन्सान, हैवान	इन्सानियत, हैवानियत

- (6) **बहुवचनवाचक तद्धित प्रत्यय** : जिन तद्धित प्रत्ययों के योग से बहुवचनवाची शब्दों का निर्माण होता है, उन्हें बहुवचनवाचक तद्धित प्रत्यय कहा जाता है। जैसे-

बहुवचनवाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
एँ	कन्या, लता	कन्याएँ, लताएँ
याँ	बहू, वधू	बहुएँ, वधुएँ
इयाँ	चिड़िया, गुड़िया	चिड़ियाँ, गुड़ियाँ
	नदी, दवाई	नदियाँ, दवाईयाँ

- (7) **संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय** : जिन तद्धित प्रत्ययों से किसी संबंधवाची शब्द का निर्माण होता है, उन्हें संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
एरा	मामा, मौसा	ममेरा, मौसेरा
आल	ससुर, नाना	ससुराल, ननिहाल
एय	राधा, कुंती	राधेय, कौंतेय

- (8) **लघुतावाची तद्धित प्रत्यय** : जिन तद्धित प्रत्ययों से लघुतावाची शब्दों का निर्माण होता है, उन्हें लघुतावाची तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
इया	खाट, डिब्बा	खटिया, डिबिया
ई	रस्सा, टोकरा	रस्सी, टोकरी
री	कोठा, छाता	कोठरी, छतरी
ड़ी	संदूक, पंख	संदूकड़ी, पंखुड़ी
टी	लंगोटी	लंगोटी

- (9) क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय : जिन तद्धित प्रत्ययों के जुड़ने से क्रमवाची शब्दों का निर्माण होता है, उन्हें क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
वाँ	नौ, दस	नौवाँ, दसवाँ
हरा	एक, दो	इकहरा, दोहरा
गुना	दो, तीन	दोगुना, तिगुना

### स्वाध्याय

- प्रत्यय किसे कहते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
- किन्हीं चार प्रत्यय चुनकर उन प्रत्ययों के योग से बने दो-दो शब्द बनाइए।
- उपसर्ग और प्रत्यय का भेद स्पष्ट कीजिए।
- सही विकल्प चुनिए।
  - किस शब्द में 'एरा' प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ है?
 

(क) चचेरा	(ख) ममेरा	(ग) सवेरा	(घ) फुफेरा
-----------	-----------	-----------	------------
  - किस शब्द में 'ता' प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ है?
 

(क) पशुता	(ख) सुंदरता	(ग) भिन्नता	(घ) तोता
-----------	-------------	-------------	----------
  - किस शब्द में 'नी' प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ है?
 

(क) चीनी	(ख) शेरनी	(ग) जाटनी	(घ) सिंहनी
----------	-----------	-----------	------------
- निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों के सही विकल्पों का चयन कीजिए :
  - संदूकड़ी:
 

(क) कड़ी	(ख) ड़ी	(ग) ई	(घ) अड़ी
----------	---------	-------	----------
  - देवरानी:
 

(क) आनी	(ख) नी	(ग) ई	(घ) रानी
---------	--------	-------	----------
  - सजावट:
 

(क) ट	(ख) आहट	(ग) वट	(घ) आवट
-------	---------	--------	---------
  - पुजारिन:
 

(क) इन	(ख) आइन	(ग) अन	(घ) रिन
--------	---------	--------	---------



तुलसीदास

(जन्म: 1532 ई. : निधन: सन् 1623 ई.)

भक्त चूड़ामणि, लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास हिंदी के शीर्ष कवि के रूप में ख्यात हैं। आपका जन्मस्थान-राजपुर, जि. बाँदा (उत्तर प्रदेश) माना गया है। आपके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। बाल्यावस्था में आपको माता-पिता का सुख प्राप्त नहीं हुआ। बाबा नरहरिदास ने आपको अपने पास रखा। इन्हीं के साथ गोस्वामीजी ने वर्षों तक काशी, अयोध्या और चित्रकूट में रहकर वेद, वेदांग, इतिहास-पुराण, दर्शन का गहन अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त किया। बाबा नरहरिदास ने ही राम-नाम की दीक्षा दी थी। कहते हैं कि पत्नी रत्नावली की भर्त्सना के बाद आप रामभक्ति की ओर उन्मुख हुए। बाद में तो आप राम के परम भक्त बन गए। आपकी रचनाओं का संबंध प्रधान रूप में राम से है। वज्र और अवधी दोनों भाषाओं में आपने काव्य रचे हैं। अपने समय की प्रचलित प्रधान काव्यशैलियों में आपने रामसाहित्य का सृजन किया है। इस नाते तुलसी को अपने समय का प्रतिनिधि कवि भी कहा गया है। 'रामचरित मानस' आपका श्रेष्ठ ग्रंथ है। भारत की जनता में राम को ईश्वर रूप में जो मान्यता प्राप्त है, उसका श्रेय तुलसी को ही दिया जा सकता है। 'रामचरित मानस' को धर्मग्रंथ भी माना जाता है। 'रामचरितमानस', 'विनयपत्रिका', 'कवितावली', 'गीतावली', 'दोहावली', 'श्रीकृष्ण गीतावली', 'बरवै रामायण', 'जानकी मंगल', 'पार्वती मंगल', 'रामाज्ञा प्रश्नावली', 'रामलला नहछू' तथा 'वैराग्यसंदीपनि' आपकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

अहं अथवा घमंड जीवन में उत्पन्न होनेवाली अनेकानेक समस्याओं का कारण हुआ करता है। यदि व्यक्ति अपने अहं का नाश कर विनय को धारण कर सके तो वह जीवन में अनेक संकटों से बच सकता है। इन पदों में तुलसीदास ने अपने आराध्य देव राम के प्रति अपनी विनय भावना का प्रदर्शन करते हुए आराध्य को छोड़कर अन्यत्र न जाने का निश्चय व्यक्त किया है। एक भक्त की यह विनय भावना यदि आज के व्यक्ति अपने जीवन में उतार सकें तो संघर्षों की धूप में झुलसते हुए संसार के प्राणों को एक नई चेतना मिल सकती है।

( 1 )

जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे।

काको नाम पतितपावन जग, केहि अति दीन पियारे ॥  
कौने देव बराई बिरदहित हठि-हठि अधम उधारे ॥  
खग, मृग, ब्याध, पषान, बिटप जड़, जवन कवन सुर तारे ॥  
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज, सब मायाबिबस बिचारे ॥  
तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे ॥

( 2 )

तू दयालू, दीन हों, तू दानि, हों भिखारी।  
हों प्रसिद्ध पातकी, तू पापपुंजहारी ॥  
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसो ?  
मो समान आरत नहि, आरतिहर तोसो ॥  
बह्ना तू, हों जीव, तू ठाकुर, हों चैरो।  
तात, मात, गुरु, सखा तू सब बिधि हितु मेरो ॥  
तोहिं मोहिं नाते अनेक मानिए जो भावै।  
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु! चरन-सरन पावै ॥

('विनयपत्रिका')

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**पतितपावन** पापियों का उद्धार करनेवाला ईश्वर **बराई** बड़प्पन, श्रेष्ठता, महिमा **बिरद** बड़ाई **अधम** पापी, दुष्ट, नीच, निकृष्ट **उधारना** उद्धार करना **दनुज** राक्षस, असुर **मुनि** तपस्वी, त्यागी **नाग** सर्प, **मनुज** मनुष्य **अपनपौ** अपनापन **पातकी** पापी **अनाथ** जिसकी रक्षा करनेवाला कोई न हो, अशरणा, असहाय **आरत** दुःखी **चेरो** दास

## विशेष-समज

**खग** : जटायु, रामायण का एक प्रसिद्ध गिद्ध । वह सूर्य के सारथी अरुण का पुत्र था। सीताहरण के समय इसने रावण से युद्ध किया और वह घायल हुआ था। राम का सीताहरण का समाचार देने के बाद प्राण छोड़े।

**मृग** : मारीच, एक राक्षस जो ताड़का राक्षसी का पुत्र तथा रावण का अनुचर था। वह सुवर्णमृग के रूप में राम द्वारा मारा गया था।

**व्याध** : वाल्मीकि, पहले हिंसावृत्ति से जीवन यापन करते थे, परंतु बाद में सनकादि ऋषियों के उपदेश से जीवहिंसा छोड़कर तपस्या में लगे और महर्षि वाल्मीकि कहलाए। इन्होंने रामायण की रचना की।

**पषान** : अहल्या, महर्षि गौतम की पत्नी। शापवश वह पथर बन गई थी। राम के चरणों के स्पर्श से इसका उद्धार हुआ।

**बिटप** : यमलार्जुन, कुबेर के पुत्र नलकुबेर और मणिग्रीव नारद के शापवश गोकुल में दो अर्जुन वृक्षों के रूप में उत्पन्न हुए। किसी अपराध पर जब यशोदा ने कृष्ण को इन पेड़ों से बाँधा तो वे गिर पड़े और उनका उद्धार हो गया।

**जवन** : एक यवन। कहा जाता है कि एक मुसलमान ने सूकर के आघात से मरते समय 'हराम' शब्द कहा था। अनजाने में ही 'राम' शब्द का उच्चारण करने से उसकी मुक्ति हो गई।

## स्वाध्याय

### 1. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- (1) तुलसीदास के मत से कौन पतितपावन हैं?
- (2) भगवान को अति दीन कैसे लगते हैं?
- (3) भगवान ने हठ करके किनका उद्धार किया?
- (4) माया के प्रति विवश होकर कौन-कौन सोचते हैं?
- (5) प्रभु दानी है तो कवि क्या है?
- (6) कवि पापपुंजहारी किसे कहते हैं?

### 2. विस्तार सहित उत्तर लिखिए :

- (1) तुलसीदासजी प्रभु के चरणों को छोड़कर कहीं ओर क्यों नहीं जाना चाहते हैं?
- (2) तुलसीदास ने अपने और भगवान के बीच कौन-कौन से संबंध जोड़े हैं? क्यों?
- (3) 'तोहि-मोहि नाते अनेक, मानिए जो भावे' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

3. भावार्थ स्पष्ट कीजिए :
- (1) देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज, सब मायाबिबस बिचारे।  
तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे ॥
  - (2) नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोंसो ?  
मो समान आरत नहि, आरतिहर तोसो ॥
4. समानार्थी शब्द लिखिए।  
अधम, दनुज, मनुज, पातकी, आरत, चैरो
5. शब्दसमूह के लिए एक शब्द दीजिए।
- (1) पापियों का उद्धार करनेवाला ईश्वर
  - (2) जिसकी रक्षा करनेवाला कोई न हो

#### योग्यता-विस्तार

- काव्यमें दिये गए पत्रों से जुड़े प्रसंगों की विस्तृत जानकारी प्राप्त कीजिए।

#### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- तुलसीदासजी के जीवन और साहित्य सर्जन के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त कीजिए।
- तुलसीदासजी का चलचित्र में प्रसिद्ध एक पद खोजिए और उसको गाकर कक्षा में सुनाइए।

#### शिक्षक-प्रवृत्ति

- तुलसीदास के चित्र प्राप्त करके छात्रों से उनके जीवन और कवन के चार्टस तैयार करवाइए।



भारतेन्दु हरिश्चंद्र

(जन्म: 1850 ई. : निधन: सन् 1885 ई.)

भारतेन्दु हरिश्चंद्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। वे हिन्दी में आधुनिकता के पहले रचनाकार थे। इनका मूल नाम 'हरिश्चंद्र' था। 'भारतेन्दु' उनकी उपाधि थी। हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारंभ भारतेन्दु हरिश्चंद्र से माना जाता है। भारतीय नवजागरण के अग्रदूत के रूप में प्रसिद्ध भारतेन्दुजी ने देश की गरीबी, पराधीनता, शासकों के अमानवीय शोषण के चित्रण को ही अपने साहित्य का लक्ष्य बनाया। हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में उन्होंने अपनी प्रतिभा का उपयोग किया। भारतेन्दु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिन्दी पत्रकारिता, नाटक और काव्य के क्षेत्र में उनका बहुमूल्य योगदान रहा। हिन्दी में नाटकों का प्रारंभ भारतेन्दु हरिश्चंद्र से माना जाता है। भारतेन्दुने हिन्दी नाटक की नींव को सुदृढ़ बनाया। उन्होंने 'हरिश्चंद्र पत्रिका', 'कवि वचन सुधा' और 'बाल प्रबोधिनी' पत्रिकाओं का संपादन भी किया। वे एक उत्कृष्ट कवि, सशक्त, व्यंगकार सफल नाटककार, जागरूक पत्रकार तथा ओजस्वी गद्यकार थे। इसके अलावा वे लेखक, कवि, संपादक, निबंधकार, एवं कुशल वक्ता भी थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ 'भारतेन्दुकला' वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' 'सत्य हरिश्चंद्र', 'भारत दुर्दशा', 'अंधेरे नगरी' (नाट्य साहित्य) 'पूर्ण प्रकाश', 'चंद्रप्रभा' (उपन्यास) 'स्त्रियों की उत्पत्ति', 'बादशाह दर्पण', (नाट्यशास्त्र) 'कश्मीर कुसुम', 'रामायण का समय' (शोध रचना) 'सुंदरी सिलक', 'पावस कवितासंग्रह' (काव्य) आदि। भारतेन्दुजी ने मात्र 34 वर्ष की अल्पायु में ही विशाल साहित्य की रचना की। पैंतीस वर्ष की आयु में उन्होंने मात्रा और गुणवत्ता की दृष्टि से इतना लिखा, इतनी दिशाओं में काम किया कि उनका समुचा रचनाकर्म पथदर्शक बन गया। आपका महान साहित्यिक कर्म देवीशक्ति से प्रेरित ही माना जायेगा।

प्रस्तुत एकांकी में महंत और उनके दो शिष्य एक नगरी में पहुँचते हैं, जहाँ मूर्ख राजा और मूर्ख प्रजा से उनका पाला पड़ता है। नगरी में सर्वत्र अज्ञान का अंधकार था। अनुशासन रहित विवेकहीन प्रजा में किसी से प्रेम, आत्मियता का नामोनिशान दिखाई नहीं देता था। अच्छे-बुरे में अंतर नहीं, सच और झूठ का ज्ञान नहीं, भाजी का मूल्य और खाजे का मूल्य एक टका। 'यथा राजा तथा प्रजा' कहावत के अनुसार राजा भी मूर्ख और प्रजा भी मूर्ख, ऐसे लोग अपनी मूर्खता के कारण अपने विनाश का कारण बन जाते हैं। 'अंधेरे नगरी' एकांकी से लेखक पाठकों को इसी अविवेकी अज्ञानी वृत्ति से परिचित करवाकर इससे बचे रहने की प्रेरणा देते हैं।

### पात्र-परिचय

महंत

नारायणदास : महंत के शिष्य

गोवर्धनदास : महंत के शिष्य

चौपट राजा : अंधेरे नगरी का राजा

कुँजड़िन, हलवाई, फ़रियादी, कल्लू बनिया, कारीगर,

चूनेवाला, भिस्ती, कसाई, गड़रिया, कोतवाल, सिपाही आदि।

पहला दृश्य

(स्थान : शहर से बाहर सड़क; महंतजी और दो चले बातें कर रहे हैं।)

महंत : बच्चा नारायणदास, यह नगर तो दूर से बड़ा सुंदर दिखाई पड़ता है। देख, कुछ भिक्षा मिले तो भगवान को भोग लगे और क्या!

नारायणदास : गुरुजी महाराज, नगर तो बहुत ही सुंदर है, पर भिक्षा भी सुंदर मिले तो बड़ा आनंद हो!

महंत : बच्चा गोवर्धनदास, तू पश्चिम की ओर जा और नारायणदास पूर्व की ओर जाएगा।  
(गोवर्धनदास जाता है।)

गोवर्धनदास : (कुँजड़िन से) क्यों, भाजी क्या भाव?

कुँजड़िन : बाबा जी, टके सेर!

गोवर्धनदास : सब भाजी टके सेर! वाह, वाह! बड़ा आनंद है। यहाँ सभी चीजें टके सेर।

(हलवाई के पास जाकर) क्यों भाई, मिठाई क्या भाव?

हलवाई : टके सेर!

गोवर्धनदास : वाह, वाह! बड़ा आनंद है। सब टके सेर क्यों, बच्चा? इस नगरी का नाम क्या है?

हलवाई : अंधेरी नगरी।



गोवर्धनदास : और राजा का नाम क्या है ?

हलवाई : चौपट राजा।

गोवर्धनदास : वाह, वाह!

अंधेर नगरी, चौपट राजा।

टके सेर भाजी, टके सेर खाजा॥

हलवाई : तो बाबाजी, कुछ लेना हो तो ले लें!

गोवर्धनदास : बच्चा, भिक्षा माँगकर सात पैसा लाया हूँ, साढ़े तीन सैर मिठाई दे दे।

(महंतजी और नारायणदास एक ओर से आते हैं और दूसरी ओर से गोवर्धनदास आता है।)

महंत : बच्चा गोवर्धनदास, क्या भिक्षा लाया, गठरी तो भारी मालूम पड़ती है!

गोवर्धनदास : गुरुजी महाराज, सात पैसे भीख में मिले थे, उसी से साढ़े तीन सेर मिठाई मोल ली है।

महंत : बच्चा, नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सब चीजें टके सेर मिलती हैं तो मैंने इसकी बात पर विश्वास नहीं किया। बच्चा, यह कौन-सी नगरी है और इसका राजा कौन है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा मिलता है ?

गोवर्धनदास : अंधेरी नगरी, चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा ।

महंत : तो बच्चा, ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा बिकता है। मैं तो इस नगर में अब एक क्षण भी नहीं रहूँगा।

गोवर्धनदास : गुरुजी, मैं तो इस नगर को छोड़कर नहीं जाऊँगा और जगह जगह दिन भर माँगो तो भी पेट नहीं भरता। मैं तो यहीं रहूँगा।

महंत : देख, मेरी बात मान, नहीं तो पीछे पछताएगा। मैं तो जाता हूँ पर इतना कहे जाता हूँ कि कभी संकट पड़े तो याद करना। (यह कहते हुए महंत चले जाते हैं।)

### दूसरा दृश्य

(राजा, मंत्री और नौकर लोग यथास्थान बैठे हैं। परदे के पीछे से 'दुहाई है' का शब्द होता है।)

राजा : कौन चिल्लाता है, उसे बुलाओ तो।

(दो नौकर एक फरियादी को लाते हैं।)

फरियादी : दुहाई, महाराज, दुहाई!

राजा : बोलो, क्या हुआ ?

फरियादी : महाराज, कल्लू बनिए की दीवार गिर पड़ी, सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गई। न्याय हो।

राजा : कल्लू को पकड़कर लाओ!

(नौकर लोग दौड़कर बाहर से बनिए को पकड़ लाते हैं।)

राजा : क्यों रे बनिए, इसकी बकरी दबकर मर गई ?

कल्लू बनिया : महाराज, मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगर ने ऐसी दीवार बनाई कि गिर पड़ी।

राजा : अच्छा कल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ।

(कल्लू जाता है। नौकर कारीगर को पकड़ लाते हैं।)

राजा : क्यों रे कारीगर, इसकी बकरी कैसे मर गई ?

कारीगर : महाराज, चूनेवाले ने चूना ऐसा खराब बनाया कि दीवार गिर पड़ी।

राजा : अच्छा, उस चूनेवाले को बुलाओ।

(कारीगर निकाला जाता है। चूनेवाले को पकड़कर लाया जाता है।)

राजा : क्यों रे चूनेवाले, इसकी बकरी कैसे मर गई ?

- चूनेवाला** : महाराज, भिश्ती ने चूने में पानी ज्यादा डाल दिया, इसी से चूना कमजोर हो गया।
- राजा** : तो भिश्ती को पकड़ो।  
(भिश्ती को लाया जाता है।)
- राजा** : क्यों रे भिश्ती, इतना पानी क्यों डाल दिया कि दीवार गिर पड़ी और बकरी दबकर मर गई?
- भिश्ती** : महाराज, गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मशक इतनी बड़ी बना दी थी कि उसमें पानी ज्यादा आ गया।
- राजा** : अच्छा, भिश्ती को निकालो, कसाई को लाओ!  
(नौकर भिश्ती को निकालते हैं और कसाई को लाते हैं।)
- राजा** : क्यों रे कसाई, तूने ऐसी मशक क्यों बनाई?
- कसाई** : महाराज, गड़रिए ने टके की ऐसी बड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची कि मशक बड़ी बन गई।
- राजा** : अच्छा, कसाई को निकालो, गड़रिए को लाओ!  
(कसाई निकाला जाता है, गड़रिया लाया जाता है।)
- राजा** : क्यों रे गड़रिए, ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेची?
- राजा** : महाराज, उधर से कोतवाल की सवारी आई, भीड़-भाड़ के कारण मैंने छोटी-बड़ी भेड़ का ख्याल ही नहीं किया। मेरा कुछ कसूर नहीं।
- राजा** : इसको निकालो, कोतवाल को पकड़कर लाओ।  
(कोतवाल को पकड़कर लाया जाता है।)
- राजा** : क्यों रे कोतवाल, तूने सवारी धूम-धाम से क्यों निकाली कि गड़रिए ने घबराकर बड़ी भेड़ बेच दी?
- कोतवाल** : महाराज, मैंने कोई कसूर नहीं किया।
- राजा** : कुछ नहीं! ले जाओ, कोतवाल को अभी फाँसी दे दो!  
(सभी कोतवाल को पकड़कर ले जाते हैं।)

### तीसरा दृश्य

(गोवर्धनदास बैठा मिठाई खा रहा है।)

- गोवर्धनदास** : गुरुजी ने हमको बेकार यहाँ रहने को मना किया था। माना कि देश बहुत बुरा है पर अपना क्या! खाते-पीते मस्त पड़े हैं।  
(चार सिपाही चार ओर से आकर उसको पकड़ लेते हैं।)
- सिपाही** : चल बे चल, मिठाई खाकर खूब मोटा हो गया। आज मजा मिलेगा!
- गोवर्धनदास** : (घबराकर) अरे, यह आफत कहाँ से आई? अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो मुझे पकड़ते हो?
- सिपाही** : बात यह है कि कल कोतवाल को फाँसी का हुक्म हुआ था। जब उसे फाँसी देने को ले गए तो फाँसी का फंदा बड़ा निकला, क्योंकि कोतवाल साहब दुबले-पतले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज की। इस पर हुक्म हुआ कि किसी मोटे आदमी को फाँसी दे दो क्योंकि बकरी मरने के अपराध में; किसी-न-किसी को सजा होनी जरूरी है, नहीं तो न्याय न होगा।
- गोवर्धनदास** : दुहाई परमेश्वर की! अरे, मैं नाहक मारा जाता हूँ। अरे, यहाँ बड़ा ही अंधेर है। गुरुजी, आप कहाँ हो? आओ मेरे प्राण बचाओ।  
(गोवर्धनदास चिल्लाता है। सिपाही उसे पकड़कर ले जाते हैं।)
- गोवर्धनदास** : हाय, बाप रे ! मुझे बेकसूर ही फाँसी देते हैं।
- सिपाही** : अबे चुप रह, राजा का हुक्म भला कहीं टल सकता है।
- गोवर्धनदास** : हाय, मैंने गुरुजी का कहना न माना, उसी का यह फल है। गुरुजी, कहाँ हो? बचाओ, गुरुजी।  
गुरुजी!

- महंत** : अरे बच्चा गोवर्धनदास, तेरी यह क्या स्थिति है ?
- गोवर्धनदास** : (हाथ जोड़कर) गुरुजी, दीवार के नीचे बकरी दब गई, जिसके लिए मुझे फाँसी दी जा रही है। गुरुजी, बचाओ!
- महंत** : कोई चिंता नहीं। (भौंह चढ़ाकर सिपाहियों से) सुनो, मुझे अपने शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो। (सिपाही उसे थोड़ी देर के लिए छोड़ देते हैं। गुरुजी चले को कान में कुछ समझाते हैं।)
- महंत** : नहीं बच्चा, हम बूढ़े हैं, हमको चढ़ने दे।  
(इस प्रकार दोनों बहस करते हैं। सिपाही परस्पर चकित होते हैं। राजा, मंत्री और कोतवाल आते हैं।)
- राजा** : यह क्या गोल-माल है ?
- सिपाही** : महाराज, चेला कहता है, मैं फाँसी चढ़ूँगा और गुरु कहता है, मैं चढ़ूँगा। कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है!
- राजा** : (गुरु से) बाबाजी, बोलो, आप फाँसी क्यों चढ़ना चाहते हैं ?
- महंत** : राजा, इस समय ऐसी शुभ घड़ी में जो मरा, सीधा स्वर्ग जाएगा।
- मंत्री** : तब तो हम फाँसी चढ़ेंगे।
- गोवर्धनदास** : नहीं, हम। हमको हुक्म है!
- कोतवाल** : हम लटकेंगे! हमारे कारण से तो दीवार गिरी।
- राजा** : चुप रहो सब लोग! राजा के जीते जी और कौन स्वर्ग जा सकता है। तो हमको फाँसी चढ़ाओ, जल्दी-जल्दी करो!  
(राजा को नौकर लोग फाँसी पर लटका देते हैं। परदा गिरता है।)
- (‘चुने हुए बाल एकांकी’)

### शब्दार्थ-टिप्पणी

**महंत** मंदिर का बड़ा पुजारी **कुंजडिन** तरकारी बेचनेवाली स्त्री **खाजा** एक प्रकार की मिठाई **भिश्ती** मशक में भरकर पानी ढोनेवाला **गड़रिया** भेड़, बकरी पालनेवाला **नाहक** व्यर्थ **टके सेर** टका (पुराने दो पैसों के बराबर का एक सिक्का) काफी सस्ता **मशक** चमड़े की खाल का बड़ा थैला **दुहाई** न्याय के लिए की गई पुकार या प्रार्थना **सबब** कारण **कसूर** दोष **हुजत** दलील, तकरार, बहस **फरियादी** न्याय माँगनेवाला

### मुहावरा

**मोल लेना** दाम देकर खरीदना

### कहावत

अंधेरी नगरी चौपट राजा कर्तव्यभ्रष्ट शासक के राज्य में सदा **टके सेर भाजी**, **टके सेर खाजा**,... अर्थात्... जहाँ अव्यवस्था तथा लूट-खसोट का बोल-बाला रहता है।

### स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो वाक्यों में उत्तर लिखिए:  
(1) महंत ने नगर की असलियत जानने पर क्या फैसला लिया ?

- (2) अंधेरी नगरी में भाजी और खाजा किस भाव से बिकता था ?
- (3) कसाई ने भेड़ किससे मोल ली थी ?
- (4) महंत ने गोवर्धनदास को क्या सलाह दी थी ?
- (5) राजा फाँसी चढ़ाने को क्यों तैयार हो गया ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- (1) गोवर्धनदास ने खुश होकर अंधेरी नगरी में ही रहने का फैसला क्यों लिया ?
- (2) बकरी की मौत के लिए किस-किसको अपराधी ठहराया गया ? राजा ने किसे-किसे और क्यों फाँसी चढ़ाने का फैसला किया ?
- (3) गोवर्धनदास पर पछ्ताने की बारी क्यों आ गई ?
- (4) महंत गोवर्धनदास की जान बचाने में सफल कैसे हो गए ?
- (5) पाठ को 'अंधेरी नगरी' शीर्षक क्यों दिया गया ?

3. आशय स्पष्ट कीजिए :

- (1) अंधेरी नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।
- (2) राजा के जीतेजी और कौन स्वर्ग जा सकता है ? हमको फाँसी चढ़ाओ, जल्दी करो।

4. सही शब्द चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :

- (1) महंत अंधेरी नगरी में ..... रहना नहीं चाहते ? (यथासमय, क्षणभर)
- (2) मंत्री और नौकर लोग ..... बैठे हैं। (इकट्ठा, यथास्थान)
- (3) कोतवाल तूने ..... धूमधाम से क्यों निकाली ? (मीठाई, सवारी)
- (4) मुझे अपने ..... को अंतिम उपदेश देने दो।
- (5) शुभघड़ी में जो मरा, सीधा..... जाएगा। (महल, स्वर्ग)

5. निम्नलिखित शब्दसमूह के लिए एक शब्द दीजिए :

- (1) न्याय माँगनेवाला (2) तस्कारी बेचनेवाली स्त्री
- (3) चमड़े की खाल का बड़ा थैला (4) भेड़-बकरे चरानेवाला
- (5) मीठाई बेचनेवाला

योग्यता-विस्तार

- प्रस्तुत एकांकी का मंचन कीजिए।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- 'यथा राजा तथा प्रजा' कहावत समझ कर कक्षा में अभिव्यक्त कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- भारतेन्दु, हरिश्चंद्र नाटक, अंधेरी नगरी के संवाद विद्यार्थियों के पास तैयार करवाइए और विद्यार्थी प्रार्थनासभा या शालेय अवसर पर प्रस्तुत करें।



नरपत बारहठ 'हडवेचा'

राजस्थानी संस्कृति के शोधकर्ता नरपत बारहठ 'हडवेचा' ने एम.ए.बी.एड. की उपाधि प्राप्त की है। जयनारायण विश्व विद्यालय, जोधपुर से वे संलग्न हैं। उनकी विशेष रुचि काज लेखन में है। वे संस्कृति के प्रवाहों और प्रवाहों को समझने में यत्नशील हैं। महापुरुषों को नमन करते हुए आपने लिखा है— जिन्होंने देशसेवा की खातिर अपना घर, परिवार छोड़कर एशो-आराम त्याग कर भूखे-प्यासे नंगे-पाँव रहकर देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए सर्वस्व कुरबान किया वे वंदनीय हैं। 'महापुरुषों की जीवनियाँ' आपकी प्रसिद्धि कृति है। इस संग्रह में कुल 60 प्रसिद्ध महापुरुष को जीवनचरित्र अंकित है। प्रस्तुत जीवनी 'महाकवि कालिदास' में कालिदास के जन्म और परिचय का एवं उनकी प्रसिद्ध साहित्यिक रचनाओं का विवरण है।

इस कृति से यह संदेश मिलता है कि किसी बच्चे को बुद्ध (मूर्ख) मानना नहीं चाहिए, क्योंकि वह मौका मिलते ही हीरे की तरह चमक सकता है।

कालिदास को हम मात्र संस्कृत के महाकवि के रूप में जानते हैं। स्वयं महाकवि कालिदास ने अपने विषय में कुछ नहीं लिखा है। हर्षचरित के शुरू में कवि बाण ने कालिदास का उल्लेख किया है। इससे पता चलता है कि कालिदास बाण से पहले हुए हैं। एक स्थान पर स्वयं कालिदास ने अपने अभिभावक के रूप में "विक्रम" नाम का उल्लेख किया है। वह कौन-सा विक्रम हैं, इस बात का अभी पूरी तरह पता नहीं चल पाया है। फिर भी उन्हीं राजा विक्रमादित्य और राजा भोज का समकालीन मानकर कितनी ही कथाओं का नायक बनाया गया है। विभिन्न भाषाओं में पहेलियों और लोककथाओं में उनकी विद्वता, कविता और चमत्कारिक प्रसंगों का वर्णन मिलता है।

#### जन्म और परिचय :

कुछ विद्वानों ने कालिदास का जन्म 365 ई. तथा निधन 445 ई. माना है। महाकवि कालिदास के जन्म स्थान के बारे में ठीक ठीक पता नहीं चलता। कुछ विद्वानों ने उनका जन्मस्थान उज्जयिनी (वर्तमान उज्जैन) माना है, जो सही लगता है क्योंकि मेघदूत में स्वयं कवि ने उज्जयिनी को विशेष दर्शनीय कहा है और लंबा रास्ता पड़ने पर भी उधर से जाने के लिए बादल से अनुरोध किया है।

उज्जयिनी में उन दिनों राजा विक्रमादित्य का राज्य था। वहाँ की प्रजा सब प्रकार से सुखी थी। साहित्य और कला की उन्नति चरम सीमा पर पहुँची थी। राजा विक्रमादित्य ने अपने नाम से ही विक्रम संवत् चलाया था। समय-समय पर उन्होंने सोने के जो सिक्के चलवाये थे, उनसे उनके राज्यकाल का ठीक-ठीक पता चलता है। विक्रमादित्य के शासनकाल में जितना वैभव देश में था, जितनी साहित्य तथा कला की उन्नति हुई, उतनी कभी नहीं हुई। एक से बढ़कर एक कवि, साहित्यकार और वैज्ञानिक इस युग में उत्पन्न हुए। राजा विक्रमादित्य स्वयं साहित्य और संगीत के अच्छे जानकार थे। संस्कृत भाषा की उन्नति भी इस काल में ही अधिक हुई।

अपने पूर्व जीवन में बुद्ध माने जानेवाले कालिदास विक्रमादित्य के दरबारी कवियों में सर्वश्रेष्ठ थे। कालिदास के अतिरिक्त आठ और कवि भी दरबार में थे जो नवरत्न कहलाते थे।

कालिदास के विषय में कहा जाता है कि वे युवावस्था तक निरक्षर थे। जिस डाल पर बैठते उसे ही काटते थे। निरक्षर होने पर भी वह इतने विद्वान और महाकवि किस तरह बन गये इसकी भी एक बड़ी विचित्र और रोचक कहानी है।

उन दिनों शारदानंद नाम के एक राजा थे। उनकी एक गुणवती और विद्वान पुत्री थी, जिसका नाम विद्योत्तमा था। वह बहुत सुंदर और रूपवती भी थी। उसके रूप, गुण और ज्ञान की प्रशंसा दूर-दूर के देशों तक फैली हुई थी। विद्योत्तमा को अपने रूप, गुण और ज्ञान का बड़ा घमंड था। अपने विवाह के सम्बन्ध में उसने एक घोषणा कर रखी थी कि जो उसे शास्त्रार्थ में हरा देगा उसी के साथ वह अपना विवाह करेगी।

उसकी इस घोषणा की जानकारी जैसे-जैसे पास पड़ोस के देशों तक पहुँचती गयी, वहाँ-वहाँ के विद्वान

तथा पंडित विद्योत्तमा से शास्त्रार्थ करने के लिए आने लगे, लेकिन विद्वान या पंडितों को बड़ी ग्लानि का अनुभव हो रहा था, और वे इसका बदला लेने का उपाय सोचने लगे थे। विद्वानों और पंडितों ने मिलकर तय किया कि विद्योत्तमा का विवाह किसी मूर्ख से करवा दिया जाय तो इसका घमंड टूट जाएगा और वे अपने अपमान का बदला भी ले सकेंगे। अतः अब वे ऐसे एक मूर्ख की तलाश में रहने लगे। संयोग से उन्हें एक दिन एक ऐसा ही मूर्ख युवक मिल गया। वह पेड़ की जिस डाल पर बैठा था उसे ही काट रहा था। पंडितों तथा विद्वानों को लगा कि उससे बड़ा मूर्ख और कौन होगा? इसलिए पंडितों ने उसे पेड़ से नीचे उतारा और समझा बुझाकर एक सुंदर राजकुमारी से उसका विवाह करा देने की बात कहकर तथा लालच देकर अपने साथ चलने को राजी किया। पंडितों ने उस मूर्ख युवक को यह बात अच्छी तरह समझा दी कि वह वहाँ कुछ नहीं बोलेगा और गूंगा बना रहेगा, नहीं तो उसका विवाह नहीं होगा। वह मूर्ख युवक बड़ा खुश हुआ। उसने पंडितों की बात मान ली और उनके द्वारा दिये गये अच्छे-अच्छे कपड़े पहन लिये। पंडित उसे विद्योत्तमा के पास शास्त्रार्थ के लिए ले गये।

राजकुमारी विद्योत्तमा को उस मूर्ख युवक का परिचय देते हुए पंडितों ने बताया कि ये हमारे गुरु हैं और बहुत बड़े विद्वान हैं, शास्त्रों के जानकार हैं। आपके साथ शास्त्रार्थ करने यहाँ आये हैं, लेकिन उन दिनों मौन व्रत चलने के कारण ये संकेत से ही शास्त्रार्थ करेंगे।

विद्योत्तमा पंडितों की यह छल भरी बात नहीं समझ सकी और शास्त्रार्थ के लिए तैयार हो गयी। उसने युवक को एक उँगली दिखायी जिसका भाव था कि ईश्वर एक है।

उस मूर्ख युवक ने समझा कि यह मेरी एक आँख फोड़ डालना चाहती है। उसने दो उँगलियाँ दिखाते हुए उसकी दोनों आँखें फोड़ डालने का संकेत किया। पंडितों ने इस संकेत का अर्थ विद्योत्तमा को समझाते हुए कहा- “आपके प्रश्न के उत्तर में हमारे गुरुजी का कहना है कि ईश्वर और जीव दो हैं।”

इस बार राजकुमारी विद्योत्तमा ने पाँच उँगलियाँ दिखाकर पाँचों तत्त्वों का संकेत किया। उस मूर्ख ने समझा कि वह मेरे मुँह पर तमाचा मारने का संकेत कर रही है। उसने मुट्ठी बाँधकर तमाचे का जवाब घूँसे से देने का संकेत किया। पंडितों ने इस बार भी विद्योत्तमा को इस संकेत का अर्थ बताते हुए कहा- “आपने पाँच उँगलियों से पाँच तत्त्वों का संकेत किया था, लेकिन हमारे गुरुजी का कहना है कि पाँचों तत्त्वों के मिलने से ही सृष्टि का निर्माण होता है, अलग-अलग रहने में नहीं।

इस तरह उपरोक्त शास्त्रार्थ में विद्योत्तमा ने उस मूर्ख युवक से अपनी हार मान ली और दोनों का विवाह धूम-धाम से पंडितों ने करवा दिया। एक दिन की बात है, एक ऊँट की बोली सुनकर वह मूर्ख युवक अपना मौन व्रत भूलकर यकायक बोल बैठा- उट्ट... उट्ट...।

उसको बोलते सुनकर विद्योत्तमा चौंक उठी। उसे पता चला कि उसका पति कोई विद्वान पंडित नहीं बल्कि एक बहुत बड़ा मूर्ख हैं। पंडितों की छल भरी बातों का अर्थ अब उसकी समझ में आ गया। विद्योत्तमा को बहुत मानसिक दुःख पहुँचा और उसने अपने महल में कालिदास के प्रवेश पर रोक लगा दी और द्वारबंध कर लिये। कठोर उपासना से उसे माँ काली का वरदान प्राप्त हुआ और उसे काली का दास होने के कारण कालिदास नाम प्राप्त हुआ। शीघ्र की कालिदास सारी विधाओं को सीखकर प्रवीण हो गये। राजनीति, धर्मशास्त्र और साहित्य का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर वह फिर से विद्योत्तमा के पास लौटे। द्वार तब भी बंद था। कवि ने अपने विद्वान होने के प्रमाणस्वरूप संस्कृत में द्वार खोलने के लिए विद्योत्तमा से प्रार्थना की, ‘अनावृत्त कपाट द्वार देहि।’

अंदर से पत्नी विद्योत्तमा ने पूछा, ‘अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः।’

इस पर महाकवि कालिदास ने क्रमशः- ‘कुमारसम्भव’, ‘मेघदूत’ और ‘रघुवंश’ की रचना विद्योत्तमा को सुनायी। विद्योत्तमा को जब उनके पंडित होने का विश्वास हो गया तो उसने द्वार खोलकर महाकवि का स्वागत किया।

कालिदास को हर क्षेत्र का गहरा अनुभव था। प्रकृति का जैसा वर्णन उनके साहित्य में मिलता है वैसा कहीं नहीं मिलता। उन्हें प्रकृति के बिना मनुष्यजीवन अधूरा दिखायी पड़ता था। कालिदास की उपमाएँ विश्व विख्यात हैं। उनकी कोई तुलना नहीं। उसका कोई जोड़ नहीं। चरित्रचित्रण में भी महाकवि कालिदास की तुलना नहीं की जा सकती! उनकी कोई बराबरी नहीं कर सकता। उसके पात्रों का व्यक्तित्व अपनापन लिए रहता है। हर बात बड़ी ही स्वाभाविकता से उपस्थित होती है। कालिदास अपने काव्य तथा नाटक के द्वारा बार-बार यही बताना चाहते हैं कि राजा प्रजा का शासक ही नहीं उसका रक्षक और पिता भी है। उन दिनों समाज में नारी का क्या स्थान था इस बात का पता भी हमें कवि कालिदास की रचनाओं में मिलता है। समाज में नारी को सम्मान और श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता था और उसे नृत्य, संगीत चित्रकला आदि की शिक्षा दी जाती थी।

महाकवि कालिदास के सात प्रमुख ग्रंथ हैं। उनमें से पहला ग्रंथ है 'ऋतुसंहार'। यह एक उत्तम काव्य है। इसमें कालिदास ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि का परिचय दिया है। ऋतुओं का तथा प्रकृति का जितना सुंदर चित्रण काव्य में है, उतना कालिदास के अन्य ग्रंथों में नहीं है।

'मालविकाग्निमित्र' कालिदास का दूसरा ग्रंथ और पहला नाटक है। उसमें पाँच अंक और विदिशा के राजा अग्निमित्र तथा विदर्भ की राजकुमारी मालविका की प्रेमकथा है। तीसरा ग्रंथ 'विक्रमोर्वशीयम्' कालिदास का दूसरा नाटक है, इसमें पाँच अंक हैं तथा महाराज पुरुरवा और उर्वशी की प्रेमकथा का चित्रण किया गया है। 'कुमारसम्भव' का काव्य है और इसमें शिवपार्वती के विवाह से लेकर कुमार कार्तिकेय के जन्म और उसके द्वारा तारकासुर के वध तक की कथा का वर्णन है। 'मेघदूत' कालिदास का पाँचवाँ ग्रंथ है। यह भी एक खंडकाव्य है और इसके शुरु में कालिदास ने बादल को दूत बनाकर कुबेर की नगरी अलकापुरी तक का मार्ग बताया है। इसके उत्तरार्ध में यक्ष ने अपनी विरहिणी प्रिया को पहचानने के उपाय मेघ को बताये हैं और अपना संदेश दिया है। इस काव्य में वर्षाकाल और विरह का वर्णन खूब निखरा है। इसमें भारत के भूगोल की भी अच्छी जानकारी दी गयी है।

'रघुवंश' एक महाकाव्य है। कवि कालिदास ने रघुवंश की कथा कहने से पहले ही कह दिया है कहाँ तो सूर्य से उत्पन्न हुआ यह वंश, कहाँ मोटी बुद्धिवाला। मैं तिनकों से बनी छोटी-सी नाव लेकर अपार समुद्र को पार करने की बात सोच रहा हूँ। सूर्यवंश के दिलीप से लेकर कुश और उनके अनेक उत्तराधिकारियों तक की कथा रघुवंश में है।

महाकवि कालिदास का सातवाँ और सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'। यह उनका तीसरा नाटक है और इसमें सात अंक हैं। महाकवि ने इस नाटक में राजा दुष्यन्त तथा शकुन्तला की कथा कही है। इस तरह महाकवि कालिदास आज भी हमारे संस्कृत साहित्य में अमर हैं। उनकी रचनाओं में तत्कालीन साहित्य, शासन और राजनीति, समाज और जनविश्वास, भूगोल, ललितकला, स्थापत्य आदि सभी की झलक मिलती है।

### शब्दार्थ और टिप्पणी

अभिभावक बच्चों के पारिवारिक रक्षक शास्त्रार्थ शास्त्र संबंधी चर्चा अनुरोध आदेश ग्लानि दुःख, पीड़ा संकेत इशारा यकायक सहसा निरक्षर अनपढ़ रोचक आकर्षक

### स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

- (1) कालिदास के जन्मस्थान का नाम बताइये।
- (2) मेघदूत का नायक कौन है?

- (3) 'विक्रम संवत्' का प्रारंभ किसने करवाया था?
2. निम्नलिखित प्रश्नों के तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :
- (1) कालिदास की अज्ञता किस बात से प्रकट होती है?
- (2) विद्योत्तमा का परिचय दीजिए।
- (3) महाकवि कालिदास की कृतियों के नाम दीजिए।
3. निम्नलिखित शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द लिखिए :
- (1) जिसमें सभी का हित समाया हुआ हो
- (2) विद्वानों द्वारा की जानेवाली शास्त्रों की चर्चा
- (3) विद्या में जो उत्तम हो
4. निम्नलिखित विधानों के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :
- (1) विद्योत्तमा के एक उँगली दिखाने में ..... भाव था।
- (2) सृष्टि का निर्माण ..... तत्त्वों के मेल से होता है।
- (3) ऊँट की बोली सूनकर मूर्ख युवक ..... बोल उठा।

#### योग्यता-विस्तार

- अपनी कक्षा से प्रत्येक छात्रा की अच्छाई बताने का अवसर सभी को दीजिए ।

#### शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'महाकवि कालिदास' की काव्यकला विषयक विद्वानों की प्रशस्ति - उपमा कालिदासस्य.... के बारे में जानकारी दें।
- 'कोई नीरा बुद्ध' जन्म भरके लिए नहीं होता, कठिन तपश्चर्या और मेहनत से महान बनता है, महा-कवि कालिदास के जीवन से प्राप्त संदेश बोध के रूप में दें।
- 'महाकवि कालिदास का संस्कृत साहित्य में योगदान' विषयक चर्चा-संगोष्ठि का आयोजन करें।





## वाक्य तथा वाक्य के प्रकार

### वाक्य विचार :

- शब्दों का ऐसा व्यवस्थित, सार्थक समूह जो किसी विचार या भाव को पूर्णतः व्यक्त कर सकता है; वाक्य कहलाता है।
- **उदाहरण** - भारत की संस्कृति अत्यंत प्राचीन है। इस वाक्य में प्रयुक्त सभी शब्द (पद) अर्थवान (सार्थक) हैं एवं व्यवस्थित शब्दों का यह समूह किसी विचार को प्रकट कर रहा है।

### वाक्य के प्रमुख तत्त्व :

(क) **सार्थकता**: सार्थकता से अभिप्राय है- वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का अर्थवान होना। वाक्य में केवल सार्थक शब्दों का ही प्रयोग किया जाता है पर कभी-कभी निरर्थक शब्दों का प्रयोग भी विशेष संदर्भ में सार्थक बन जाता है। जैसे-

- कुछ **पानी-पानी** पीकर जाना।
- मेरे सामने ज्यादा **चूँ-चपड़** करने की कोशिश मत करना।

उपर्युक्त वाक्यों में पानी-पानी, चूँ-चपड़ निरर्थक होते हुए भी सार्थक की तरह प्रयुक्त हुए हैं।

(ख) **योग्यता** : वाक्य में जिन शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है, उनमें अर्थ प्रदान करने की योग्यता या सामर्थ्य होनी चाहिए। जैसे-

‘मैंने पानी खाया।’- वाक्य में प्रयुक्त तीनों शब्द सार्थक हैं पर शब्दों के इस समूह में वांछित अर्थ देने की योग्यता या क्षमता नहीं है। जबकि ‘मैंने पानी पिया’- वाक्य में अर्थ प्रदान करने की योग्यता है, अतः यह वाक्य है।

(ग) **आकांक्षा** : आकांक्षा से आशय है- वाक्य अपने आप में पूरा होना चाहिए अर्थात् उसमें किसी शब्द की कमी के कारण अर्थ प्राप्ति की जिज्ञासा न बनी रही। जैसे-

‘चाहता है’, ‘पढ़ना चाहता है’, ‘वह पढ़ना चाहता है’- तीनों में तीसरा वाक्य है। पहले दोनों में ‘कौन’, ‘क्या’?

(घ) **निकटता** : वाक्य में शब्दों को बोलने और लिखने में उचित निकटता होनी चाहिए। यदि कहीं उचित विराम की आवश्यकता हो, तो वहाँ विराम चिह्नों का प्रयोग अपेक्षित है। बहुत रुक-रुककर या जल्दी-जल्दी बोलने से वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

(ङ) **पदक्रम** : वाक्य का सही अर्थ तभी स्पष्ट होगा जब उसमें प्रयुक्त सभी शब्द (पद) उचित क्रमों में प्रयुक्त किए गए हों। जैसे-

- मैंने केवल एक पत्र लिखा है।
- केवल पत्र एक है लिखा मैंने।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में एक जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। प्रथम वाक्य से अर्थ निकल रहा है कि मैंने केवल एक पत्र लिखा है, एक से अधिक नहीं या पत्र लिखने के अलावा और कुछ नहीं किया। जबकि दूसरे वाक्य से कोई अभीष्ट या इच्छित अर्थ नहीं निकल रहा है।

(च) **अन्वय** : अन्वय का अर्थ है ‘मेल’। वाक्य में प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों में कर्ता, कर्म, वचन, कारक, क्रिया आदि में उपयुक्त मेल होना चाहिए अन्यथा वह वाक्य शुद्ध नहीं कहलाएगा। जैसे-

- ‘हम खाना खाते हैं’ - वाक्य में क्रिया का कर्ता से मेल नहीं है। ‘हम’ कर्ता के साथ ‘खाते हैं’ का प्रयोग होना चाहिए।

**वाक्य के घटक :**

जिन अवयवों को मिलाकर वाक्य की रचना होती है उन्हें वाक्य के घटक कहते हैं। संरचना की दृष्टि से वाक्य के प्रधान रूप से दो ही घटक होते हैं-

- (1) उद्देश्य
- (2) विधेय

अब इन दोनों के बारे में समझे।

- (1) **उद्देश्य:** वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए वही उस वाक्य का 'उद्देश्य' है। इसके अंतर्गत कर्ता तथा कर्ता का विस्तार (विशेषण, संबंधबोधक, भावबोधक आदि) आ जाते हैं।
- (2) **विधेय:** उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए वह 'विधेय' है। इसके अंतर्गत क्रिया, क्रिया विस्तार, कर्म, कर्म विस्तार आदि आ जाते हैं।

- उदाहरण**
1. सचीन आपके स्कूल आ रहा है।
  2. बूढ़ा आदमी धीरे-धीरे चल रहा है।
  3. हमारे हिंदी के अध्यापक ने हमें मनोरंजक कहानी सुनाई।
  4. तारा का भाई नरेश कहानी की पुस्तक धीरे-धीरे पढ़ता है।

वाक्य क्रम	उद्देश्य		विधेय			
	कर्ता	कर्ता का विस्तार	क्रिया	क्रिया का विस्तार	कर्म	कर्म का विस्तार
1.	सचीन	-	आ रहा है	-	स्कूल	आपके
2.	आदमी	बूढ़ा	चल रहा है	धीरे-धीरे	-	-
3.	अध्यापकने	हमारे हिन्दी के	सुनाई	-	हमें कहानी	मनोरंजक
4.	नरेश	तारा का भाई	पढ़ता है	धीरे-धीरे	पुस्तक	कहानी की

**वाक्य के प्रकार :**

वाक्य का विवेचन मुख्य रूप से दो स्तरों पर किया जाता है- (1) अर्थ के आधार पर और (2) रचना के आधार पर। इस दो स्तरों के आधार पर वाक्य के प्रकार निम्नांकित हैं-

**अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार :**

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं:

- (1) **विधानवाचक वाक्य :** जिस वाक्य में कार्य के होने का अथवा करने का सामान्य कथन हो, उसे विधानवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे-
  - प्रियोदा सेवाभावी थी।
  - डॉक्टरने आराम करने के लिए कहा था।
  - वृक्ष हमें स्वच्छ वायु प्रदान करते हैं।

(2) **निषेधवाचक वाक्य :** जिस वाक्य में कार्य के न होने का या न करने का बोध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे-

- उदाहरण**
- मैं आज खाना नहीं खाऊँगा।
  - मरना मुझे कठिन नहीं लगता।
  - वह घर नहीं जाएगा।

( 3 ) **प्रश्नवाचक वाक्य** : यदि वाक्य में कोई प्रश्न किया जाय तो वह 'प्रश्नवाचक वाक्य' कहलाता है। इस तरह के वाक्यों में क्या, कौन, कहाँ, कैसे, कब, क्यों, किसलिए आदि का प्रयोग होता है। जैसे-

- उदाहरण** - इस नगरी का राजा कौन है ?
- राजा का नाम क्या है ?
  - आप कहाँ रहते हैं ?
  - इस की बकरी कैसे मरी ?
  - तूने ऐसी मशक क्यों बनाई ?
  - आप किसलिए वहाँ जाया करते हैं ?

( 4 ) **विस्मयादिवाचक वाक्य** : यदि वाक्य में विस्मय, शोक, हर्ष, घृणा, खुशी आदि का भाव अभिव्यक्त हो तो उसे 'विस्मयादिवाचक वाक्य' कहा जाता है। जैसे-

- उदाहरण** - अरे! इतना सुंदर गुलमर्ग!
- ओह! यह क्या हो गया।
  - वाह ! कितना सुंदर घर।

( 5 ) **इच्छावाचक वाक्य** : जिस वाक्य में वक्ता की इच्छा, आशा, शुभकामना या शाप आदि अभिव्यक्त हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे-

- उदाहरण** - आपकी यात्रा मंगलमय हो।
- गुरुजी आ जाएँ तो अच्छा हो।
  - भगवान करे, तुम सफल हो।
  - जा, तुझे नरक में भी जगह न मिले।

( 6 ) **संदेहवाचक वाक्य** : जिस वाक्य से किसी कार्य के होने में संदेह या संभावना का बोध हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे-

- उदाहरण** - संभवतः आज वर्षा होगी।
- लगता है, मैंने इस व्यक्ति को कहीं देखा है।
  - अब तक वह सो गया होगा।

( 7 ) **संकेतवाचक वाक्य** : जिस वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरे पर निर्भर करे अथवा एक कार्य का संकेत दूसरे कार्य से मिले, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे-

- उदाहरण** - परिश्रम करोगे, तो अवश्य सफलता मिलेगी।
- यदि वर्षा अच्छी हो तो फ़सल भी अच्छी होगी।
  - यदि मौसम ठीक रहा, तो हम घूमने जाएँगे।

( 8 ) **आज्ञावाचक या विधिवाचक वाक्य** : जिस वाक्य के द्वारा आज्ञा या अनुमति, प्रार्थना या निर्देश आदि का भाव प्रकट होता है, उसे आज्ञावाचक या विधिवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे-

- उदाहरण** - भिश्ती को निकालो, कसाई को लाओ। (आज्ञा)
- तुम जा सकते हो। (अनुमति)
  - कृपया मेरी सहायता कीजिए। (प्रार्थना)
  - यहाँ मत बैठो। (निर्देश)

### रचना के आधार पर वाक्य के प्रकार :

रचना या स्वरूप की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं-

( 1 ) **सरल या साधारण वाक्य** : जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय हो उसे 'सरल या साधारण वाक्य' कहते हैं। जैसे- 'पिताजी पार्क में बैठे हैं।' विधान में 'पिताजी'-उद्देश्य है और 'पार्क में बैठे हैं' - विधेय है।

सरल वाक्य में एक वाक्य ही होता है। वाक्य के उद्देश्य में कर्ता-कर्ता विस्तार तथा विधेय में क्रिया-क्रिया का विस्तार-कर्म-कर्म का विस्तार आदि आ जाते हैं।

**उदाहरण** 1. भार्गव ने पढ़ा। (कर्ता-क्रिया)

2. भार्गव पढ़ रहा है। (कर्ता, क्रिया-विस्तार)

3. पड़ोस में रहनेवाला भार्गव पढ़ रहा है। (विस्तार कर्ता-क्रिया-विस्तार)

4. भार्गव ने पुस्तक पढ़ी। (कर्ता-कर्म-क्रिया)

5. भार्गव ने पिताजी को पुस्तक दी। (कर्ता-कर्म-कर्म-क्रिया)

6. भार्गव ने अपने प्रिय मित्र को कहानी की पुस्तक दी। (कर्ता-कर्म का विस्तार, कर्म-कर्म का विस्तार-कर्म-क्रिया)

( 2 ) **संयुक्त वाक्य** : जिस वाक्य में दो उपवाक्य किसी समुच्चयबोधक (योजक) अव्यय से जुड़े होते हैं, उसे 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं। जैसे- 'मैं पढ़ रहा हूँ और तुम लिख रहे हो।' वाक्य में दो उपवाक्य हैं एवं 'और' समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े हैं, अतः निर्देशित विधान संयुक्त वाक्य है। संयुक्त वाक्य के अंतर्गत जितने उपवाक्य होते हैं, वे स्वतंत्र होते हैं।

**उदाहरण** 1. मैं हूँ सत्यकेतु और पत्नी है कामना।

2. आपको सत्य बोलना चाहिए; परन्तु वह अप्रिय न हो।

3. तुम नहीं जा सके तो बेटे को भेज देते।

4. सालभर का खाता बंद करना है अतः विवरण शीघ्र भेजिए।

कभी-कभी संयुक्त वाक्यों में 'समुच्चयबोधक' अव्यय का लोप भी कर दिया जाता है, जैसे-

1. दुनिया में रहनेवाले रहेंगे, जानेवाले चले जाएँगे। ('और' का लोप)

2. क्या सोचा था, क्या हो गया। ('पर' का लोप)

3. काम किया है, पैसा तो लूँगा ही। ('इसलिए' का लोप)

( 3 ) **मिश्र वाक्य** : जिस वाक्य की रचना एक से अधिक ऐसे उपवाक्यों से हुई हो, जिसमें एक प्रधान तथा अन्य वाक्य गौण हों, उसे 'मिश्र वाक्य' कहते हैं।

जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और उसके आश्रित उपवाक्य हों, उसे 'मिश्र वाक्य' कहते हैं। प्रधान उपवाक्य में मुख्य कथन होता है तथा जिसका समर्थन, पूर्ति या विस्तार दूसरा आश्रित उपवाक्य करता है। इनमें से कोई भी उपवाक्य स्वतंत्र नहीं होता। दोनों को एक दूसरे की अपेक्षा होती है।

**उदाहरण** 1. मैं देखता हूँ कि तुम मेहनत नहीं करते हो।

2. हिरन ही एकमात्र ऐसा पशु है, जो कुल्लूँचों भरता है।

3. सविता को पुरस्कार मिला क्योंकि उसने एक अच्छा गीत सुनाया था।

4. यह वही भारत देश है, जिसे कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था।

5. सूरज उगा इसलिए अँधेरा भागा।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

- (1) वाक्य किसे कहते हैं?
- (2) वाक्य के घटक बताइए।
- (3) सरल वाक्य किसे कहते हैं?
- (4) 'इस उपवन में सुंदर फूल खिले हैं।' वाक्य में से उद्देश्य और विधेय ढूँढ़िए।

2. अर्थ के आधार पर वाक्यों के प्रकार लिखिए :

- (1) अहा! कितना सुंदर बच्चा है।
- (2) एक गिलास दूध लाओ।
- (3) राम अयोध्या के राजा थे।
- (4) वहाँ पेड़-पौधे नहीं थे।
- (5) आप कहाँ रहते हैं?
- (6) आपकी यात्रा मंगलमय हो।
- (7) शायद मुझे ही अहमदाबाद जाना होगा।
- (8) यदि वर्षा अच्छी हो तो फसल भी अच्छी होगी।

3. रचना के आधार पर वाक्यों के प्रकार लिखिए :

- (1) घोड़ा ताँगा खींचता है।
- (2) श्याम माखनचोर है इसलिए वह कहीं छिप जाता है।
- (3) राकेश को बुखार आया इसलिए उसे अस्पताल भर्ती करवाया गया।
- (4) पानी बरस रहा है।
- (5) वह बाजार गई और उसने फल खरीदें।
- (6) ऋषि कहते हैं कि सदा सत्य की विजय होती है।
- (7) आचार्य ने कहा कि स्कूल तीन दिन बंद रहेगा।
- (8) आप दिल्ली कब जा रहे हैं?

4. सही उत्तरों का चयन कीजिए :

- (1) अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं?  
(अ) दो (ब) चार  
(क) छः (ड) आठ
- (2) रचना की दृष्टि से वाक्य के कितने प्रकार हैं?  
(अ) एक (ब) दो  
(क) तीन (ड) चार
- (3) मनोज अध्यापक है- उद्देश्य छाँटिए।  
(अ) मनोज (ब) अध्यापक  
(क) है (ड) अध्यापक है

- (4) गायत्री शिक्षिका है- विधेय छाँटिए।  
(अ) गायत्री (ब) शिक्षिका  
(क) है (ड) शिक्षिका है
- (5) इन वाक्यों में कौन-सा वाक्य संयुक्त वाक्य है?  
(अ) घर जाने पर वह खा लेता है।  
(ब) वह खा लेता है जब भी घर से आता है।  
(क) वह प्रतिदिन घर से खाकर आता है।  
(ड) वह घर जाता है और खाकर आता है।
- (6) इन वाक्यों में कौन-सा वाक्य मिश्र वाक्य है?  
(अ) परिश्रम करने पर छात्र उत्तीर्ण हो गए।  
(ब) उस छात्र ने परिश्रम किया और वह उत्तीर्ण हो गया।  
(क) परिश्रम करनेवाले छात्र उत्तीर्ण हो गए।  
(ड) जिन छात्रों ने परिश्रम किया वे उत्तीर्ण हो गए।
- (7) 'भगवान आपका कल्याण करे'.... यह किस प्रकार का वाक्य है?  
(अ) विधानवाचक (ब) संदेहवाचक  
(क) इच्छावाचक (ड) विस्मयादिवाचक
- (8) 'दादाजी स्वस्थ नहीं है'... यह किस प्रकार का वाक्य है?  
(अ) प्रश्नवाचक (ब) निषेधवाचक  
(क) संदेहवाचक (ड) संकेतवाचक



पंडित भरत व्यास

पंडित भरत व्यासजी हिन्दी साहित्य जगत के जाने-माने गीतकार रहे हैं। आपका जन्म राजस्थान के चुरू नामक कस्बे में हुआ था। आपने कई गीत-काव्यों की रचना की है। आपकी गीत रचनाएँ हिन्दी फिल्मों में भी ली गई हैं। आपकी रचनाओं में विभिन्न मानव मूल्य प्रस्थापित हुए हैं।

प्रस्तुत गीत सन् 1958 में आई-हिन्दी फिल्म गाँव की गोरी से लिया गया है। इस गीत में मनुष्य की महत्ता को देखते हुए मनुष्य को सबसे बुद्धिमान बताया है। मनुष्य ने अपनी बुद्धि और कठोर परिश्रम के बल पर जल, थल और नभ में तमाम उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। मनुष्य ने अपनी शक्ति से प्रकृति को बहुत सीमा तक अपने अनुकूल ढालने में सफल हुआ है। कवि बताते हैं- मनुष्य की शक्ति के सामने कोई भी कार्य असंभव नहीं है। मनुष्य जो चाहे, वह प्राप्त कर सकता है। यानी कि मनुष्य ही धरती की शान है। यही भाव काव्य में अन्तर्निहित है। यही हमारी महानता का प्रमाण है।

धरती की शान तू भारत की संतान,  
तेरी मुट्ठियों में बंद तूफान है रे,  
मनुष्य तू बड़ा महान है ॥

तू जो चाहे पर्वत पहाड़ों को फोड़ दे,  
तू जो चाहे नदियों के मुख को भी मोड़ दे,  
तू जो चाहे माटी से अमृत निचोड़ दे,  
तू जो चाहे धरती को अम्बर से जोड़ दे,  
अमर तेरे प्राण, मिला तुझको वरदान  
तेरी आत्मा में स्वयं भगवान है रे ॥1॥

नयनों में ज्वाल, तेरी गति में भूचाल,  
तेरी छाती में छिपा महाकाल है,  
पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरि-सा भाल,  
तेरी भृकुटी में तांडव का ताल है,  
निज को तू जान, जरा शक्ति पहचान  
तेरी वाणी में युग का आह्वान है रे ॥2॥

धरती-सा धीर, तू है अग्नि-सा वीर,  
तू जो चाहे तो काल को भी थाम ले,  
पापों का प्रलय रुके, पशुता का शीश झुके,  
तू जो अगर हिम्मत से काम ले,  
गुरु-सा मतिमान, पवन-सा तू गतिमान,  
तेरी नभ से भी ऊँची उड़ान है रे ॥3॥

### शब्दार्थ और टिप्पणी

हिमगिरि हिमालय पर्वत ज्वाल अग्निशिखा, लौ शान गौरव, ऐश्वर्य, वैभव मुख प्रवाह, भृकुटी भौंह, काल समय (वह सम्बन्ध सत्ता जिसके द्वारा भूत, भविष्य और वर्तमान की प्रतीति होती है।) मतिमान बुद्धिमान, विचारवान प्रलय नाश, विनाश आह्वान पुकार भाल मस्तक, कपाल ललाट निज, अपना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :
  - (1) कवि की दृष्टि में सर्वाधिक महान कौन है ?
  - (2) आप क्या-क्या कर सकते हैं ?
  - (3) अन्य जीवों से मनुष्य महान कैसे है ?
  - (4) धरती-सा धीर किसे कहा गया है ?
  - (5) धरती की शान कविता के रचयिता कौन हैं ?
2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सविस्तार लिखिए :
  - (1) कविता में कवि ने किन प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण किया है ? कैसे ?
  - (2) प्रस्तुत कविता में मनुष्य के प्रति किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है, और उससे हमें क्या प्रेरणा मिलती है ?
  - (3) धरती की शान से कवि का क्या तात्पर्य है ? भाव स्पष्ट कीजिए ।
  - (4) मनुष्य के लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है काव्य के आधार पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।
  - (5) धरती की शान कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
3. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :
  - (1) गुरु-सा मतिमान,  
पवन-सा तू गतिमान,  
तेरी नभ से भी  
ऊँची उड़ान है रे ।
  - (2) धरती की शान,  
तू भारत की संतान  
तेरी मुट्ठियों में  
बंद तूफान है रे
4. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :  
भूचाल, हिमगिरि, वाणी, तूफान, अमृत, धीर, हिम्मत, नभ, निज
5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :  
अमृत, अम्बर, अमर, धीर, वीर, पाप, जीवन
6. सही विकल्प चुनकर लिखिए :
  - (1) तू जो चाहे पर्वत पहाड़ों को....
    - (अ) मोड़ दे
    - (ब) फोड़ दे
    - (क) तोड़ दे
    - (ड) जोड़ दे
  - (2) पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरि-सा .....
    - (अ) हाल
    - (ब) भाल
    - (क) काल
    - (ड) मिसाल



- (3) ..... को तू जान, जरा शक्ति पहचान  
(अ) निज (ब) स्वयं  
(क) खुद (ड) स्व
- (4) तू जो अगर हिम्मत से ..... ले  
(अ) ठान (ब) जान  
(क) काम (ड) पहचान

7. काव्य-पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए :

- (1) धरती ..... महान है ।  
(2) तू जो ..... उड़ान है रे।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- प्रस्तुत गीत कंठस्थ कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- धरती की शान गीत का सस्वर गान करवाइए ।



सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन

(जन्म : सन् 1911 ई. : निधन : सन् 1987 ई.)

आधुनिक हिन्दी काव्यधारा में नई कविता के प्रमुख कवि एवं बहुचर्चित उपन्यासकार के रूप में 'अज्ञेयजी' का नाम एवं प्रदान उल्लेखनीय है। उनका जन्म 9 मार्च, 1911 में कसया (कुशीनगर) में हुआ। बचपन का 1911-1915 का समय लखनऊ में बीता। बाद में कुछ समय के लिए वे श्रीनगर और जमू में रहे। उन्होंने लाहौर के एक कालेज से बी.एससी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। क्रान्तिकारी दल में सक्रिय भाग लेने के कारण उन्हें कारागार में रहना पड़ा। उन्होंने 'सैनिक' और 'विशाल भारत' का संपादन भी किया। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय साहित्य और संस्कृति के अध्यापक के रूप में काम किया। अज्ञेयजी विद्रोही व्यक्ति रहे हैं। विद्रोह उनके साहित्य की मूल चेतना है। उनका उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' प्रेमचंद के गोदान के बाद सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास माना जाता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'नदी के द्वीप' और 'अपने अपने अजनबी' उपन्यास भी लिखे हैं। वे हिन्दी कविता में प्रयोगवादी आंदोलन के प्रवर्तक माने जाते हैं। इन्हें 'आँगन के पार द्वार' काव्यकृति पर साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत किया। 'कितनी नावों में कितनी बार' पुस्तक पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्रदान किया गया। 'भग्नदूत', 'चिन्ता', 'इत्यलम्', 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी', 'अरी ओ करुणा प्रभामय' उनकी प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं। उन्होंने 'तार सप्तक' का भी संपादन किया था।

'क्रान्तिकारी शेखर का बचपन' उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' भाग-1 का अंश है। यह उपन्यास 1940 ई. में लिखा गया था। बचपन से लेकर कॉलेज जीवन तक का जीवनविचित्र है। शेखर का जीवन दर्शन स्वातंत्र्य की खोज लक्षित है। वह लील पर चलनेवाला नहीं है।

शेखर का बचपन क्रान्तिकारी विचारों से अभिभूत था। वह ब्रिटिश शासन का जबरदस्त विरोधी और स्वदेशी चीजों का चाहक। अंग्रेजी के बजाय हिन्दी का हिमायती बचपन के उसके जीवन का कुछ अंश इस उपन्यास अंश में संकलित हैं।

असहयोग की एक लहर आयी और देश उसमें बह गया। शेखर भी उसमें बहने की चेष्टा करने लगा और जब नहीं बह पाया, तब हाथों से खेकर अपने को बहाने लगा-

उसने विदेशी कपड़े उतारकर रख दिये, जो दो-चार मोटे देशी कपड़े उसके पास थे, वही पहनने लगा। बाहर घूमने-मिलने जाना उसने छोड़ दिया, क्योंकि इतने देशी कपड़े उसके पास नहीं कि बाहर जा सके। प्रायः दुपहर को वह ऊपर की एक खिड़की के पास जाकर खड़ा हो जाता और बाहर देखा करता। कभी दूर से जब बहुत-से कण्ठों की समवेत पुकार उस तक पहुँचती:

'गांधी का बोलबाला! दुश्मन का मुँह हो काला!'

तब उसके प्राण पुलकित हो उठते और वह भी अपनी खिड़की से पुकार उठता-

'गांधी का बोलबाला! दुश्मन का मुँह हो काला!'

इससे आगे वह जा नहीं सकता था- घर से अनुमति नहीं थी लेकिन अनुमति का न होना ही तो एक अंकुश था, जो निरंतर उसे कोई मार्ग ढूँढ़ने के लिए प्रेरित किया करता था...

माँ के अतिरिक्त सब लोग बाहर गये हुए थे। माँ ऊपर कोठे पर बैठी हुई थी। शेखर ने घर के सब कमरों में से विदेशी कपड़े बटोरे और नीचे एक खुली जगह ढेर लगा दिया। फिर लैम्पे लाकर उन पर मिट्टी का तेल उँडेला (तेल का पीपा नौकरों के पास रहता था, वहाँ जाने की हिम्मत नहीं हुई), और आग लगा दी।

आग एकदम भभक उठी। शेखर का आह्लाद भी भभक उठा। वह आग के चारों ओर नाचने लगा और गला खोलकर गाने लगा:

'गांधी का बोलबाला! दुश्मन का मुँह हो काला!'

थोड़ी ही देर में माँ आयी और थोड़ी देर में शेखर के गाल भी मानों विदेशी हो गए- जलने लगे...

लेकिन ढेर राख हो गया था।

शेखर के मन में विदेशी मात्र के प्रति घृणा हो गई। उसने देखा कि हमारी नस-नस में विदेशी का प्रभुत्व ही नहीं, आतंक भरा हुआ है। उसे पुरानी बातें भी याद आयी और नयी भी। वह देखने लगा। उसे यह भी ध्यान हुआ कि पिता उसे घर में भाइयों से अंग्रेजी में बात करने को कहा करते हैं, यह भी कि वह शैशव से अंग्रेजी बोलना जानता है, पर हिन्दी अभी सीख रहा है। उसकी पहली आया ईसाई थी और अंग्रेजी ही बोलती थी, उसका पहला गुरु, जिसके साथ उसे दिन-भर बिताना होता था, एक अमरिकन मिशनरी था, जो पढ़ाता चाहे कुछ नहीं

था, दिन-भर अंग्रेजी की शिक्षा तो देता था। शेखर ने देखा कि यदि मातृभाषा वह है, जो हम सबसे पहले सीखते हैं, तब तो अंग्रेजी ही उसकी मातृभाषा है और विदेशी ही उसकी माँ... उसके आत्माभिमान को बहुत सख्त धक्का लगा... जिसे मैं घृणित समझता हूँ, उसी विदेशी को माँ कहने को बाध्य होऊँ। उसने उसी दिन से बड़ी लगन से हिन्दी पढ़ना आरंभ किया और चेष्टा से अपनी बातचीत में से अंग्रेजी शब्द निकालने लगा, अपनी आदतों में से विदेशी अभ्यासों को दूर करने लगा...

और अपने हिन्दी-ज्ञान को प्रमाणित करने के लिए, और गांधी के प्रति अपनी श्रद्धा- जिसे व्यक्त करने का और कोई साधन उसे प्राप्त नहीं था-प्रकट करने के लिए उसने एक राष्ट्रीय नाटक लिखना आरंभ किया। जीवन में देखे हुए एकमात्र खेल की स्मृति अभी ताजी थी, इसलिए उसे लिखने में विशेष कठिनाई नहीं हुई। प्रस्तावना तो ज्यों-की-त्यों हथिया ली, केवल कहीं-कहीं कुछ मामूली परिवर्तन करना पड़ा। उसके बाद नाटक आरंभ हुआ- एक स्वाधीन लोकतंत्र भारत का विराट स्वप्न, जिसके राष्ट्रपिता गांधी हैं; और सिद्धि के लिए साधन है अनवरत कताई और बुनाई, विदेशी माल और मनुष्य का परित्याग और प्रत्येक अवसर पर दूसरा गाल आगे कर देना। 'सत्य हरिश्चन्द्र' का इन्द्रलोक आरंभ से हटकर अंत में आ गया था- अपने ऊपर शेखर की प्रतिभा द्वारा सूर्यास्त के सुनहरे टापू की छाप लेकर। शेखर के नाटक का अन्तिम दृश्य था स्वाधीन और बाधाहीन भारत-एक स्थूल आकार-प्राप्त स्वप्न...

नाटक पूरा हो गया। शेखर ने सुन्दर देशी स्याही से उसकी प्रतिलिपि तैयार की और उसे अपनी पुस्तकों के नीचे छिपाकर रख दिया। पहले साहित्यिक प्रयत्नों की गति उसे अभी याद थी, इसलिए उसने अपना यह नाटक, यह अमूल्य रत्न किसी को नहीं दिखाया-सरस्वती को भी नहीं! और हर समय, जब जहाँ वह जाता, उसके मन में एक ध्वनि गूँजा करती, मैं शेखर हूँ, एक अपूर्व नाटक का लेखक चन्द्रशेखर! और मैंने अकेले ही, बिना किसी की सहायता के अपने हाथों से उसका निर्माण किया है, स्वाधीन बाधाहीन भारत के उस चित्र का, मैंने!

शेखर के पिता एक दिन के दौरे पर जा रहे थे और शेखर साथ था। बाँकीपुर स्टेशन पर सामान रखकर, पिता और पुत्र वेटिंग-रूम के बाहर टहल रहे थे-शेखर कुछ आगे, पिता पीछे-पीछे।

पास से एक लड़का आया और शेखर की ओर उन्मुख होकर अंग्रेजी में बोला, 'तुम्हारा नाम क्या है?'

शेखर ने सिर से पैर तक उसे देखा। लड़का एक अच्छा-सा सूट पहने था, सिर पर अंग्रेजी टोपी और उसके स्वर में अहंकार था, शायद वह अपने अंग्रेजी-ज्ञान का परिचय देना चाहता था।

शेखर को प्रश्न बुरा और अपमानजनक लगा। उसने उत्तर नहीं दिया। कुछ इसलिए भी नहीं दिया कि पीछे पिता थे और पिता की उपस्थिति में बात करते वह झिझकता था।

उस लड़के ने समझा, उसका सामना करनेवाला कोई नहीं है- यह लड़का शायद अंग्रेजी जानता ही नहीं। उसने तनिक और रोब में कहा, "My name is- Do you go to school?" (मेरा नाम है- तुम स्कूल में पढ़ते हो?)

शेखर के पिता वहाँ न होते तो वह प्रश्न का उत्तर चाहे न देता पर (हिन्दी में) कुछ उत्तर अवश्य देता। उसके मन में यह सन्देह उठ भी रहा था कि वह लड़का शायद कोई पाठ ही दुहरा रहा है, अंग्रेजी उतनी जानता नहीं। पर उसने घृणा से उस लड़के की ओर देखा, उत्तर कोई नहीं दिया।

पिता के क्रुद्ध स्वर ने कहा-शायद उस लड़के को जताने के लिए कि मेरा लड़का अंग्रेजी जानता है- 'जवाब क्यों नहीं देते!'

शेखर और भी चिढ़ गया और भी चुप हो गया। वह लड़का मुस्कराकर आगे बढ़ गया। पिता ने कहा, 'इधर आओ।' शेखर उनके पीछे-पीछे वेटिंग-रूम में गया तो पिता ने उसका कान पकड़कर पूछा, "जवाब क्यों नहीं दिया? मुँह टूट गया है?"

तभी ट्रेन आ गयी और शेखर कुछ उत्तर देने से-या उत्तर न देने की गुस्ताखी करने से बच गया।

दूसरे दिन, घर पर पिता ने माँ से कहा, 'हमारे लड़के सब बुद्धु है। किसी के सामने तो बोल नहीं निकलता।' शेखर ने सुन लिया।

( 'शेखर : एक जीवनी उपन्यास : पहला भाग' )

## शब्दार्थ और टिप्पणी

शैशव बचपन बोलबाला अति प्रसिद्ध अनुमति सहमति अंकुश नियंत्रण परित्याग बहिष्कार

मुहावरे

मुँह काला होना बेइज्जती होना घृणा नफरत बाध्य विवश

## स्वाध्याय

- निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :
  - शेखर ने बाहर घूमने-मिलने जाना क्यों छोड़ दिया?
  - शेखर के मस्तिष्क में कैसी पुकार पहुँचती थी?
  - शेखरने आग कैसे जलाई?
  - शेखर गला खोलकर क्या गाने लगा?
  - अंग्रेजी बालक ने जवाब में क्या कहा?
- दो-तीन वाक्य में उत्तर दीजिए :
  - घर के सदस्य बाहर गए तब शेखर ने क्या किया?
  - शेखर के नाटक का विषय क्या था?
  - अंग्रेजी बालक के प्रश्न का उत्तर शेखर ने क्यों नहीं दिया?
  - पिता ने क्रुद्ध स्वर में शेखर को क्या कहा?
  - शेखर उत्तर न देने में कैसे बच गया?
  - घर आकर पिता ने माँ से क्या कहा? क्यों?
- सविस्तार उत्तर लिखिए :
  - शेखर के मन में विदेशी मात्र के प्रति घृणा क्यों हो गई थी?
  - शेखर के घर में अंग्रेजी भाषा के प्रति गहरा प्रभाव था-ऐसा हम कैसे कह सकते हैं?
  - शेखर का चरित्र-चित्रण कीजिए।
  - शेखर ने नाटक लिखना कब आरंभ किया? क्यों?
- विलोम शब्द लिखिए :

सहयोग, विदेशी, बाहर, दुश्मन, अंकुश
- समानार्थी शब्द लिखिए :

अनुमति, कष्ट, निरंतर, आजाद
- मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए:
  - मुँह काला होना

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- अन्य क्रांतिकारियों में से किन्हीं दो क्रांतिकारियों की जानकारी प्राप्त कीजिए और कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- हिन्दी दिवस अंतर्गत विविध प्रवृत्तियों का आयोजन कीजिए और राष्ट्रभाषा का महत्त्व बढ़ाइए।

●

## स्वर संधि

### परिभाषा :

- “दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को ‘संधि’ कहते हैं।” संधि का शाब्दिक अर्थ है-मेल या समझौता। जब दो वर्णों का मिलन अत्यन्त निकटता के कारण होता है तब उनमें कोई-न-कोई परिवर्तन होता है और वही परिवर्तन संधि के नाम से जाना जाता है।

जैसे : हिम + आलय

↓

↓

अ

+

आ

(यहाँ ‘अ’, एवं ‘आ’ अत्यन्त निकट हैं)

आ

(‘अ’ एवं ‘आ’ के मिलने से विकार हुआ)

- हिम् (म् से ‘अ’ निकालने पर)
- ‘आलय’ से ‘आ’ निकालने पर ‘लय’ बचा
- हिम् + (अ + आ) + लय
- हिम् आ लय (‘म्’ के साथ ‘आ’ का संयोग होने पर ‘हिमा’ बना)
- अब ‘हिमा’ और ‘लय’ दोनों को मिला देने पर ‘हिमालय’ बना।
- अतः हिम + आलय = हिमालय

### संधि के भेद :

- संधि के तीन भेद हैं-  
1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि और 3. विसर्ग संधि  
यहाँ हम ‘स्वर संधि’ के बारे में अभ्यास करेंगे।

### स्वर संधि :

- “स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे ‘स्वर संधि’ कहते हैं।”

जैसे : - अभि + इष्ट = अभीष्ट

- इ + इ = ई (यहाँ ‘इ’ और ‘इ’ दो स्वरों के बीच संधि होकर ‘ई’ रूप हुआ)

- स्वर संधि के पाँच प्रकार हैं-

1. दीर्घ स्वर संधि
2. गुण स्वर संधि
3. वृद्धि स्वर संधि
4. यण स्वर संधि
5. ययादी स्वर संधि

प्रथम तीन प्रकारों के बारे में समझेंगे।

#### (1) दीर्घ स्वर संधि :

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

अ + अ = आ      अन्न (अ) + अभाव (अ) = अन्नाभाव (आ)

अन्य (अ) + अन्य (अ) = अन्यान्य (आ)

अ + आ = आ      परम (अ) + आत्मा (आ) = परमात्मा (आ)

असुर (अ) + आलय (आ) = असुरालय (आ)

आ + अ = आ	आशा (आ) + अतीत (अ) = आशातीत (आ)
	जिह्वा (आ) + अग्र (अ) = जिह्वाग्र (आ)
आ + आ = आ	कृपा (आ) + आचार्य (आ) = कृपाचार्य (आ)
	दया (आ) + आनंद (आ) = दयानंद (आ)
इ + इ = ई	कवि (इ) + इन्द्र (इ) = कवीन्द्र (ई)
	अति (इ) + इव (इ) = अतीव (ई)
इ + ई = ई	कपि (इ) + ईश (ई) = कपीश (ई)
	कवि (इ) + ईश (ई) = कवीश (ई)
ई + इ = ई	फणी (ई) + इन्द्र (इ) = फणीन्द्र (ई)
	मही (ई) + इन्द्र (इ) = महीन्द्र (ई)
ई + ई = ई	पृथ्वी (ई) + ईश (ई) = पृथ्वीश (ई)
	जानकी (ई) + ईश (ई) = जानकीश (ई)
उ + उ = ऊ	गुरु (उ) + उपदेश (उ) = गुरुपदेश (ऊ)
उ + ऊ = ऊ	लघु (उ) + ऊर्मि (ऊ) = लघूर्मि (ऊ)
ऊ + उ = ऊ	वधू (ऊ) + उत्सव (उ) = वधूत्सव (ऊ)
ऊ + ऊ = ऊ	भू (ऊ) + ऊर्ध्व (ऊ) = भूर्ध्व (ऊ)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) संधि कीजिए।

- |                      |                         |
|----------------------|-------------------------|
| - कंस + अरि = कंसारि | - गिरि + इन्द्र = ..... |
| - एक + आनन = .....   | - पारि + ईक्षा = .....  |
|                      | - नाडी + ईश्वर = .....  |

(2) संधि विच्छेद कीजिए।

- |                          |                     |
|--------------------------|---------------------|
| - कल्पान्त = कल्प + अन्त | - कृष्णानंद = ..... |
| - भाषान्तर = .....       | - रवीन्द्र = .....  |
| - विद्यालय = .....       | - रजनीश = .....     |
| - मुनीश = .....          |                     |

(3) गुण स्वर संधि :

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

- अ / आ + इ / ई = ए
- जैसे : - देव (अ) + इन्द्र (इ) = देवेन्द्र (ए)
- उदाहरण में 'व' से 'ए' का संयोग होने पर देवेन्द्र और दोनों खंडों को मिलाने पर 'देवेन्द्र' बना।
- अन्य उदाहरण :
  - सुर (अ) + इन्द्र (इ) = सुरेन्द्र
  - ईश्वर (अ) + इच्छा (इ) = ईश्वरेच्छा
  - जित (अ) + इन्द्रिय (इ) = जितेन्द्रिय
  - उप (अ) + ईक्षा (ई) = उपेक्षा
  - तप (अ) + ईश्वर (ई) = तपेश्वर

लोक (अ) + ईश (ई) = लोकेश  
 उमा (आ) + ईश (ई) = उर्मिलेश  
 लंका (आ) + ईश्वर (ई) = लंकेश्वर  
 महा (आ) + इन्द्र (इ) = महेन्द्र  
 यथा (आ) + इष्ट (इ) = यथेष्ट

- अ / आ + उ / ऊ = ओ

जैसे : - वीर (अ) + उचित (उ) = वीरोचित (ओ)

- उदाहरण में 'र्' से 'ओ' का संयोग होने पर वीर् ओ चित सभी खंडों को मिलाने पर 'वीरोचित' बना।

- अन्य उदाहरण :

आत्म (अ) + उत्सर्ग (उ) = आत्मोत्सर्ग (ओ)  
 लोक (अ) + उक्ति (उ) = लोकोक्ति (ओ)  
 अक्ष (अ) + ऊहिणी (ऊ) = अक्षौहिणी (ओ)  
 गंगा (आ) + उदक (उ) = गंगोदक (ओ)  
 विद्या (आ) + उपार्जन (उ) = विद्योपार्जन (ओ)  
 गंगा (आ) + ऊर्मि (ऊ) = गंगोर्मि (ओ)

- अ / आ + ऋ = अर्

जैसे : - महा (आ) + ऋषि (ऋ) = महर्षि (अर्)

- 'मह' के 'ह' से 'अ' का संयोग होने से - महर्षि 'र्' का रेफ हो जाने पर 'र्षि'

- 'मह' और 'र्षि' को मिलाने पर 'महर्षि' बना।

- ध्यातव्य : जब दो सस्वर व्यंजनों के बीच 'र्' रहे तो वह अगले व्यंजन पर रेफ बन जाता है। उपर्युक्त उदाहरण में 'ह' और 'र्षि' के बीच 'र्' है जो 'र्षि' पर रेफ बन चुका है।

- अन्य उदाहरण :

देव (अ) + ऋषि (ऋ) = देवर्षि (अर्)  
 ब्रह्म (अ) + ऋषि (ऋ) = ब्रह्मर्षि (अर्)  
 राजा (आ) + ऋषि (ऋ) = राजर्षि (अर्)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(1) संधि कीजिए।

- |                              |                                |
|------------------------------|--------------------------------|
| - भुजग + इन्द्र = भुजगेन्द्र | - अर्थ + उपार्जन = अर्थोपार्जन |
| - नर + इन्द्र = .....        | - ग्राम + उद्धार = .....       |
| - फल + इच्छा = .....         | - नव + उदय = .....             |
| - कमल + ईश = .....           | - पर + उपकार = .....           |
| - प्राण + ईश्वर = .....      | - नव + ऊढा = .....             |
| - उमा + ईश = .....           | - लंबा + उदर = .....           |
| - महा + ईश = .....           | - महा + उदय = .....            |
| - रमा + इन्द्र = .....       | - धारा + उष्ण = .....          |
| - सप्त + ऋषि = .....         | - महा + ऋषि = .....            |
|                              | - सम् + कृति = .....           |

(2) संधि विच्छेद कीजिए।

- |                              |                            |
|------------------------------|----------------------------|
| - कर्णोद्धार = कर्ण + उद्धार | - देवेन्द्र = देव + इन्द्र |
| - जनमोत्सव = .....           | - विजयेच्छा = .....        |
| - नीलोत्पल = .....           | - गणेश = .....             |
| - धीरोदात्त = .....          | - भूतेश = .....            |
| - चिन्तोन्मुक्त = .....      | - परमेश्वर = .....         |
| - महोपदेश = .....            | - गंगेश = .....            |
| - ध्वजोत्तोलन = .....        | - थानेश्वर = .....         |
| - विवेकानंद = .....          | - विद्योत्तमा = .....      |
|                              | - संगीत = .....            |

**( 3 ) वृद्धिस्वर संधि :**

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

- अ / आ + ए / ऐ = ऐ
- जैसे : - एक (अ) + एक (ए) = एकैक
- 'एक्' के 'क्' से 'ऐ' का संयोग होने से - ए कै क = एकैक
- अन्य उदाहरण :
  - सदा (आ) + एव (ए) = सदैव (ऐ)
  - तथा (आ) + एव (ए) = तथैव (ऐ)
  - टिक (अ) + ऐत (ऐ) = टिकैत (ऐ)
  - गंगा (आ) + ऐश्वर्य (ऐ) = गंगैश्वर्य (ऐ)
- अ / आ + ओ / औ = औ
- जैसे : - जल (अ) + ओघ (ओ) = जलौघ
- 'जल्' के 'ल्' से 'औ' का संयोग होने से - जल् औ घ = जलौघ बना
- अन्य उदाहरण :
  - परम (अ) + ओषधि (ओ) = परमौषधि (औ)
  - बिम्ब (अ) + ओष्ठ (ओ) = बिम्बौष्ठ (औ)
  - गृह (अ) + औत्सुक्य (औ) = गृहौत्सुक्य (औ)
  - गंगा (आ) + ओघ (ओ) = गंगौघ (औ)
  - महा (आ) + औषध (औ) = महौषध (औ)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. संधि कीजिए ।
  - वन + औषधि = .....
  - परम + औदार्य = .....
2. संधि विच्छेद कीजिए ।
  - शुद्धोदन = .....
  - महौषध = .....

**( 4 ) यण् स्वर संधि :**



- यदि इ/ई, उ/ऊ और ऋ के बाद भिन्न स्वर आए तो इ/ई का 'य', उ/ऊ का 'व' और ऋ का 'र' हो जाता है। इसके संदर्भ में निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

- **इ / ई + भिन्न स्वर :**

जैसे : - इ / ई

↓

य् (यह भिन्न स्वर से मिल जाता है)

जैसे : प्रति + एक = प्रत्येक

↓

इ

↓

ए

(‘इ’ से भिन्न स्वर है)

↓

य्

↓

ये

(भिन्न स्वर से मिलने पर)

- अगला रूप, प्रत् ये क
- सभी खंडों को मिलाने पर प्रत्येक बना।

#### अन्य उदाहरण:

आदि (इ) + अन्त (अ) = आद्यन्त (य)

प्रति (इ) + अक्ष (अ) = प्रत्यक्ष (य)

वि (इ) + अर्थ (अ) = व्यर्थ (य)

अति (इ) + आचार (आ) = अत्याचार (या)

वि (इ) + आकुल (आ) = व्याकुल (या)

अति (इ) + उत्तम (उ) = अत्युत्तम (यु)

वि (इ) + उत्पत्ति (उ) = व्युत्पत्ति (यु)

दधि (इ) + ओदन (ओ) = दध्योदन (यो)

देवी (ई) + आगम (आ) = देव्यागम (दा)

नि (इ) + ऊन (ऊ) = न्यून (यू)

#### उ/ऊ + भिन्न स्वर के उदाहरण:

अनु (उ) + एषण (ए) = अन्वेषण (वे)

अनु (उ) + ईक्षण (ई) = अन्वीक्षण (वी)

अनु (उ) + अय (अ) = अन्वय (व)

पशु (उ) + आदि (आ) = पश्वादि (वा)

लघु (उ) + आहार (आ) = लघ्वाहार (वा)

ऊह (ऊ) + अपोह (अ) = ऊहापोह (आ)

वधू (ऊ) + ऐश्वर्य (ऐ) = वध्वैश्वर्य (वै)

वध (ऊ) + आगमन (आ) = वध्वागमन (वा)

#### ऋ + भिन्न स्वर के उदाहरण:

पितृ (ऋ) + आदेश (आ) = पित्रादेश (रा)

मातृ (ऋ) + आनन्द (आ) = मात्रानन्द (रा)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

**संधि कीजिए।**

- |                        |                      |
|------------------------|----------------------|
| - अति + अन्त = .....   | - इति + आदि = .....  |
| - वि + आधि = .....     | - अभि + उदय = .....  |
| - गौरी + आदेश = .....  | - पशु + अधम = .....  |
| - मधु + आचार्य = ..... | - वधू + आगमन = ..... |

**संधि विच्छेद कीजिए।**

- |                       |                     |
|-----------------------|---------------------|
| - अत्यधिक = .....     | - यद्यपि = .....    |
| - गत्यात्मकता = ..... | - सख्यागमन = .....  |
| - व्याधात = .....     | - उपर्युक्त = ..... |
| - व्यूह = .....       | - सरयागमन = .....   |
| - स्वल्प = .....      | - मध्वासव = .....   |

**(5) अयादि स्वर संधि :**

- यदि ए, ऐ, ओ और औ के बाद भिन्न स्वर आए तो 'ए' का अय् 'ऐ' का आय् 'ओ' का अव् और 'औ' का आव् हो जाता है। इसके संदर्भ में यह याद रखिए कि अय्, आय् और आव् के य् और व् आगेवाले भिन्न स्वर से मिल जाते हैं।

**निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए**

- **उदाहरण :**

जैसे :    नै        +        अक  
              ↓                    ↓  
              ऐ                    अ        (भिन्न स्वर)  
              ↓                    ↓  
              आय्                    य        (न् + आ = ना) शब्द बनेगा = नायक

- **अन्य उदाहरण :**

- चे (ए) + अन (अ) = चयन (अय)  
 नै (ऐ) + अक (अ) = नायक (आय)  
 पो (ओ) + अन (अ) = पवन (अव)  
 गै (ऐ) + इका (इ) = गायिका (आयि)  
 पो (ओ) + इत्र (इ) = पवित्र (अयि)  
 भौ (औ) + उक (उक) = भावुक (आवु)  
 धौ (औ) + अक (अ) = धावक (आव)  
 पौ (औ) + अक (अ) = पावक (आव)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

**(1) संधि कीजिए।**

- |                     |                   |
|---------------------|-------------------|
| - ने + अन = .....   | - गै + अन = ..... |
| - श्रो + अन = ..... | - शौ + अन = ..... |

**(2) संधि विच्छेद कीजिए।**

- |                  |                |
|------------------|----------------|
| - नायिका = ..... | - शावक = ..... |
| - श्रावण = ..... |                |



सुभद्राकुमारी चौहान

(जन्म : सन् 1904 ई. : निधन : सन् 1948 ई.)

सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म प्रयाग में ठाकुर रामनाथ के घर हुआ था। कास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में आपने शिक्षा प्राप्त की। आपका विवाह खण्डवा निवासी ला. लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ संपन्न हुआ। सुभद्राकुमारी चौहान ने कांग्रेस के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के लिए अपना अध्ययन छोड़ दिया और पति को भी देश-सेवा में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। सन् 1947 ई. की 15 फरवरी को जबलपुर के समीप एक मोटर दुर्घटना में उनका देहान्त हो गया। सुभद्राकुमारी चौहान न केवल स्वतंत्रता सेनानी रही वरन् उन्होंने साहित्य-सृजन भी विपुल मात्रा में की। 'मुकुल' व 'त्रिधारा' इनके काव्य-संग्रह हैं। बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे-साधे चित्र, कहानी-संग्रह हैं। बिखरे मोती नामक पुस्तक पर उन्हें सकसेरिया पुरस्कार प्रदान किया गया था। सुभद्राकुमारी चौहान की भाषा-शैली सरल और सुबोध हैं।

प्रस्तुत कविता वीरों की शूरवीरता को प्रोत्साहित करती हुई उत्तम काव्यरचना है। पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण चारों दिशाएँ पुकार रही हैं। पर्वत-हल्दी-घाटी सिंह-गढ़ भी तैनात हो गए हैं तो वीरों का कैसा हो वसन्त कहकर कवयित्रीने शूरवीरों का उत्साह बढ़ाया है।

वीरों का कैसा हो वसन्त ?  
 आ रही हिमाचल से पुकार,  
 है उदधि गरजता बार-बार,  
 प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,  
 सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगन्त,  
 वीरों का कैसा हो वसन्त ?  
 फूली सरसों ने दिया रंग,  
 मधु लेकर आ पहुँचा अनंग,  
 बधु-वसुधा पुलकित अंग-अंग,  
 हैं वीर वेष में किन्तु कन्त,  
 वीरों का कैसा हो वसन्त ?  
 भर रही कोकिला इधर तान,  
 मारु बाजे पर उधर गान,  
 है रंग और रण का विधान,  
 मिलने आए हैं आदि-अन्त,  
 वीरों का कैसा हो वसन्त ?  
 कह दे अतीत अब मौन त्याग ?  
 लंके! तुझ में क्यों लगी आग,  
 ए कुरुक्षेत्र! अब जाग, जाग,  
 बतला अपने अनुभव अनन्त,  
 वीरों का कैसा हो वसन्त ?  
 हल्दी-घाटी के शिला-खण्ड,  
 ए दुर्ग सिंह-गढ़ के प्रचण्ड,  
 राणा-ताना का कर घमण्ड,  
 दो जगा आज स्मृतिथौँ ज्वलंत,  
 वीरों का कैसा हो वसन्त ?  
 भूषण अथवा कवि चन्द नहीं;  
 बिजली भर दे वह छन्द नहीं,  
 है कलम बँधी स्वछन्द नहीं,  
 फिर हमें बतावें कौन? हन्त!  
 वीरों का कैसा हो वसन्त ?

## शब्दार्थ और टिप्पणी

उदधि समुद्र प्राची पूर्व दिशा नभ आकाश दिग् दिगन्त, अनन्त मधु भँवरा वसुधा पृथ्वी कन्त स्वामी मारु एस  
वाद्य यंत्र अतीत भूतकाल घमण्ड अभिमान

### स्वाध्याय

#### 1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

- (1) बार-बार कौन गरजता है?
- (2) प्रकृति के तत्त्व क्या पूछ रहे हैं?
- (3) बधु-वसुधा में क्या परिवर्तन आया?
- (4) कवयित्री कुरुक्षेत्र से क्या कहते हैं?
- (5) कवयित्री की कलम की क्या विशेषता है?

#### 2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- (1) वीरों का कैसा है वसन्त? ऐसा कौन-कौन पूछ रहे है?
- (2) 'कह दे अतीत अब मौन त्याग' ऐसा कवयित्रीने क्यों कहा है?
- (3) किन ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर कवयित्रीने 'वीरों का वसन्त' बताया है?

#### 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

- (1) "वीरों का कैसा है वसन्त-" इस पंक्ति को अपने शब्दों में कविता के आधार पर समझाइए।
- (2) हल्दी-घाटी और सिंह-गढ़ से कवि का क्या तात्पर्य है?
- (3) "है कलम बँधी स्वच्छन्द नहीं"- ससंदर्भ समझाइए।

### योग्यता-विस्तार

#### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- शहीदों की सूची एवं उनके कार्यों का संकलन कीजिए।

#### शिक्षक-प्रवृत्ति

- शहीदों पर लिखी हुई कविताओं का संकलन करवाइए।
- शहीदों के स्मारकों की मुलाकात करवाइए।
- देशभक्ति के गीतों का संकलन करें।



धर्मवीर भारती

(जन्म : सन् 1926 ई. : निधन : सन् 1997 ई.)

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर, 1926 ई. को इलाहाबाद में हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने एम.ए., पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वहाँ हिन्दी विभाग के प्राध्यापक नियुक्त हुए। सन् 1960 से 1988 तक 'धर्मयुग' जैसे प्रतिष्ठित साप्ताहिक का सम्पादन कार्य किया। उन्होंने देश-विदेश की यात्राएँ भी की थी। भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया था और साहित्य सेवा के लिए 'व्यास सम्मान' से अलंकृत किया गया था।

धर्मवीर भारती नयी कविता के श्रेष्ठ कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और निबंधकार थे। 'अंधायुग', 'कनुप्रिया', 'सातगीत वर्ष', 'ठंडा लोहा' उनके काव्य-संग्रह हैं। काव्य-नाटक अंधायुग उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना हैं। 'गुनाहों के देवता', 'सूरज का साँतवाँ घोड़ा' तथा 'ग्यारह स्वप्नों का देश' उनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'गुल की बन्नो', 'बन्द गली का आखिरी मकान' आदि कहानियों का हिन्दी की नयी कहानी में विशिष्ट स्थान हैं। 'ठेले पर हिमालय' और 'पश्यंती' उनके निबंध-संग्रह हैं।

प्रस्तुत संस्मरण द्वारा धर्मवीर भारतीजी ने अपने बचपन के दिनों की बातों को हमारे सामने रखा है। उनका बचपन गरीबी में बीता था। लेकिन उनको पढ़ने का बड़ा शौक था। स्कूल में से इनाम में दो किताबें मिली तो पिताजी ने अपनी अलमारी में जगह देकर लेखक की अपनी लाइब्रेरी बना दी। वहाँ से लेखक को किताबें इकट्ठी करने की धुन सवार हो गई। माँ ने पिक्चर देखने के लिए दो रुपये दिये थे लेकिन, लेखक का मन पलट जाता है और वे पुस्तक की दुकान में से दस आने की 'देवदास' नाम की पुस्तक खरीदते हैं। लेखक ने अपने पैसों से खरीदी हुई वह पहली किताब थी। इस पाठ में लेखक ने जीवन में पुस्तकों के महत्त्व पर प्रकाश डाला है।

बचपन की बात है। उस समय आर्यसमाज का सुधारवादी आन्दोलन पूरे जोर पर था। मेरे पिता आर्यसमाज रानीमंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

पिता की अच्छी-खासी सरकारी नौकरी थी, बर्मा रोड जब बन रही थी तब बहुत कमाया था उन्होंने। लेकिन मेरे जन्म के पहले ही गाँधीजी के आह्वान पर उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। हम लोग बड़े आर्थिक कष्टों से गुजर रहे थे फिर भी घर में नियमित पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं- 'आर्यमित्र', 'साप्ताहिक', 'वेदोदय', 'सरस्वती', 'गृहणी' और दो बाल पत्रिकाएँ खास मेरे लिए 'बालसखा' और 'चमचम'। उनमें होती थी परियों, राजकुमारों, दानवों और सुन्दर राजकन्याओं की कहानियाँ और रेखाचित्र। मुझे पढ़ने की चाह लग गयी। हर समय पढ़ता रहता। खाना खाते समय थाली के पास पत्रिकाएँ रखकर पढ़ता। अपनी दोनों पत्रिकाओं के अलावा भी 'सरस्वती' और 'आर्यमित्र' पढ़ने की कोशिश करता। घर में पुस्तकें भी थीं। उपनिषदें और उनके हिन्दी अनुवाद - सत्यार्थ प्रकाश। 'सत्यार्थ प्रकाश' के खंडन-मंडन वाले अध्याय पूरी तरह समझ में नहीं आता था पर पढ़ने में मजा आता था।

मेरी प्रिय पुस्तक थी स्वामी दयानन्द की एक जीवनी, रोचक शैली में लिखी हुई, अनेक चित्रों से सुसज्जित। वे तत्कालीन पाखंडों के विरुद्ध अदम्य साहस दिखाने वाले अद्भुत व्यक्तित्व थे। कितनी ही रोमांचक घटनाएँ थीं उनके जीवन की जो मुझे बहुत प्रभावित करती थी। चूहे को भगवान का मीठा खाते देख कर मान लेना कि प्रतिमाएँ भगवान नहीं होती, घर छोड़कर भाग जाना। तमाम तीर्थों, जंगलों, गुफाओं, हिमशिखरों पर साधुओं के बीच घूमना और हर जगह इसकी तलाश करना कि भगवान क्या है? सत्य क्या है? जो भी समाज विरोधी, मनुष्य विरोधी मूल्य हैं, रूढ़ियाँ हैं उनका खंडन करना और अन्त में अपने हत्यारे को क्षमा कर उसे सहारा देना। यह सब मेरे बालमन को बहुत रोमांचित करता।

माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देती। चिन्तित रहती कि लड़का कक्षा की किताबें नहीं पढ़ता। पास कैसे होगा? कहीं खुद साधु बनकर फिर से भाग गया तो? पिता कहते जीवन में यही पढ़ाई काम आयेगी पढ़ने दो। मैं स्कूल नहीं भेजा गया था, शुरू की पढ़ाई के लिए घर पर मास्टर रक्खे गये थे। पिता नहीं चाहते थे कि नासमझ उम्र में मैं गलत संगति में पड़ कर गाली-गलौज सीखूँ, बुरे संस्कार ग्रहण करूँ। अतः स्कूल में मेरा नाम लिखाया गया, जब मैं कक्षा दो तक की पढ़ाई घर पर कर चुका था। तीसरे दर्जे में भर्ती हुआ। उस दिन शाम को पिता उँगली पकड़ कर मुझे घुमाने ले गये। लोकनाथ की एक दुकान से ताजा अनार का शर्बत मिट्टी के कुल्हड़ में पिलाया और सर पर हाथ रख कर बोले - 'वायदा करो कि पाठ्यक्रम की किताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ोगे, माँ की

चिन्ता मिटाओगे। 'उनका आशीर्वाद था या मेरा जी तोड़ परिश्रम कि तीसरे चौथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवें दर्जे में तो मैं फर्स्ट आया।' माँ ने आँसू भर कर गले लगा लिया, पिता मुस्कराते रहे, कुछ बोले नहीं।

अंग्रेजी में मेरे नम्बर सबसे ज्यादा थे, अतः स्कूल से इनाम में दो अंग्रेजी किताबें मिली थीं। एक में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और कुंजों में भटकते हैं और इस बहाने पक्षियों की जातियाँ, उनकी बोलियाँ, उनकी आदतों की जानकारी उन्हें मिलती हो। दूसरी किताब थी 'ट्रस्टी द रग' जिसमें पानी की कथाएँ थीं, कितने प्रकार के होते हैं। कौन-कौन सा माल लाद कर लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, नाविकों की जिन्दगी, कैसी होती है, कैसे-कैसे जीव मिलते हैं, कहाँ व्हेल होती है, कहाँ शार्क होती है।

इन दो किताबों ने एक नई दुनिया का द्वार मेरे लिए खोल दिया। पक्षियों से मेरा आकाश और रहस्यों से भरा समुद्र। पिता ने अलमारी के एक खाने में अपनी चीजें हटाकर जगह बनायी और मेरी दोनों किताबें उस खाने में रख कर कहा, 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी लाइब्रेरी है।' यहाँ से आरम्भ हुई उस बच्चे की लाइब्रेरी। आप पूछ सकते हैं कि किताबें पढ़ने का शौक तो ठीक, किताबें इकट्ठी करने की सनक क्यों सवार हुई, उसका कारण भी बचपन का एक अनुभव है।

इलाहाबाद भारत के प्रख्यात शिक्षा केन्द्रों में एक रहा है। ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा स्थापित पब्लिक लाइब्रेरी से लेकर महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित भारती भवन तक। अपने मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी हरि भवन। स्कूल से छुट्टी मिली कि मैं उसमें जाकर अध्ययन करता ।

### शब्दार्थ और टिप्पणी

**आह्वान** बुलावा **अदम्य** जो दबाया न जा सके, प्रबल **रोमांचित** पुलकित, जिसके रोयें खडे हों **टोल्सटाय** रूसी कथाकार **विक्टर ह्यूगो** फ्रांसिसी कथाकार **मैक्सिम गोर्की** एक रूसी कथाकार **ईश्यू कराना** निर्गत कराना **कोशिश** प्रयत्न **रोचक** रुचि अनुसार **जीवनी** जीवनचरित्र **खंडन** विभाजन **संगति** संगत, मेल **कुल्हड़** मिट्टी का बरतन **अक्सर** खास करके **सहमति** अनुमोदन

### स्वाध्याय

#### 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

- (1) माँ की स्कूली पढ़ाई पर जोर देने से लेखक की पढ़ाई पर क्या असर हुआ?
- (2) लेखक की प्रिय पुस्तक कौन-सी थी? वे किन बातों से सम्बन्धित थी?
- (3) माँ के दिये हुए रुपयों का लेखक ने क्या किया? क्यों?

#### 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

- (1) बचपन में लेखक के घर में कौन-कौन सी पत्रिकाएँ आती थी?
- (2) बचपन में लेखक को स्वामी दयानन्दजी की जीवनी क्यों पसंद थी?
- (3) लेखक को अंग्रेजी में सबसे अधिक अंक पाने के बाद उपहार में कौन सी दो पुस्तकें मिली थी और उनसे लेखक को क्या जानकारी प्राप्त हुई?
- (4) लेखक की माँ ने लेखक को कितने रुपये दिये? क्यों?

#### 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

- (1) लेखक को बचपन से क्या शौक था?
- (2) लेखक के पिता कहाँ के प्रधान थे?

- (3) लेखक की प्रिय पुस्तक कौन सी थी?
- (4) लेखक कौन-सी फिल्म देखने गये?
- (5) लेखक की माँ की आँखों में आँसू क्यों आ गए?

4. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी शब्द लिखिए :

- (1) लाइब्रेरी (2) थियेटर
- (3) पिक्चर (4) इंडिया
- (5) लाइब्रेरियन

5. निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

- (1) आरम्भ ×
- (2) आनंद ×
- (3) जीवन ×
- (4) छोटा ×
- (5) दुःख ×

6. निम्नलिखित वाक्यों में से साधारण, संयुक्त तथा मिश्रित वाक्यों को पहचान कर नाम लिखिए :

- (1) मेरे पिता आर्य-समाज रानी मंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।
- (2) माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देती थी।
- (3) जल्दी-जल्दी घर लौट आया और दो रुपये में से एक रुपये छह आना माँ के हाथ में रख दिया।
- (4) उनका आशीर्वाद था या मेरा जी-तोड़ परिश्रम के तीसरे चोथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवें दर्जे में तो मैं फर्स्ट आया।
- (5) उस साल इण्टरमीडिएट पास किया था।

7. संधि विग्रह कीजिए :

- (1) वीरोचित (2) रमेश
- (3) देवोचित (4) सुरेश

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- अपने स्कूल की लाइब्रेरी में जाकर अपनी पसंदीदा पुस्तकों की सूचि बनाइए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'मेरी प्रिय पुस्तक' विषय पर निबंध लेखन करवाइए।
- विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय 'नेशनल लाइब्रेरी' की कक्षा में विद्यार्थियों की जानकारी दे।



## समास

‘समास’ (Compounds) का शाब्दिक अर्थ है- संक्षेप या संक्षिप्त करने की रचना विधि। निम्नलिखित वाक्यों को देखिए-

- राजा का कुमार सख्त बीमार था।
- राजकुमार सख्त बीमार था।

उपर्युक्त वाक्यों में हम देख रहे हैं कि ‘राजा का कुमार’ का संक्षिप्त रूप ‘राजकुमार’ हो गया है। अर्थात् दो या अधिक शब्दों का अपने विभक्ति-चिह्नों अथवा अन्य प्रत्ययों को छोड़कर आपस में मिल जाना ही ‘समास’ कहलाता है।

तात्पर्य यह कि समास में कम-से-कम दो पदों का योग होता है। जब वे दो या अनेक पद एक हो जाते हैं तब समास होता है।

समास होने के पूर्व पदों के रूप को (बिखरे रूप) ‘समास-विग्रह’ और समास होने के बाद बने संक्षिप्त रूप को ‘समस्त पद’ या ‘सामासिक पद’ कहते हैं। ऊपर दिए गए उदाहरणों में ‘राजा का कुमार’- समास विग्रह और ‘राजकुमार’ को हम ‘समस्त पद’ कहेंगे।

### समास के भेद :

हिंदी में समास के मुख्य: छ माने जाते हैं

- (1) अव्ययीभाव समास
- (2) कर्मधारय समास
- (3) द्विगु समास
- (4) द्वंद्व समास
- (4) तत्पुरुष समास
- (4) बहुब्रीहि

उपर्युक्त भेदोंमें से प्रथम चार समासों का अध्ययन इस कक्षा में करेंगे।

### (1) अव्ययीभाव समास :

- जिस समास में पहला पद प्रधान हो तथा वह शब्द अव्यय हो और सामासिक शब्द का क्रियाविशेषण के समान उपयोग हो, उसे ‘अव्ययीभाव समास’ कहते हैं।
- दूसरे शब्दों में अव्ययीभाव का पूर्वपद अव्यय होता है और उत्तरपद के मिल जाने के बाद भी समस्त पद अव्यय ही रहता है। (क्रियाविशेषण आदि अविकारी शब्द जिनका स्वरूप किसी भी लिंग, वचन या काल में प्रयोग करने पर बदलता नहीं है, वे अव्यय कहलाते हैं।)
- इन व्याख्याओं के संदर्भ में निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर समझिए।
  - वह यथाशक्ति प्रयत्न करेगा।
  - लड़का प्रतिदिन विद्यालय जाता है।
  - वह आजीवन लोगों की सेवा करता रहा।

समस्त पद	विग्रह
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन / दिन-दिन
आजीवन	जीवनभर / जीवन-पर्यंत



**उदाहरण :**

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
यथाविधि	विधि के अनुसार	यथानियम	नियम के अनुसार
यथामति	मति के अनुसार	यथासमय	समय के अनुसार
यथाशीघ्र	जितना शीघ्र हो	यथासंभव	जितना संभव हो सके
यथोचित	जो उचित हो	आजन्म	जन्म से लेकर
आमरण	मरण तक	आकंठ	कंठ तक
प्रतिवर्ष	प्रत्येक वर्ष	प्रतिपल	प्रत्येक पल
दिनोंदिन	दिन ही दिन में	बीचोबीच	बीच ही बीच में
रातोंरात	रात ही रात में	हाथोंहाथ	हाथ ही हाथ में
बेकाम	बिना काम के	प्रत्यक्ष	आँखों के सामने
भरपेट	पेट भर के	बेखटके	बिना खटके के

**निम्नलिखित अव्ययीभाव समास का विग्रह कीजिए।**

निर्भय	निर्विवाद	अनुरूप	बेरहम
बेफायदा	अनजाने	यथारूचि	प्रत्येक
घड़ी-घड़ी	प्रतिमास	यथार्थ	बेफायदा
अकारण	निर्विकार	अध्यात्म	यावज्जीवन

**( 2 ) कर्मधारय समास :**

- जिस समास में पूर्वपद 'विशेषण' और उत्तरपद 'विशेष्य' हो या पूर्वपद 'विशेष्य' और उत्तरपद 'विशेषण' हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। इस समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद में उपमेय-उपमान का संबंध भी हो सकता है।

उपर्युक्त व्याख्या के संदर्भ में कर्मधारय समास के उदाहरण निर्देशित हैं-

**पूर्वपद 'विशेषण' और उत्तरपद 'विशेष्य' हो ऐसे उदाहरण :**

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
महापुरुष	महान पुरुष	अंधकूप	अंधा है जो कूप
पकवान्न	पक्व अन्न	महाविद्यालय	महान है जो विद्यालय
सुहास	सुंदर है जो हँसी	सूक्ष्माणु	सूक्ष्म है जो अणु
सुविचार	अच्छा है जो विचार	महायुद्ध	महान है जो युद्ध
नवांकुर	नव है जो अंकुर	सुलोचना	सुंदर है जिसके लोचन
महावीर	महान है जो वीर	प्रधानाध्यापक	प्रधान है जो अध्यापक
महात्मा	महान है जो आत्मा	नीलगाय	नीली है जो गाय

**पूर्वपद 'विशेष्य' और उत्तरपद 'विशेषण' हो ऐसे उदाहरण :**

समस्त पद	विग्रह
न्यायोचित	न्याय है जो उचित
अधपका	आधा है जो पका

**उपमेय - उपमान का संबंध हो ऐसे उदाहरण :**

- जिसकी तुलना किसी अन्य से की जाती है उसे उपमेय और जिससे तुलना की जाती है उसे उपमान कहा जाता है। जैसे - चरणकमल समस्त पद का विग्रह होगा चरण रूपी कमल। इसमें चरण उपमेय और कमल उपमान है।

**पहला पद उपमेय हो ऐसे उदाहरण :**

समस्त पद	विग्रह
स्त्रीरत्न	स्त्री रूपी रत्न
देहलता	देह रूपी लता
नरसिंह	नर रूपी सिंह
ग्रंथरत्न	ग्रंथ रूपी रत्न
नयनबाण	नयन रूपी बाण

**पहला पद उपमान हो ऐसे उदाहरण :**

समस्त पद	विग्रह
राजीवलोचन	राजीव के समान लोचन
प्राणप्रिय	प्राणों के समान प्रिय
भुजदंड	दंड के समान भुजा
मृगलोचन	मृग के समान लोचन
पाषाण-हृदय	पाषाण के समान है जो हृदय
कनकाभ	कनक के समान आभा
कनकलता	कनक के समान लता
कमलनयन	कमल के समान नयन
करकमल	कमल के समान कर

**ध्यातव्य :** जब पहला पद उपमान हो तो दोनों पदों के बीच में 'के समान' का प्रयोग किया जाता है।

**निम्नलिखित समासों का विग्रह कीजिए।**

दुरात्मा	क्रोधाग्नि
नीलकमल	चंद्रमुख
नीलांबर	चरणकमल
कापुरुष	मीनाक्षी
नीलकंठ	वज्रांग
नीलगगन	मधुमादन

**( 3 ) द्विगु समास :**

- जहाँ समस्त पद का पहला शब्द संख्यावाचक अथवा परिमाणवाचक विशेषण होता है, वहाँ द्विगु समास होता है।

**उदाहरण :**

समस्त पद	विग्रह
----------	--------

1. त्रिकाल त्रि (तीनों) कालों का समूह
  2. त्रिफला त्रि (तीन) फलों का समूह
  3. पंचामृत पंच (पाँच) अमृतों का समूह
- इन उदाहरणों में क्रमांक 1 और 2 में पहला शब्द संख्यावाचक विशेषण है और क्रमांक 3 में पहला शब्द परिमाणवाचक विशेषण है। अतः ये द्विगु समास हैं।

**अन्य उदाहरण :**

समस्त पद	विग्रह
- त्रिलोक	त्रि (तीन) लोकों का समूह
- चौगुनी	चौ (चार) गुनी
- नवरात्र	नव (नौ) रात्रियों का समूह
- पंचनद	पाँच नदियों का समूह
- चतुष्कोण	चार कोण वाला
- नवग्रह	नव ग्रहों का समूह
- अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समाहार
- चौमासा	चार मासों का समाहार
- चवन्नी	चार आनों का समाहार
- चौराहा	चार राहों का समाहार
- सप्ताह	सात दिनों का समाहार
- त्रिवेणी	तीन वेणियों का समाहार
- तिरंगा	तीन रंगों का समाहार

**निम्नलिखित द्विगु समास का विग्रह कीजिए।**

- नवरत्न	- दोपहर
- पंचवटी	- अठवाड़ा
- पंचप्रमाण	- त्रिलोकी
- त्रिभुवन	- अठन्नी
- नवरस	- द्विगु
- दोपहर	- अठलोना
- छमाही	- अष्टधातु
- तिकोना	- षड्रस
	- पंचवदन

**(4) द्वंद्व समास**

- इस समास में समस्त पद के दोनों पद प्रधान होते हैं। समस्त पद का विग्रह करने पर बीच में

समुच्चयबोधक अव्यय 'और' अथवा 'या' शब्द लगाना पड़ता है। इसमें दोनों पदों को मिलाते समय मध्य-स्थित योजक लुप्त हो जाता है। जैसे - 'सत्य' और 'असत्य' का समस्त पद होगा 'सत्यासत्य'। यहाँ दोनों पद प्रधान हैं।

द्वंद्व समास के तीन प्रकार हैं-

**( 1 ) इतरेतर द्वंद्व समास :**

इस कोटि के समास में समुच्चयबोधक अव्यय 'और' का लोप होता है। जैसे-

समस्त पद	विग्रह
- ऋषि-मुनि	ऋषि और मुनि
- माता-पिता	माता और पिता
- गाय-बैल	गाय और बैल
- सीता-राम	सीता और राम
- राधा-कृष्ण	राधा और कृष्ण
- भाई-बहन	भाई और बहन

**( 2 ) वैकल्पिक द्वंद्व समास :**

इस समास में विकल्प सूचक समुच्चयबोधक अव्यय 'या', 'वा', 'अथवा' का प्रयोग होता है, जिसका समास करने पर लोप हो जाता है। जैसे-

समस्त पद	विग्रह
- धर्माधर्म	धर्म या अधर्म
- छोटा-बड़ा	छोटा या बड़ा
- थोड़ा-बहुत	थोड़ा या बहुत
- ठंडा-गरम	ठंडा या गरम
- हाँ-ना	हाँ या ना
- लाभालाभ	लाभ या अलाभ
- जोड़-तोड़	जोड़ना या तोड़ना
- गुण-दोष	गुण या दोष

**( 3 ) समाहार द्वंद्व समास :**

जिस समास से उसके पदों के अतिरिक्त उसी तरह का और भी अर्थ सूचित हो, उसे समाहार द्वंद्व समास कहते हैं। जैसे-

- दाल-रोटी	दाल, रोटी वगैरह
- कपड़ा-लता	कपड़ा, लता वगैरह
- सेठ-साहूकार	सेठ तथा साहूकार आदि धनी लोग
- रुपया-पैसा	रुपये, पैसे, गहने वगैरह

**ध्यातव्य बिन्दु :** जब दोनों पद विशेषण हो और उसी अर्थ में आए तब वह द्वंद्व न होकर कर्मधारय हो जाता है। जैसे - भूखा-प्यासा लड़का रो रहा है। यहाँ 'भूखा-प्यासा' लड़के का विशेषण है। अतः कर्मधारय समास के अन्तर्गत आएगा।

**निम्नलिखित द्वंद्व समास का विग्रह कीजिए।**

- अपना-पराया      अमीर-गरीब
- गंगा-यमुना      लव-कुश
- स्त्री-पुरुष      यश-अपयश
- स्वर्ग-नरक      मान-सम्मान
- हानि-लाभ      रुपया-पैसा
- कर्तव्याकर्तव्य      देश-विदेश
- जीव-जन्तु      देवासुर



कबीर

( जन्म : सन् 1398 ई. : निधन : सन् 1518 ई. )

भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा में कबीर का स्थान सर्वोपरि हैं। जनश्रुति है कि कबीर की पत्नी का नाम लोई, पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था। तत्कालीन सामाजिक अव्यवस्था के कारण कबीर विधिवत् शिक्षा नहीं पा सके किंतु प्रेम का ढाई अक्षर पढ़कर पंडित हो गए थे। उन्होंने कहा है कि, “मसिकागद छूयौ नहीं, कलम गह्यौ नहीं हाथ।” कबीर को स्वामी रामानंद से वेदांत का, सूफी कवि शेख तकी से सूफीमत का और वैष्णव साधुओं के संपर्क में आने से अहिंसा का तत्त्व मिला। उनकी कविता अनुभव का अथाह ज्ञान भण्डार है। जीवन की सच्चाई और वाणी में विश्वास के कारण उनकी कविता हृदय के तार झनझना देती है। कबीर ने अपने युग की विसंगतियों तथा अन्तर्विरोधों को देखकर अपनी कविताओं के माध्यम से उन पर खुलकर तीखा प्रहार किया है। “मैं कहता आखिन की देखी, तू कहता कागद की लेखी” से स्पष्ट होता है कि वे जन्म से विद्रोही, समाज सुधारक, धर्म सुधारक और अपने समय के अनुरूप कवि थे। इन्होंने अपनी रचनाओं में ‘सधुक्कड़ी’ भाषा का उपयोग किया है। जिसमें खड़ी बोली, ब्रजभाषा, पंजाबी, पूर्वी हिन्दी, अवधी आदि कई बोलियों का मिश्रण है। कबीर की वाणी का संग्रह ‘बीजक’ नाम से प्रसिद्ध है। इसके तीन भाग हैं— रमैनी, सबद, साखी। रमैनी और सबद ये गेय पद हैं तथा साखी में दोहे संकलित हैं।

प्रस्तुत दोहों में कबीर ने विभिन्न पहलुओं पर दृष्टिपात किया है। प्रथम दोहे में परमात्मा घट-घट में व्याप्त है, फिर भी हम देख नहीं पाते हैं, दूसरे दोहे में मुझमें जो कुछ है, वह ईश्वर का ही है और वह ईश्वर को सौंपने से अपना कुछ नहीं रहता है, तीसरे दोहे में जन्म सार्थक करने हेतु साधु पुरुषों की संगति करने का, चौथे दोहे में अप्रामाणिक रूप से संपत्ति इकट्ठी करके उसमें से दान करने पर स्वर्गप्राप्ति नहीं हो सकती हैं, पाँचवे दोहे में दुर्जनों की सज्जनों की विशेषता है, छठे में दूसरों की संपत्ति देखकर दुःखी होने के बजाय ईश्वर ने हमें जो दिया है उसमें संतोष रखना चाहिए, सातवें में संसार के पंच रत्न के बारे में, आठवें में बाह्याडंबर का विरोध, नौवें में सुख में भी भगवान को याद किया जाय तो दुःख हो ही क्या?

कस्तूरी कुंडली बसै, मृग ढूँढे बन माहिं ।  
ऐसे घट-घट राम है, दुनिया देखे नाहिं ॥1 ॥

मेरा मुझमें कछु नहीं, जो कछु हय सो तेरा ।  
तेरा तुझको सौंपते, क्या कागेगा मेरा ॥2 ॥

संत मिले सुख उपजे, दुष्ट मिले दुःख होय ।  
सेवा कीजे संत की, तो जनम कृतार्थ सोय ॥3 ॥

एहरन की चोरी करे, करे सूई का दान ।  
ऊँचे चढ़कर देखते, कैतिक दूर विमान? ॥4 ॥

सोना सज्जन साधु जन, टूटि जरै सौ बार ।  
दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार ॥5 ॥

रुखा सूखा खाई कै, ठण्डा पानी पीव ।  
देख पराई चूपड़ी, मत ललचावै जीव ॥6 ॥

कबीर! इस संसार में, पंच रत्न हैय सार।  
साधु मिलन, हरिभजन, दया-दीन-उपकार ॥7 ॥

काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चिनाय।  
ता चढि मुल्ला बाँग दै, क्या बहिरा हुआ खुदाय ॥8 ॥

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करै न कोय।  
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय ॥9 ॥

### शब्दार्थ और टिप्पणी

कस्तूरी मृगनाभि से निकलनेवाला एक सुगंधित द्रव्य कुंडली नाभि मृग हरिन, हिरन कृतार्थ जिसका कार्य सिद्ध हो चुका हो, सन्तुष्ट, मुक्त एहरन निहई (एरण), लोहार का एक औजार दरार दरज चूपडी चूपडी हुई सार मुख्य, सत दीन नम्र, विनीत काँकर कंकड़ पाथर पत्थर सुमिरन स्मरण

### स्वाध्याय

#### 1. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

- (1) मृग कस्तूरी को कहाँ ढूँढ़ता है?
- (2) हमारा जन्म कृतार्थ करने के लिए किसकी सेवा करनी चाहिए?
- (3) भवसागर तरने के लिए कौन-कौन से पाँच तत्त्व हैं?

#### 2. निम्नलिखित भावार्थवाले दोहे ढूँढ़कर उनका गान कीजिए :

- (1) परमात्मा घट-घट में व्याप्त है, फिर भी हम देख नहीं पाते हैं।
- (2) हमें जो कुछ मिला है, वह ईश्वर का ही है और वह ईश्वर को सौंपने से अपना कुछ नहीं रहता है।
- (3) अप्रामाणिक रूप से संपत्ति इकट्ठी करके उसमें से दान करने पर स्वर्गप्राप्ति नहीं हो सकती है।
- (4) दूसरों की संपत्ति देखकर दुःखी होने के बजाय ईश्वर ने हमें जो कुछ दिया है उसमें संतोष रखना चाहिए।

#### 3. निम्नलिखित दोहों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

- (1) संत मिले सुख उपजे, दुष्ट मिले दुःख होय।  
सेवा किजे संत की, तो जनम् कृतार्थ सोय ॥
- (2) सोना सज्जन साधु जन, टूटि जरै सौ बार।  
दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार ॥
- (3) काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चुनाय।  
ता चढि मुल्ला बाँग दै, क्या बहिरा हुआ खुदाय ॥
- (4) दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।  
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय ॥

योग्यता-विस्तार

- कबीर के अन्य दोहे पढ़िए और संग्रह कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- इकाई में समाविष्ट दोहों का समूहगान करवाइए।
- कबीर के उन दोहों को ढूँढ़कर पढ़िए जिनमें बाह्याडंबरों का विरोध किया गया है।
- 'कबीर आज भी प्रासंगिक है' इस विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन कीजिए ।





## पूरक-वाचन

1

### विमान से छलाँग

श्यामचन्द्र

इस पत्र में लेखक ने पैराट्रूपिंग (विमान से छलाँग) प्रशिक्षण के साहसिक अनुभवों का सजीव वर्णन किया है। विमान से छलाँग से पूर्व एक महीने का जमीनी प्रशिक्षण आवश्यक होता है। आगरा केन्द्र में पैराट्रूपिंग मिलिट्री की एक कोर है, जिसमें इस प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण के बाद में पैराशूट की सहायता से आकाश में उड़ते हुए विमान से जमीन पर छलाँग लगाई जाती है। इसी का मार्मिक वर्णन पत्र में किया गया है।

47, पैराट्रूपिंग कोर,  
आगरा कैण्ट,  
24-9-1981

फ्लाइट लेफ्टिनेंट बत्रा,

सस्नेह नमस्ते।

जैसा कि मैंने कहा था कि मैं पैराट्रूपिंग के अनुभव का पत्र में वर्णन करूँगा, यहाँ विस्तार से वृत्तान्त लिख रहा हूँ।

विमानों से छलाँग लगाकर पैराशूट के सहारे नीचे आनेवाले बहादुरों के बारे में मुझे बड़ी उत्सुकता रहती थी। कैसा महसूस होता होगा हवा में अकेले लटकना? कभी-कभी मैं यह भी सोचता कि यदि छतरी ही न खुले तो क्या हो?

लेकिन जब मैंने पैराट्रूपिंग (पैराशूट के सहारे विमान से नीचे कूदने की विद्या) सीखनी शुरू की, तब मेरी समझ में आया कि पैराट्रूपर बनने के लिए सचमुच बहादुरी की आवश्यकता होती है। उसके लिए तंदुरस्ती तो ठीक होनी ही चाहिए, हवाई जहाज से छलाँग लगाने की हिम्मत भी होनी चाहिए। शुरू में तो बहुत ऊँचाई से नीचे की ओर देखना ही काफ़ी डरावना लगता है। जरा सोचो, कोई तुमसे वहाँ से नीचे कूदने के लिए कहे, तो क्या हो?

खैर, मेरी पैराट्रूपिंग की एक महीने की ट्रेनिंग शुरू हो गई। सबसे पहले थी ग्राउंड ट्रेनिंग। कुछ दिन हमें जमीन पर ही अभ्यास करना था। कुछ समय बाद जब हमने पैराशूट के बारे में कई बातें जान लीं, तो हमारे मन से धीरे-धीरे ऊँचाई का डर दूर होता गया और हम आदेश मिलते ही छलाँग लगाने के लिए मानसिक रूप से तैयार होते गये।

इसके पहले कि हम विमानों से छलाँग लगाते हमने फैन जंप लगाये। इसमें ऊँचे प्लेटफॉर्म पर से कूदना होता है और इस बात का खास ध्यान रखना होता है कि जब हम जमीन पर गिरे तो हमारे लुढ़कने का तरीका ठीक वही हो, जो हमें सिखाया गया है।

फैन जंप में तो मैं काफ़ी सफल रहा, लेकिन अब देखना यह था कि जब विमान में से कूदने का समय आता है, तो वह छलाँग में कितनी बहादुरी और सफलता के साथ लगा सकता हूँ।

आखिर वह दिन भी आया, जब हमें विमान से छलाँग लगानी थी, विमान में बैठे मजे से खिड़की के बाहर झाँकना एक बात होती है और इतनी ऊँचाई पर से कूदना दूसरी! शुरू-शुरू में कुछ समय तो डर लगता ही है, लेकिन छलाँग तो हमें लगानी ही थी। उसके लिए पूरे एक महीने की ट्रेनिंग जो ली थी। आज हमारी परीक्षा ही थी।

हम सभी विमान में बैठे और विमान उड़ा। धीरे-धीरे जमीन पर सारी चीजें छोटी होती जा रही थी। जमीन दूर होती जा रही थी और हम ऊपर उठते जा रहे थे। हम सब काफ़ी उत्तेजित थे। विमान में बैठकर सब ऊपर तो आ गये थे लेकिन अब नीचे जाने में, हमें अपना करतब दिखाना था। हमारी तैयारी भी पूरी थी।

विमान निश्चित ऊँचाई पर आ चुका था। अब हमें कूदना था। मैं पूरी हिम्मत के साथ दरवाजे के पास गया, बाहर की तेज हवा दरवाजे पर भी महसूस हो रही थी। मैं अपने पैराशूट और हेल्मेट वगैरह के साथ एकदम तैयार था। जैसे ही 'गो' की आवाज आये, मुझे नीचे कूदना था। अब मेरे दिमाग में छलाँग लगाने के सिवाय और कुछ नहीं था। पूरा ध्यान उसी पर केन्द्रित था। पल पल बीत रहा था। मैं बेसब्री से इंतजार कर रहा था।

'गो' की आवाज आई और मैं चला। दिल जोर से धड़क रहा था। पृथ्वी रेत के एक बड़े माँडल की तरह दिख रही थी और मैं तेज़ी से नीचे जा रहा था। वह बड़ा ही अनोखा अनुभव था। कुछ ही क्षण बीते थे कि मैंने पैराशूट खोल दिया। पैराशूट ऊपर उठा और छतरी की तरह फैल गया। इसके बाद मैं मजे से हवा में तैर सा रहा था। अपने आप पर गर्व सा महसूस हो रहा था।

मैं पृथ्वी के करीब आता जा रहा था। ऊपर से छोटी दिखनेवाली पृथ्वी पर की सभी चीजें धीरे-धीरे बड़ी हो गयी थीं। जमीन केवल 8-9 मीटर ही नीचे थी। मैंने अपने पैर सीधे कर लिये। अब मैं जल्दी ही उन्हें जमीन पर रखनेवाला था, कितना अच्छा होगा वह क्षण।

और लो! मैं जमीन पर पहुँच गया। हमारे प्रशिक्षक और कई लोग आसपास खड़े थे, मुझे और मेरे साथियों को बधाई देने के लिए।

साथियों को मेरी जयहिन्द।

आपका  
राकेश प्रधान

### शब्दार्थ और टिप्पणी

**पैराट्रॉपिंग** आकाश में हवाई जहाज से पैराशूट (हवाई छत्री) द्वारा धरती पर छलाँग लगाकर उतरने की प्रक्रिया **ट्रेनिंग** प्रशिक्षण **ग्राउंड** मैदान, धरती **फैन जम्प** ऊँचे प्लेटफार्म से कूदना



वासुदेवशरण अग्रवाल

(जन्म : सन् 1904 ई.; निधन : सन् 1966 ई. )

वासुदेवशरण अग्रवाल ने सन्म लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए. किया। तदन्तर वे सन् 1940 ई. तक मथुरा के पुरातत्व संग्रहालय के अध्यक्ष पद पर रहे। बाद में उन्होंने पी.एच.डी. तथा डी.लिट्. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। उन्होंने भारतीय पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष पद का भी सफलतापूर्वक निर्वाह किया। सन् 1951 ई. में वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कोलेज ऑफ इंडोलोजी में प्रोफेसर नियुक्त हुए। वे भारतीय मुद्रा परिषद, भारतीय संग्रहालय परिषद् तथा ओल इंडिया रयंटल कांग्रेस के सभापति रह चुके हैं। भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अन्वेषक तथा इतिहास और पुरातत्व के गहन विद्वान के रूप में वे देश भर में सम्मान पाते रहे।

उनकी लिखी हुई और प्रमुख सम्पादित पुस्तकें इस प्रकार हैं : 'उरुज्योति', 'कला और संस्कृति', 'कल्पवृक्ष', 'कादम्बरी', 'भारत की मौलिक एकता।'

'राष्ट्र का स्वरूप' एक चिन्तनात्मक निबन्ध है। इसमें लेखक ने देश को राष्ट्र बनानेवाले तत्त्वों की चर्चा की है। भूमि, भूमि पर बसने वाले जन और जन की संस्कृति - ये ही तीन तत्त्व हैं जो एक देश को राष्ट्र बनाते हैं। इन तीनों का राष्ट्रीय जीवन में महत्व प्रतिपादित करके लेखक राष्ट्र की जनता को यह अनुरोध करता है कि वह इनका मूल्य पहचानें तथा इनका गौरव करें।

भूमि, भूमि पर बसने वाला जन और जन की संस्कृति, इन तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है।

भूमि का निर्माण देवों ने किया है, वह अनन्त काल से है। उसके भौतिक रूप, सौन्दर्य और समृद्धि के प्रति सचेत होना हमारा आवश्यक कर्तव्य है। भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति हम जितने अधिक जाग्रत होंगे उतनी ही हमारी राष्ट्रीयता बलवती हो सकेगी। यह पृथ्वी सच्चे अर्थों में समस्त राष्ट्रीय विचारधाराओं की जननी है। जो राष्ट्रीयता पृथ्वी के साथ नहीं जुड़ी वह निर्मूल होती है। राष्ट्रीयता की जड़ें पृथ्वी में जितनी गहरी होंगी उतना ही राष्ट्रीय-भावों का अंकुर पल्लवित होगा। इसलिए पृथ्वी के भौतिक स्वरूप की आद्योपांत जानकारी प्राप्त करना, उसकी सुन्दरता, उपयोगिता और महिमा को पहचानना आवश्यक धर्म है। उदाहरण के लिए, पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने वाले मेघ जो प्रति वर्ष समय पर आकर अपने अमृत जल से इसे सींचते हैं, हमारे अध्ययन की परिधि के अन्तर्गत आने चाहिए। उन मेघजलों से परिवर्धित प्रत्येक तृणलता और वनस्पति का सूक्ष्म परिचय प्राप्त करना भी हमारा कर्तव्य है।

इस प्रकार जब चारों ओर से हमारे ज्ञान के कपाट खुलेंगे, तब सैंकड़ों वर्षों से शून्य और अन्धकार से भरे हुए जीवन के क्षेत्रों में नया उजाला दिखाई देगा।

धरतीमाता की कोख में जो अमूल्य निधियाँ भरी हैं, जिनके कारण वह वसुन्धरा कहलाती है, उनसे कौन परिचित न होना चाहेगा? लाखों-करोड़ों वर्षों से अनेक प्रकार की धातुओं को पृथ्वी के गर्भ में पोषण मिला है। दिन-रात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों को पीस-पीस कर अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथ्वी की देह को सजाया है। हमारे भावी आर्थिक अभ्युदय के लिये इन सब की जाँच-पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है। पृथ्वी की गोद में जन्म लेनेवाले खड़े पत्थर कुशल शिल्पियों से सँवारे जाने पर अत्यन्त सौन्दर्य का प्रतीक बन जाते हैं। नाना भाँति के अनगढ़ नग विन्ध्य की नदियों के प्रवाह में सूर्य की धूप से चिलकते रहते हैं, उन सिलवटों को जब चतुर कारीगर पहलदार कटाव पर लादे हैं तब उनके प्रत्येक घाट से नई शोभा और सुन्दरता फूट पड़ती है, वे अनमोल हो जाते हैं। पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गम्भीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नए भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नई किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं।

विज्ञान और उद्योग दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया टाट खड़ा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अथक परिश्रम के द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए। हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ हैं उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिए बिना न रहे।

मातृभूमि पर निवास करनेवाले मनुष्य राष्ट्र के दूसरे अंग हैं। पृथ्वी हो और मनुष्य न हों, तो राष्ट्र को कल्पना असम्भव है। पृथ्वी और जन दोनों के सम्मिलन से ही राष्ट्र का स्वरूप सम्पादित होता है। जन के कारण ही पृथ्वी मातृभूमि की संज्ञा प्राप्त करती है। पृथ्वी माता है और जन सच्चे अर्थों में पृथ्वी का पुत्र है - माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्याः। 'भूमि माता है, मैं उसका पुत्र हूँ' जन के हृदय में इस सूत्र का अनुभव ही राष्ट्रियता की कुंजी है। इसी भावना से राष्ट्र निर्माण के अंकुर उत्पन्न होते हैं।

यह भाव सशक्त रूप में जागता है तब राष्ट्र-निर्माण के स्वर वायुमण्डल में भरने लगते हैं। इस भाव के द्वारा ही मनुष्य पृथ्वी के साथ अपने सच्चे सम्बन्ध को प्राप्त करते हैं। जहाँ यह भाव नहीं है वहाँ जन और भूमि का सम्बन्ध अचेतन और जड़ बना रहता है। जिस समय भी जन का हृदय भूमि के साथ माता और पुत्र के सम्बन्ध को पहचानता है उसी क्षण आनन्द और श्रद्धा से भरा हुआ उसका प्रणाम-भाव मातृभूमि के लिए प्रकट होता है। यह प्रणाम-भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बन्धन है। इसी दृढ़ भित्ति पर राष्ट्र का भवन तैयार किया जाता है। इसी दृढ़ चट्टान पर राष्ट्र का चिरजीवन आश्रित रहता है। इसी मर्यादा को मानकर राष्ट्र के प्रति मनुष्यों के कर्तव्य और अधिकारों का उदय होता है। जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के सम्बन्ध को स्वीकार करता है, उसे ही पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार है। माता के प्रति अनुराग और सेवा-भाव पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य है। वह एक निष्कारण धर्म है। स्वार्थ के लिए पुत्र का माता के प्रति प्रेम, पुत्र के अधःपतन को सूचित करता है। जो जन मातृभूमि के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ना चाहता है उसे अपने कर्तव्यों के प्रति पहले ध्यान देना चाहिए।

माता अपने सभी पुत्रों को समान भाव से चाहती है, इसी प्रकार पृथ्वी पर बसने वाले जन बराबर हैं। उनमें ऊँच और नीच का भाव नहीं है। जो मातृभूमि के हृदय के साथ जुड़ा हुआ है, वह समान अधिकार का भागी है। पृथ्वी पर निवासी करने वाले जनों का विस्तार अनंत है - नगर और जनपद, पुर और गाँव, जंगल और पर्वत नाना प्रकार के जनों से भरे हुए हैं। ये जन अनेक प्रकार की भाषाएँ बोलने वाले और अनेक धर्मों के मानने वाले हैं, फिर भी वे मातृभूमि के पुत्र हैं और इस कारण उनका सौहार्द भाव अखंड है। सभ्यता और रहन-सहन की दृष्टि से जन एक दूसरे से आगे पीछे हो सकते हैं, किन्तु इस कारण से मातृभूमि के साथ उनका जो सम्बन्ध है, उसमें कोई भेद-भाव उत्पन्न नहीं हो सकता। पृथ्वी के विशाल प्रांगण में सब जातियों के लिए समान क्षेत्र है। इतिहास के अनेक उतार-चढ़ाव पार करने के बाद भी राष्ट्र निवासी जन नई उठती लहरों से आगे बढ़ने के लिये आज भी अजर-अमर हैं। जन का सततवाही जीवन, नदी के प्रवाह की तरह है जिसमें कर्म और श्रम के द्वारा उत्थान के अनेक घाटों का निर्माण करना होता है।

राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युग-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना बन्धमात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिए जाएँ तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए। जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है। भूमि पर बसने वाले जन से ज्ञान के क्षेत्र में जो सोचा है और कर्म के क्षेत्र में जो रचा है - दोनों के रूप में हमें राष्ट्रीय संस्कृति के दर्शन मिलते हैं।

जंगल में जिस प्रकार अनेक लता, वृक्ष और वनस्पति अपने अदम्य भाव से उठते हुए पारस्परिक सम्मिलन से अविरोधी स्थिति प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय जन अपनी संस्कृतियों के द्वारा एक-दूसरे के साथ मिलकर राष्ट्र में रहते हैं। जिस प्रकार जलों के अनेक प्रवाह नदियों के रूप में मिलकर समुद्र में एकरूपता प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय जीवन की अनेक विधियाँ राष्ट्रीय संस्कृति में समन्वय प्राप्त करती हैं। समन्वययुक्त जीवन ही राष्ट्र का सुखदायी रूप है।

साहित्य, कला, नृत्य, गीत, आमोद-प्रमोद अनेक रूपों में राष्ट्रीय जन अपने अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं। गाँवों और जंगलों में स्वच्छन्द जन्म लेने वाले लोकगीतों में तारों के नीचे विकसित लोककथाओं में संस्कृति का अमित भण्डार भरा हुआ है, जहाँ से आनन्द की भरपूर मात्रा प्राप्त हो सकती है। राष्ट्रीय संस्कृति के परिचय-काल में उन सबका स्वागत करने की आवश्यकता है।

पूर्वजों ने चरित्र और धर्म, विज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में जो कुछ भी पराक्रम किया है उस सारे विस्तार को हम गौरव के साथ धारण करते हैं और उसके तेज को अपने भावी जीवन में साक्षात् देखना चाहते हैं। जहाँ अतीत वर्तमान के लिए भाररूप नहीं है, जहाँ भूत वर्तमान का जकड़ रखना नहीं चाहता वरन् अपने वरदान से पुष्ट करके उसे आगे बढ़ाना चाहता है, उस राष्ट्र का हम स्वागत करते हैं।

### शब्दार्थ और टिप्पणी

भौतिक पंच महाभूत से संबन्ध रखनेवाला, पार्थिव निर्मूल जड़ से उखड़ा हुआ, बिना जड़ या मूल का आद्योपांत शुरु से अंत तक **चीलवटों** किसी चीज़ को झपट कर ले लेना **विरहित** अलग **अभ्युदय** उन्नति, विकास, भाग्य खुलना **सौहार्द** सज्जनता, मित्रता, भाईचारा, सहृदय सततवाही निरन्तर, अविरत **कबन्ध** वह शरीर जिसका सिर नहीं हो, सिर रहित काया



गिरिधर

(जन्म : सन् 1714 ई. निधन : सन् 18वीं शताब्दी)

सुविख्यात कवि गिरिधर राय के जीवन के संबंध में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती, किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ये अपने समय के अत्यंत लोकप्रिय कवि थे। इनके द्वारा रचित पाँच-सौ से अधिक कुण्डलियाँ 'गिरिधर' कविराय ग्रंथावली में संकलित हैं। इनकी कुण्डलियाँ नीति विषयक हैं। कवि के व्यापक जीवन-अनुभवों का संचित अमृत इनकी रचनाओं में जीवन-संदेश बनकर प्रकट हुआ है। कवि की भाषा-शैली सरल एवं सहज होते हुए भी नीति जैसे विषयों को समझाने में सक्षम है।

प्रथम कुण्डली में कवि ने छोटे के महत्त्व को कम नहीं आँकने के लिए कहा क्योंकि कुल्हाड़ी छोटी होते हुए भी बड़े से बड़े विशालकाय वृक्ष को गिरा देती है। दूसरी कुण्डली में कवि ने बीती हुई घटना को भूल जाने में ही भलाई माना है। तीसरी कुण्डली में उन्होंने कार्य सम्पन्न होने तक अपने मन को एकाग्र चित्त रखने को कहा है इससे कार्य पूरा भी हो जाता है और लोगों को हँसने का मौका भी नहीं मिलता।

(1)

साँई ये न विरोधिए, छोट बड़े सब भाय ।  
 ऐसे भारी वृक्ष को, कुल्हरी देत गिराय ॥  
 कुल्हरी देत गिराय, मारि के जर्मीं गिराई ।  
 टूक-टूक कै काटि, समुद्र में देत बहाई ॥  
 कह 'गिरिधर कविराय', फूट जेहि के घर आई ।  
 हिरणाकश्यप, कंस, गए बलि, रावण साँई ।

(2)

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेई ।  
 जो बनि आवै सहज में, ताही में चित्त देई ॥  
 ताही में चित्त देई, बात जोई बनि आवै ।  
 दुर्जन हँसे न कोई, चित्त में खता न पावै ॥  
 कह गिरिधर कविराय, यहै करु मन परतीती ।  
 आगे को सुख समुझि, हो, बीती सो बीती ॥

(3)

साँई अपने चित्त की, भूलि न कहिए कोई ।  
 तब लग मन में राखिए, जब लग कारज होई ॥  
 जब लग कारज होई, भूलि कबहूँ नहिं कहिए ।  
 दुर्जन हँसे न कोइ, आप सियरे हवै रहिए ॥  
 कह गिरिधर कवि राय बात चतुरना की ताई ।  
 करतूती कहीं देत आप कहिए नहीं साँई ॥

शब्दार्थ - टिप्पणी

कुण्डलियाँ एक छंद-विशेष, जिसमें पहली दो पंक्तियाँ दोहे की और अंतिम चार पंक्तियाँ रोला की होती हैं। दोहे के अंतिम चरण को रोला छंद के प्रथम चरण के रूप में दोहराया जाता है और पहला शब्द ही छंद का अंतिम शब्द होता है। विरोधिए विपरीत भाव कुल्हरी कुल्हाड़ी खता कसूर करुमन कर्म, करनी परतीती प्रतीति सियरे शांत चतुरन की ताई समझदारों के लिए करतूती कर्म गुण

पी.सी.पटेल

(जन्म : सन् 1938 ई.)

भौतिक विज्ञान के प्राध्यापक पी.सी.पटेल का जन्म लणवा ग्राम (जिला-पाटन) गुजरात में हुआ एस.एससी. तक की पढ़ाई सर्व विद्यालय कड़ी (महेसाणा) में हुई थी। गुजरात कोलेज अहमदाबाद से उन्होंने बी.एससी. तथा एम.ए. साइंस कोलेज अहमदाबाद से एम.एससी. की पढ़ाई पूरी की। तत्पश्चात् वे एम.जी. साइंस कोलेज में अध्यापक बने और सेवानिवृत्ति तक भौतिक विज्ञान का शिक्षणकार्य करते रहे। उन्होंने हिन्दी साहित्य संमेलन प्रयाग से हिन्दी विशारद की परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

विज्ञान, कम्प्यूटर, भौतिक विज्ञान से संबंधित उनके लगभग चौदह ग्रंथ अंग्रेज़ी-गुजराती में प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी पुस्तक 'इजनेरी दर्शन' (इंजीनियर दर्शन) को गुजरात सरकार द्वारा प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। गुजरात विश्वकोश के लिए अधिकरण लेखक-संपादक के रूप में उन्होंने अमूल्य सेवाएँ दी हैं।

यहाँ संकलित लेख हिन्दी में लिखा गया है जिसमें गुजरात के अमर सपूत विक्रम साराभाई की सेवाओं का समृद्धि एवं शांति के लिए उनकी प्रतिबद्धता तथा प्रयासों का परिचय मिलता है।

आज भारत विज्ञान और तकनीकी - क्षेत्र में विश्व के विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में आ रहा है, इसका बहुत कुछ श्रेय आज़ादी के बाद देश में हुए वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यों को दिया जा सकता है। भारत में परमाणु ऊर्जा-उत्पादक की नींव डॉ. होमी जहाँगीर भाभा ने रखी थी। भारत परमाणु-ऊर्जा के शांतिमय उपयोग के लिए प्रतिबद्ध राष्ट्र है। डॉ. भाभा के आकस्मिक निधन के बाद इस क्षेत्र में उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने की जिम्मेदारी जिस वैज्ञानिक पर आई, वह थे-डॉ. विक्रम साराभाई। भारत को अवकाश संशोधन एवं परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में प्रगति के पथ पर ले जाने के श्रेय भाभा, विक्रमभाई साराभाई जैसे वैज्ञानिकों को है।

विक्रमभाई का जन्म अहमदाबाद के एक उद्योगपति परिवार में 12 अगस्त 1919 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री अंबालाल साराभाई तथा माता का नाम सरला देवी था। पारिवारिक वातावरण ने बालक साराभाई में उत्तम गुणों की नींव डाली। इनकी आरंभिक शिक्षा घर पर ही कुशल अध्यापकों-शिक्षकों की देखरेख में हुई। उन्होंने गुजरात कोलेज अहमदाबाद में उच्च शिक्षा पाई तथा आगे की पढ़ाई के लिए उन्हें इंग्लैण्ड भेजा गया, जहाँ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उन्होंने भौतिक विज्ञान की पढ़ाई की।

विक्रम साराभाई के परिवार में उस समय देश के विख्यात व्यक्तियों, विद्वानों का आना-जाना लगा रहता था। 1924 में रवीन्द्रनाथ टागोर और दीनबंधु एन्ड्रूज़ उनके पारिवारिक निवास 'स्ट्रीट' पर आए। विक्रमभाई उस समय बालक थे। उन्हें देखते ही टैगोर बोल उठे - 'अरे ! यह बालक तो अत्यंत असाधारण और मेघावी है।' यह थी उनके लिए भविष्यवाणी। प्रसिद्ध इतिहासविद् यहुनाथ सरकार, भौतिक विज्ञानी जगदीशचंद्र बोस और चन्द्रशेखर रामन, प्रसिद्ध अधिवक्ता चितरंजनदास और भूलाभाई देसाई मदनमोहन मालवीय, महादेव देसाई, समाजसेवी आचार्य कृपलाणी तथा साहित्यकार काका कालेलकर प्रभृति महानुभावों का प्रत्यक्ष परिचय उन्हें बचपन में ही मिला था। उनके कार्यों और जीवनशैली का विक्रमभाई पर अच्छा प्रभाव पड़ा। उनमें देशप्रेम की भावना विकसित हुई। इसीलिए कैम्ब्रिज से अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने भारत को अपनी कर्मभूमि बनाई। वे चाहते तो अपनी प्रतिभा, ख्याति और पारिवारिक संपत्तियों के बल पर विदेश की किसी भी प्रयोगशाला में अपना अनुसंधान कार्य कर सकते थे, पर भारत लौटकर उन्होंने बंगलोर स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान (I.I.Sc.) में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भौतिक वैज्ञानिक चन्द्रशेखर रमन के मार्गदर्शन में ब्रह्माण्ड किरणों पर अनुसंधान कार्य आरंभ किया। यहाँ उन्हें होमी जहाँगीर भाभा का सहयोग प्राप्त हुआ।

अपनी पारिवारिक सम्पन्नता का उपयोग उन्होंने देश के विकास के लिए किया। अहमदाबाद में अनुसंधान कार्य के लिए उन्होंने भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (PRL) की स्थापना तो की ही, साथ ही भारतीय कपड़ा उद्योग को आधुनिक बनाने के लिए अटीरा (ATIRA) - 'अहमदाबाद टेक्स्टाइल रिसर्च एसोसिएशन' की स्थापना की। दवाओं के उत्पादन

के क्षेत्र को भी अद्यतन बनाने का प्रयास किया। उद्योगों के कुशल प्रबंधन हेतु भारतीयों को तैयार करने के लिए अहमदाबाद में भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM) की स्थापना की, जो आज भी देश की अपने तरह की सर्वोत्तम संस्था मानी जाती है।

विक्रम साराभाई एक साथ कुशल प्रबंधक, सफल, उद्योगपति, प्रखर वैज्ञानिक होने के साथ ही एक अच्छे शिक्षक रहे। परमाणु ऊर्जा और अवकाश अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए उनकी लगन ने भारत को इस क्षेत्र में विश्व का एक अग्रणी राष्ट्र बनाया।

परमाणु ऊर्जा का शांतिमय कार्यों के लिए उपयोग तथा अवकाश-अनुसंधान का संदेश-व्यवहार, शैक्षणिक कार्यों के लिए प्रयोग से उनके इरादे स्पष्ट होते हैं। उन्होंने इनके लिए आजीवन कार्य किया। इसमें विक्रमभाई का स्वदेश प्रेम, देश को स्वावलम्बी बनाने के इच्छा, स्वदेशी-भावना साफ झलकती है। विचार और व्यवहार में विक्रमभाई महात्मा गाँधी के बहुत समीप थे। उन्हीं की तरह विक्रमभाई आजीवन समर्पित एकनिष्ठ कर्मयोगी हैं। अनासक्त भाव से स्वधर्म निर्वाह करनेवाले वे विरल विभूति रहे। हम विक्रमभाई को भारत के परमाणु और अवकाश युग के पुरस्कर्ता के रूप में, विज्ञान और विकास, स्वदेश भावना और आधुनिकता के सार्थक समन्वयकर्ता के रूप में पाते हैं। वे ऐसे स्वप्नदृष्टा थे जो रात्रि में देखे गए स्वप्न को दिन में साकार करना चाहते थे। “राष्ट्र के लिए क्या उत्तम है, यह आप निश्चित करें। जो जनता और राष्ट्र के लिए उत्कृष्ट ही वही करें।” — यह था विक्रमभाई का वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणामंत्र। अर्थात् आप वैज्ञानिक, इंजीनियर, तकनीशियन या विज्ञान के चाहक के रूप वह करें, जो जनता और राष्ट्र के विकास के लिए उत्कृष्ट हो, उपर्युक्त हो। यही तो है बुद्ध की बताई हुई विज्ञान की परिभाषा।

विक्रमभाई को आधुनिक शंकराचार्य कहा जा सकता है, क्योंकि शंकराचार्य की तरह उन्होंने कश्मीर से कन्याकुमारी तक अनेक अनुसंधान शालाओं की स्थापना करके देश को विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में विकास के पथ पर अग्रसर करने हेतु वंदनीय कार्य किया। विश्वशांति की स्थापना को वे अपना धर्म मानते थे। अपने विचार, व्यवहार और वाणी के माध्यम से उन्होंने शांति का पैगाम दिया है। चंद्रमा पर ‘शांति का सागर’ नामक एक विस्तार है, जहाँ एक बड़ा-सा उल्कागर्त है। अंतरराष्ट्रीय खगोलीय संघ ने इस गर्त के साथ विक्रम साराभाई का नाम जोड़कर उनके खगोलीय अनुसंधान कार्यों को तो प्रतिष्ठा प्रदान की ही इस महान वैज्ञानिक को मानो अपनी भव्य भावांजलि भी दी है।

विज्ञान को मानवता के साथ समन्वित करनेवाले इस विलक्षण विश्व नागरिक ने 30 दिसम्बर 1971 को कोवलम् (केरल) से विश्व को अलविदा कर दी।

### शब्दार्थ और टिप्पणी

तकनीकी प्रायोगिकी श्रेय मान, सम्मान अनुसंधान आविष्कार, खोज, संशोधन प्रभृति जैसे, आदि अनासक्त बिना आसक्ति के, निस्पृह पैगाम संदेश अवकाश अंतरिक्ष

